

Vol. XV (1&2) 2015

RNI No. MPBill/2001/7690  
ISSN 0973-3833

# A JOURNAL OF ASIA FOR DEMOCRACY AND DEVELOPMENT

(एजर्नल ऑफ एशिया फॉर डेमोक्रेसी एण्ड डवलपमेन्ट)

A Quarterly Journal of Social Sciences

Chief Editor  
Dr. M.P. Modi

Editor  
Dr. P.S. Tomar

Published by  
The Council for Peace, Development and Cultural Unity  
Modi Niwas, Jain Mandir Road, Morena-476001, INDIA

16. भारत में समग्र विकास की गति का अध्ययन	डॉ. एम.के. जमदग्नि वेद प्रकाश	133 - 140
17. केन्द्र शासन की विकास नीतियों का अध्ययन	डॉ. व्ही.एच. भमटकर	141 - 144
18. प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंध, पर्यावरणीय प्रदूषण और नीडिया	डॉ. एन.पी. मोदी	145 - 148
19. वैश्विक परिदृश्य में अम्बेडकर का चिन्तन	डॉ. (एच.) अरुण कुमारी सिंह	149 - 152
20. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के चिन्तन में भारतीय सामाजिक संरचना	डॉ. चन्दावती सिंह	153 - 156
21. बम्बल संभाग में रेत उत्खनन अभिप्रमाण एवं भावी नियोजन : एक भौगोलिक अध्ययन	आरती अग्रवाल डॉ. बी.एस. राठौर	157 - 165
22. वृद्धावस्था में अकेलेपन की असुरक्षा	डॉ. विजय गौरव डॉ. उपेन्द्र प्रसाद सिंह	166 - 170
23. 'कामकाजी महिलाओं का खेल के प्रति दृष्टिकोण' (देवसर ब्लॉक जिला सिंगरौली के विशेष संदर्भ में)	डॉ. दिलीप कुमार सोनी	171 - 178
24. महिला अधिकारिता एवं सुरक्षात्मक परिदृश्य में भारतीय प्राक्कान	परोधरा शर्मा, लक्ष्मी शर्मा	179 - 184
25. बाल भ्रगोडापन : उत्तरदायी कारण और निदान	आरधना सिंह	185 - 189
26. पं. दिनेश भारद्वाज : एक योहात्म रचनाकार	डॉ. सुभाष शर्मा जयप्रकाश शर्मा	190 - 198
27. पारिवारिक विघटन की कथा	पुनीता जैन	199 - 204
28. भारत में महिला सशक्तिकरण एवं लिंगभेद	राहुल शर्मा	205 - 212
29. आत्मानुभूतियों और सामाजिक सरोकारों का गुणदरता 'मन्धू'	डॉ. विष्णु कुमार अग्रवाल	213 - 214
30. सामुदायिक विकास में गैर-सरकारी संगठनों का योगदान	बन्दिता चौहान	215 - 217
31. अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की विकास से सम्बन्धित योजनाएँ	बन्दिता चौहान	218 - 221
32. दहेज प्रजा के सामाजिक सांस्कृतिक आधार	श्रीमती प्रेमवती श्रोत्रिय	222 - 227



## केंद्र शासन की विकास नीतियों का अध्ययन

डॉ. व्ही.एच.भमटकर \*

हर व्यक्ती के जीवन में एक ऐसा मोड़ आता है जहाँ उसने क्या पाया और क्या गवायीं इसका हिसाब होता है। आगे और क्या करना है जिससे सफलता का अनुभव महसूस हो। इसी तरह हम सब जिस अपना जीवन व्यतीत करते है उस देश के विकास का जायजा लेना पडता है। भारतीय स्वतंत्रता के स परचात हमारे शासनकर्ता भारत को विकास की जिस दिशा में ले गये। क्या विकास हुआ? हो रहा? है या कोसों दूर है? अगर कोसों दूर है तो उसे पाने के लिए क्या योजनायें लाए है। अभी तक जो क्या लाए साकार हुई है। यह विकास के लिए कितनी असरदार रही है और नहीं रही तो उसकी क्या है इस विषय पर मंथन होना जरूरी है। आज सारी दुनिया अपनी विकास नीतियों को बदलने के पक्ष में साम्यवादी विचारधाराओं का पुरस्कार करता है, लेकिन देश हित के लिए अपने विचार आवश्यकता परिवर्तित करता है। जब कि रूस ने अपने साम्यवादी विचार परिस्थिती अनुसार न बदलने की वजह सहासकी का विघटन हुआ है। देश में रहने वाले सभी समाज, वर्ग को और सभी राज्यों के हित में जब सब सब संतुलीत विकास संभव है। सिर्फ सत्ता हथीयाने के लिए ही हम नीतियों बनाने लगे तो यह बात संघ रखने या सामाजिक स्थिरता लाने के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। 2014 में हमारे देश परिवर्तन हुआ है, यह परिवर्तन बहुत कुछ सुधित करता है। नई सरकार की नीतियों इस देश को किस ले जाना चाहती हैं। इस विषय का विचार मंथन होना जरूरी है। 2015 का इस नये शासन का बजट है। उसी आधार पर विकास नीतियों का अध्ययन करना संभव है। यह बजट भारत को विकास की राह की ओर ले जाना चाहता है यह बात भी स्पष्ट है।

का उद्देश :-

जब हम किसी मंजिल को पाने के लिए प्रयास करते हैं तो उसमें हम कितने सफल हुये यह देखना पता है। अगर मंजिल का कुछ पता ही न हो तो क्या हमारे प्रयास गलत दिशा में जा रहे हैं यह सोचना पडेगा। स्वतंत्रता के 67 साल बाद भी भारतवासी जाती-पात, उच्च निचता, धर्मधिता को ही अपनाते सा ब्यू हो रहा है इसकी खोज होना आवश्यक है। सरकारें बहुत आयी हैं। हर पाँच साल में जनता

न देते हुये टैक्स जैसे धे रखे, मेक इन इंडीया को प्रोत्साहन दिया। व्यापार और उद्योग क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कच्ची टैक्स रद्द किया इससे उद्योग बढेगें और साथ ही सामान्य और गरीब को रोजगार के अवसर बढेगे। रोजगार का अर्थ बढ़ाया। रक्षा सामग्री जमी तक आयात होती थी अब रक्षा सामग्री निर्यात करने के लिए अमी प्रयास किये। अपना चलन विदेशों में जाता था उसे रोकने के प्रयास किये। साथ ही विदेशी कंपनियों को भारत में प्रवेश प्रदान किये ताकि विदेशी चलन प्राप्त हो। बिजली, पेयजल, शौचालय स्वच्छता को महत्व दिया। वह जगह जह से मिटाने के प्रयासों को बढ़ावा मिला, कृषी सिंचाई योजना चलने की घोषणा हुई सभी को आवास प्रदान करने का प्रयास किया। सबको पेन्शन योजना, सबको विमा योजना, जन्मदान योजना, नियोजन आयोग की जगह नए नए योजना की स्थापना हुई है। अटल निवृत्ती योजना जिसमें आधी रकम शासन देगी। राज्यों को विकास के लिए मदद का भरपूर प्रदान किया है। कालाधन वापस लाने के लिये नया विधेयक लाने की योजना, भ्रष्टाचार को रोकने के लिये कड़े कानून का प्रावधान, पैन कांडे अनिवार्य करना, जीएसटी अॅक्ट ऐसे कई प्रावधान करने का प्रयास किया है।

#### राजनीति में परिवर्तन का मूल्यांकन

१९५२ से २०१४ तक केंद्र ने काँग्रेस की सत्ता कई सालों तक रही है। लम्बे समय तक जिस सत्ता को सत्ता इस देश में रही उसके काल में देश का विकास कितना हुआ यह समझने के सिवा हम दुसरे देशों के प्रयासों के महत्व को नहीं समझ पायेंगे। नेहरु और इंदिरा गांधी ने अपने व्यक्तित्व का प्रभाव राजनीति में जरूर रखा है। विदेशों में सभी उनकी छवी अच्छी रही है। कठौण दौर में उन्होंने इस देश को संभाला है यह बात सच है और भारत की पहचान बढ़ाने में उनका बहोत योगदान रहा है। स्व. सजीव प्रधानमंत्री के राजनीति में आये तब उन्हें प्रशासन का इतना अनुभव नहीं था। उन्होंने गरिबी को जह से मिटाने का प्रयास किया। व्यापार, कृषी, तंत्रज्ञान जैसे क्षेत्रों में विकास करने को महत्व दिया था। लेकिन साथ ही राजनीति में अनेक परिवर्तन के लिए सुभावनी योजनायें चलाने के लिए वह भी मजबूर रहे हैं। यह एक बात ध्यान में रखनी होगी कि परिवार ने जो प्रयास किये हैं उससे काँग्रेस पार्टी को राजनीतिक अधिक मीलें और देश विकास के लिए अक्षरदार रहे हैं। नरत्तराय, मनमोहन सिंह तक काँग्रेस पार्टी ने अपने शासन काल में स्थायी रूप से राजनीति के प्रयास सफल नहीं बनाये। गरीब, निर्वन को रोजगार, कम दरों में अनाज देना ठीक है लेकिन राजनीति में सत्ता तक जारी रहना है और गरिबी खत्म होने के आसार नहीं दिखते तब उस बात पर सोच जरूर करनी होगी। गरिबी को सहायता नहीं देना चाहिए यह उसका अर्थ नहीं है। रोजगार गारंटी, जवाहर रोजगार योजना के तहत खेतों में बांध खुदाई के काम इस यांत्रिक युग में चलाना बड़े दुख की बात है। ऐसे रोजगार के तहत अनेक सुखी राजनीति के लिए ठीक है लेकिन गरिबी, बेरोजगारी खत्म नहीं हुई है। भारी जनसंख्या हमारी समस्या बन पायेगी जब लोक काम में जुटे रहेंगे। रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। यह किसी पार्टी की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि वास्तविकता हमें समझनी होगी। राजनीति के आगे भी सोचना जरूरी है। यरना यही



अपने मताधिकारों का प्रयोग करती है। शासन को चुनती है फिर भी गरीब गरीब है किसान दुखी है, मजदूर और पीने के पानी के लिए भी लोग मौताज हैं। शिक्षा क्षेत्र में गुणात्मक विकास का अभाव है। कर्ज बढ़ता जा रहा है। भ्रष्टाचार घरेलू सीमा पर है। चुनाव प्रचार में पानी की तरह पैसा बहने लगता है। हर साल लायी गई लेकिन विकास नहीं हुआ। इसके जिम्मेवार कौन ? इसका पता लगाना आवश्यक है। जनता का और देश का शोषण कैसे करती यह उजागर करना जरूरी है।

#### शासन एवं विकास योजनाएँ

प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू समाजवादी विचार के पुरस्कर्ता रहे हैं। नेहरू काल के दौरान प्राथमिकता हमारी एकता अखंडता कायम रखना, अमरिका और रशिया की बजाय अपने स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करना, अपने देश में गरिबी, बेरोजगारी दूर करना, आर्थिक विकास को बढ़ावा देना करना आवश्यक था। इंदिरा गांधी ने गरिबी हटाओ का नारा देते हुये संख्या में अधिक रहे गरिब, निर्धन में अपनी छबी स्थापीत की। जवाहर रोजगार योजना, निराधार योजना, रोजगार हमी योजना जैसे कार्यक्रमों को चलाने के लिए प्रयास किये हैं। स्व. राजीव गांधी ने भारत को 19 वीं सदी में विकसित रूप में देखना चाहा था। विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में विकास करना उनकी प्राथमिकता रही और साथ ही गरिबों के लिए रोजगार योजना, इंदिरा आवास योजना, संजय गांधी निराधार योजना चलाने के भी प्रयास किये हैं। व्ही.पी.सिंह, मु. चंद्रशेखर अपनी बहुमत कायम रखने में ही व्यस्त रहे। पी.व्ही. नरसिंहराव अर्थ नीति में बदलाव के पक्ष में अपने देश की अर्थव्यवस्था मजबूत करना यह उनकी प्राथमिकता रही। उसके लिए जागतिक नीतियों से अपने देश को भी प्रयास करते रहे। बाजपेई शासन काल के दौरान जय जयान जय किसान जय विज्ञान की यह नारा अनुसूत्र में भारत ने कदम रखा। सैन्य दल को मजबूत बनाना, उद्योग व्यापार को बढ़ावा देना, पेट्रोलियम से रिस्ते सुधारना ताकि सुरक्षा खर्च में कमी ला सके और विकास को बढ़ावा मिले यह उनकी प्राथमिकता थी। मनमोहन सिंह शासन काल में घटक पक्षों का नियंत्रण, पक्षाध्यक्ष के आदेश और बहुमत को कायम रखने से इसे प्राथमिकता देने के बाद, पृथ्व पन्थान योजना, निराधार योजना, आवास योजना, रोजगार योजना, उद्योग इस योजनाओं को चलाना जरूरी समझा। बाद में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, सहयोग के लिए प्रयास किये हैं। पिछले 30 सालों से किसी एक पक्ष को केंद्र में बहुमत नहीं मिल पाया था। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में लोकसभा में भाजपा को पूर्ण बहुमत हासिल हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत का संपूर्ण विकास चाहते हैं। पायाभूत सुविधाओं की ओर उन्होंने अपना लक्ष केंद्रित किया। साथ ही अमरिका, आस्ट्रेलिया जैसे देशों को आकर्षित किया। विदेशों में रहने वाले भारतीय पुंजीपती, उद्योगपतियों को भी भारत में निवेश कागभरोसा दिलाया। विदेशों की यात्रायें की ताकि सीमा पर ज्यादा तनाव न हो। अपने रेल बजट में लुभावने वायदे न करते हुये, रेल बजट तक जो योजनाएँ पूरी नहीं हुईं उसे पुरा करना, रेल सुविधायें बढ़ाना, रेल मार्ग का नुतनिकरण करना इन्होंने समझा ताकि रेल क्षेत्र में सुधार हो। भारत का सही दिशा में विकास हो उसके लिये लुभावनी बातों को

भारी जनसंख्या हमारी पैया झूबो देगी। खर्च तो हर साल हुये लेकिन स्थाई रूप से हल नही निकला। जातीयता फैलती रही। बेरोजगारी बढ़ती गई, सिंचाई क्षेत्र खर्च की तुलना गये। भ्रष्टाचार सभी क्षेत्र मे बढ़ता रहा। इसी का नतीजा 2014 की लोकसभा चुनाव मे दिखल मोदी एक साल के अंदर ही विदेशों मे अपना प्रभाव स्थापित करने मे कामयाब रहें हैं। विदेश निवेश करने मे उत्सुक है। उद्योग व्यापार को बढ़ावा देने की नीतियों बनाई गई है। शिक्षा, रक्षा, कृषी क्षेत्रों मे स्थायी विकास की योजनाये बनायी है। औद्योगिक विकास से ही रोजगार के अवक जो योजनायें है जो विकास के लिए असरदार हो सकती हैं उसे चलाने में भी प्राथमिकता र राजनीती से आगे आकर देश हित मे सोच रखना जरुरी है। मुमी अधीग्रहन बील' उन का एक प्रयास होगा। स्वच्छता का महत्व सभी को समझना चाहिए। जनधन योजना, अटल निवृ योजना गरिबों के लिए असरदार होगी। यह सभी योजनायें लाने के लिए विकास की सोच और स है। मोदी सरकार ने लायी हुई योजनाओं को असरदार बनाने के लिए उन्हें सबका साथ ले- महत्वपूर्ण योजनाये अमल में लाना, सबकी सहमती बनाना जरुरी है। विपक्ष को सभी यह बात की आखिर अपने देश के विकास की बात है। हमें सभी राजनीती से उपर उठकर विकास का स विपक्ष को सत्ता पक्षपर अकुश रखनाभी जरुरी होगा। भ्रष्टाचार न बढे, वह खत्म हो। लोगो हो। हर योजना पर जो खर्च मान्य किये गये वह पुरे किये जाते हैं या नही यह देखें। और प्रमा की भूमिका निर्धारें। जब देश हित की बात होती है तो हम सभी को राजनीति से बाहर निकर विकास की सोच हमारे मन-मन मे बसेगी। जब ऐसा होगा तो भारत एक सशक्त देश की रूप को दिखेगा और तभी हमारी भारी जनसंख्या हमारा सच्चा धन माना जायेगा। अन्धधा दुनियाँ हमें के रूप में ही देखती रहेगी।



आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research  
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-47, Vol-02

**Date of Publication**  
**30 April 2018**

**Editor**

**Dr. Babu g. Gholap**

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

**Co-Editor**

**Dr. Ravindranath Kewat**

(M.A. Ph.D.)

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251295  
**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

At Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed  
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295  
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors [www.vidyawarta.com](http://www.vidyawarta.com)



## महिलांच्या सद्गामीकरणस स्थानिक स्वराज्य संस्थाची भूमिका

मजानन सुपडाजी विस्कर

एम.ए., एम.फिल., बी.एड्.

श्री. शिवाजी महाविद्यालय आरवटे जि. अकोला.

प्रस्तावना :-

चित्रेचा इतरी पाळण्याची दोरी ती जगला उज्ज्वल रंगी कुटुंबाचा, देशाचा आणि जगाचा उद्वार करू शकते, हे ओळखूनच जागतिक संघटना बुनोने नवीन शतकातील २००१ वर्षांचा महिला सद्गामीकरण वर्ष म्हणून घोषित केले आणि आठ मार्च महिला दिन स्वीयांच्या सनमानार्थ जगभर साजरा केला जातो. महिला जगातील अर्धी शक्ती आहे, तिच्या विचारांशिवाय समाजाचा आणि राष्ट्राचा विकास शक्य नाही. ती शिकून विचार आत्मविश्वास वाढना पाहिजे, तिने स्वातंत्र्याचा प्रेक्षु उपभोग घेवून शिक्षण, आरोग्य, रोजगार, समान संधी आणि स्वैर्य उपलब्ध करून त्यांना शांततामय पध्दतीने जीवन जगता याचे अशी अपेक्षा आहे. परंतु वाढती लोकसंख्या, अज्ञान, स्वीयशेच, पाश्चि, उच्च-नियता आणि महिलांकडे पाहण्याचा दुय्यम दृष्टीकोन इत्यादी कारणांमुळे विचारांना मिकळ बसली आहे.

घासविक्ता स्त्री-पुरुष एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत. परंतु पुरुषांनी महिलांना उंबळ्याच्या बाहेर धडू दिले नाही, ती शिकून आत्मनिर्भर झाली पाहिजे, असे वाटत नाही. त्यामुळे स्वातंत्र्योत्तर काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी स्वीयानामध्ये स्त्री-पुरुष समानता, समान करमासाठी समान वेतनाची तरतूद, शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक आणि राजकीय विचारांचे मार्ग मोकळे करून दिले आहेत. पूर्वी चूक आणि मुकूट यामध्ये अडकलेली स्त्री सर्वेच क्षेत्रे काबीज करण्याची आकांक्षा ठेवून आहे. कुटुंबाच्या विकासात आघता वाटा असता घासाठी अनेक महिला नैकज्ञा करू लागल्या. तरकारी शिक्षणक्रम, भताकाम, पाककृती, चित्रकला, शोभेच्या वस्तु तयार करून विकणे यासारख्या विविध उपक्रमाल सहभागी झाल्या आहेत. परंतु राजकीय क्षेत्र महिलांसोठी अचोचित क्षेत्र म्हणून ओळखले जात होते. केवळ पुरुषांच्या निर्देशानुसार मतदान करण्याशिवाय फारसे काही केले नाही.

विचारांचे महत्व व आवश्यकता :-

महिलांचे कुटुंबातील दुय्यम स्थान, त्यामुळे त्यांच्यावर होणारे अन्याय, अत्याचार, मानसिक छळ यांमुळे त्यांचे सद्गामीकरण करणे आवश्यक आहे. त्यासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्थांची आवश्यकता आहे. त्यामुळे विचारांचे महत्व वाढले आहे. महिलांना सद्गम बर्नविष्णाची फळवळ व्यक्तीमत व सामूहिक साजवर सुरू आहे. महिलांना दुय्यम स्थान देणाऱ्या, टडपणाऱ्या, रचित ठेवणाऱ्या शक्तीविरुद्ध लढा आहे. त्यांना आत्मनिर्भर व आत्मसन्मानित केल्याशिवाय विकास होणार नाही. म्हणूनच शासनाने १९९३ साली संविधानामध्ये ७३ व ७४ वी घटनादुरुस्ती करून स्थानिक स्वराज्य संस्थानामध्ये स्त्रीयांना १/३ जागा घेवून ठेवल्याने महिलांचा राजकीय सहभाग वाढून नेकृव गुण विकसित होवून अनेक क्षेत्रात कामगिरी करण्याची संधी मिळत असल्यामुळे स्वीयोरणेने निर्णय घेण्याची क्षमता विकसित होवून त्या रातावेडी बनून त्यांना अधिकार, मान-सन्मान मिळत असल्यामुळे त्यांची सामाजिक प्रतिष्ठा वाढली आहे.

महिलांच्या सवर्तीकरणामुळे सर्वांगीण विकास घडवून आणण्यास मदत होते आणि सर्वेच क्षेत्रांवर स्त्री-पुरुष समानता स्थापित होण्यास मदत होते आणि नेकृव गुण विकसित होवून सामाजिक प्रतिष्ठा वाढते. जीवनमान उंचावून निर्भरताणे जीवन करण्याची उर्मी निर्माण होते. कुटुंबामध्ये अधिक सुखकाय निर्माण होवून आनंदाने व सुख-सममानाने जीवन जगण्यास मदत होते.

अभ्यासाची गृहीतके :-

१) महिलांच्या शिक्षणाचे प्रमाण वाढणे आहे.

२) स्वातंत्र्योत्तर काळात महिलांना मिळालेल्या अधिकारांमुळे त्यांनी विकासाचा टप्पा गाठला आहे.

३) महिलांच्या सवर्तीकरणामुळे पुरुषांच्या मानसिकतेत बदल झाला आहे.

४) बहुसंख्य महिला राजकारणात सक्रीय झाल्यामुळे त्यांच्या नेकृव गुणांचा विकास झाला आहे.

५) महिलांची निर्णय क्षमता वाढली आहे.

अभ्यासाचा उद्देश :-

महिला सद्गामीकरण म्हणजे महिलांच्या विकासातील उणीवा शोधून त्या सातत्याने दूर करून त्यांच्या सर्वांगीण विकाससाठी पोषक सहाय्यकरण निर्माण करून त्यांचा सर्वांगीण विकास घडवून आणणे होय. स्वातंत्र्यपूर्व काळात महिलांची स्थिती अतिशय वाईट होती, पुरुषांच्या इच्छेनुसार जीवन जगावे लागत होते. कित्या स्वतःचेही मत मांडण्याचा अधिकार नव्हता, परिणामतः क्षेत्रे शारीरिक, मानसिक, लैंगिक शोषण होत होते. स्त्री, परेश व आणि शिक्षणाचा अभाव या कारणांमध्ये कित्या मुनामीचे जीवन जगावे लागत होते. मात्र स्वातंत्र्यक्राची नंतर स्त्री-पुरुष



समानतेचे तत्व शिबकरल्यामुळे आणि शिक्षणाची संधी काही प्रमाणात प्राप्त झाल्यामुळे मोठ्या प्रमाणात महिला घरबाहेर पडून नोकऱ्या आणि व्यवसायाच्या माध्यमातून अर्थार्जन करू लागल्या. त्यांच्या सामाजिक स्तरात वाढ झाली, काही प्रमाणात पुरुषी बंधने कमी झाली. महिला शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रात प्रगती करू लागल्या. मात्र सर्व समावेशक अशा राजकीय क्षेत्रात महिलांचा सहभाग दुर्लक्षित होता. परंतु पंचायत राज आदर्शेमध्ये महिलांसाठी राष्ट्रीय जागांची तरतूद करण्यामुळे महिला राजकारणात सक्रिय झाल्या. ज्या राजकीय पक्षांचे मतदार संघ महिलांसाठी राष्ट्रीय झाले त्यांनी आपल्या पत्नी, सून किंवा मुलींला राजकारणात उतरवून आपले राजकीय वर्चस्व कायम ठेवण्याचा प्रयत्न केला. पतींकडून पत्नी पदाधिकार्यांच्या खुर्चीवर बसणे, तिची सही करणे, तिच्या सभेला स्वतः हजर राहणे, अशिष्टित आणि अशिक्षित महिलांना चुकीची माहिती देवून फसावणूक करणे, चुकीच्या मार्गाने पेंडवर सहा घेवून फसविण्याचे अनेक प्रकार उघड झाल्याचे दिसून येतात. कुटूंबी बदल सकारात्मक आणि नकारात्मक स्वरूपाचे दिसून येत असले ... सर्वांच्या प्रश्नांना राजकीय चौकटीत मान्यता देणारे हे महत्वपूर्ण पाऊल आहे. पर्यवृत्तीपर्यंत सिमीत राहिलेल्या महिलांना राजकीय शक्ती संपादन करून लक्ष्य संपादन करणे, आलेल्या पदांसाठी टिपून ठेवणे, पदावरून विविध जनसेवेची कामे करणे, प्रशासनात सुव्यवस्था सहभाग घेणे, अतिशय कठीण आव्हान असले तरी प्रतिकूल परिस्थितीत त्याचे वर्चस्व सिद्ध करायचाच आहे. राजकारण हे कधीही स्वच्छतासाखळी शुध्द, निर्मळ, पारदर्शी नाही आणि त्या स्वच्छता कधीच नव्हते. भ्रष्टाचार शिष्टाचार झाला आहे, मूल्यांपिढीत राजकारणाचे दिवस संपले आहेत. तेव्हा आहोत्या परिस्थितीत महिलांनी स्वतःला जास्तीत जास्त सहभाग करणे ब्रम्हदाण आहे.

अभ्यासपध्दती :-

प्रस्तुत शोधनिबंधात दुष्यंत तथ्य संकलनावर आधारित असून फुलफे, मार्सिके, निघातकालीने, वर्तमानपत्र इ. चापर केल्या आहेत.

अभ्यासक्षेत्र :-

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी भारत देशाची निवड केली असून स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर भारतीय संविधानाने महिलांना प्रदान केलेले अधिकार व हक्क आणि त्यातून बदलणाऱ्या पुरुषी भूमिकेचा अभ्यास केला आहे.

सूचना व उपाययोजना :-

❖ महिलांच्या राजकीय सहभागामुळे सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रात सकारात्मक परिणाम झाले आहेत. आजही स्त्री शिक्षणाचे प्रमाण वाढविणे आवश्यक ठरते.

❖ केंद्र व राज्य सरकारने महिला विकासच्या विविध योजना राबवितांना ग्रामीण भागात प्रचार व प्रसार करावा.

❖ महिलांच्या निर्णय प्रक्रियेतील सहभाग वाढविण्यासाठी ग्रामसभा भरविणे संपन्नकरून असावे.

❖ पुरुषी संकृती बाजूला सारून राजकीय पक्षांनी एकत्र येवून संसद व राजकीय मंडळांमध्ये महिलांसाठी एक लुतीवांश आरक्षणाने विधेयक मंजूर करून ज्येष्ठ महिलांसाठी एक पाऊल पुढे टाकणे पाहिजे.

निष्कर्ष :-

१) महिलांच्या राजकीय सहभागामुळे सामाजिक व आर्थिक स्तर सुधारला आहे.

२) स्त्री पंथरा आणि पुरुषी संस्कृतीची धार बघावू लागली.

३) महिलांच्या राजकीय सहभाग वाढल्यामुळे नेहूव मुणांच्या विचारसरणीवरच निर्णय क्षमता वाढली आहे.

४) महिलांच्या राजकीय सहभागामुळे लोकशाही मूल्य रुजविण्यासाठी हातभार लागला आहे.

संदर्भ सुची :-

१) पंचायत राज आणि सामूहिक विचारस - डॉ. श.मो. देवगलर, श्री. साई प्रकाशन, नागपूर.

२) पंचायत राज आणि नागरी प्रशासन - डॉ. अर्जुन दारानकर, वेल्स पब्लिकेशन, औरंगाबाद.

३) महाराष्ट्रातील पंचायत राज व नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था, प्रा.शि.श्री.पाटील, के.सागर पब्लिकेशन.

४) भारतीय समाज आणि सामाजिक शास्त्र - डॉ. भा.शि. श्रद्धा.





# International Research Journal of Multidisciplinary Studies

Chief Editor  
Dr. Mahendra R. Avaghade

Executive Editor  
Prof. Tanaji D. Jadhav

Published by  
**IJRMS**  
Sr. No. 397, Flat No. 7, 4 Sizan Society,  
Bhugaon, Tal. Mulshi, Dist. Pune 412115

Printed by  
**Anmol Graphics**  
Flat No.3, Ojas Apartment  
Sr.No.57/3B, NR, Morya Vihar, Kothrud, Pune 411038

Copyrights: Editors @2019  
All Rights reserved

ISSN: 2454-8499 (Online)

Issue  
Available at [www.irjms.in](http://www.irjms.in)

Arts,





**शहा बानो व सायरा बानो : ऐतिहासिक निर्णय  
डॉ. संतोष नारायण कायंदे**

सहयोगी प्राध्यापक श्री शिवाजी महाविद्यालय, अकोट

सर्वोच्च न्यायालयाने २२ ऑगस्ट २०१७ रोजी सायरा बानो खटल्याचा निर्णय करताना तीन तलाक अंतर्धानिक असल्याचे स्पष्ट केले. मुस्लिम महिलांसाठी अन्वय्य ठरलेली आणि अनेक वर्षांपासून सूट असलेली तीन तलाकाची चाईट पद्धत सर्वोच्च न्यायालयाने आसविधानिक ठरविल्याने एकप्रकारे सायरा बानोच्या रुपात सर्वोच्च मुस्लिम महिलांना न्याय मिळाला आहे. त्याआधी २३ एप्रिल १९८५ रोजी प्रसिद्ध अशा शहा बानो खटल्याचा निर्णय करताना सर्वोच्च न्यायालयाने इतर धर्मातील महिलांना असलेला पोटगोचा इश्ट मुस्लिम महिलांना सुद्धा असल्याचे मान्य करून शहा बानोच्या बाजूने निर्वाळा दिला होता. शहा बानोच्या रुपात पहिल्यांदाच मुस्लिम महिलांला अशा पोटगोचा हक्क मिळाला होता. भारतीय वंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) कलम १२५ अंतर्गत पोटगोचा हक्क मान्य केला होता. त्याआधी असे (मुस्लिम महिलांचा बाबतीत) पडले नव्हते. याआधी वरील पोटगोचा सुद्धे ऐतिहासिक असून मुस्लिम महिलांच्या बाबतीत ते मूलतः पूर्ण टप्पे घडवले गेले. प्रस्तुत शोधग्रंथामध्ये शहा बानो खटल्याचे विवेचन करण्यात आले आहे.

**१) शहा बानो खटला**

शहा बानो एक मुस्लिम महिला होती. १९३२ मध्ये तोंबा विवाह इंदोरमधील प्रेमदास बकौल मोहम्मद अहमद खान यांच्याशी झाला होता. विवाह होऊन १४ वर्षे झाल्यावर खान यांनी दुसऱ्या तरुण महिलेला आपली दुसरी पत्नी म्हणून घरी आणले. दोन्ही पत्नींसह काही वर्षे एकत्रित राहिल्यानंतर खान यांनी शहा बानोला तींच्या पाच बालकांसह घराबाहेर काढले. त्यावेळी शहा बानोचे वय ६० वर्षे होते. असे करताना खान यांनी प्रतिमाह २०० रुपये शहा बानोला देण्याचे तोंडी वचन दिले होते.<sup>१</sup> परंतु खान यांनी १९७८ त्या एप्रिल महिन्यात शहा बानोला दिलेले वचन मोडून महिन्याकाठी २०० रुपये देणे बंद केले. अशास्थितीत स्वतःचा व आत्म्याचा पाच बालकांचा उदरनिर्वाह धारणण्यासाठी शहा बानोजवळ कायगती साधून उरले नव्हते. त्यांनी इंदोरच्या स्थानिक न्यायालयाने आत्म्याचा पतिविरुद्ध धाव घेतली. वंड संहितेचा (Code of Criminal Procedure) कलम १२५ अंतर्गत आपल्या पाच बालकांचा स्वतःचा धारणण्यासाठी पतीकडून महिन्याला ५०० रुपये पोटगोचा देण्याची आज्ञा देण्यात आली. त्यानंतर १९७८ मध्ये नवेंबर महिन्यात शहा बानोच्या बाबतीत इतरांमधील कायदेशीर मुस्लिम पुरुषांवरूनही आज्ञा देण्याचे विशेष अधिकाऱ्यांचा उपदेश कलम १२५(१) व १२५(२) व १२५(३) अन्वयेत शहा बानोजवळ तलाक दिला. असे केवळचे इतरांमधील कायदेशीर असलेली पोटगोची तरतूद संशुद्ध शहा बानोची आज्ञा घेण्यासाठी कायदेशीर अडथळावर खणून मलाकचे घेतले यांना काढता होते. इतरांमधील कायदेशीर असेही तरतूद ५४००/-<sup>२</sup> रुपये देण्याची तरतूद होते. स्थानिक न्यायालयाने ऑगस्ट १९७९ मध्ये घरील खटल्याचा निर्णय करताना खान यांनी शहा बानो यांना दरमहा २५/- रुपये पोटगोचा म्हणून देण्याचे निर्देश दिले. न्यायालयाने मान्य केलेली पोटगोची रक्कम सुट्ट्यांची अडथळ्याने त्यात पाहून त्यांची म्हणून १ जुलै १९७९ रोजी शहा बानो यांनी मध्यप्रदेश उच्च न्यायालयाला पुनर्विचारार्थी अर्ज दाखल केला. त्याचा निर्णय करताना मध्यप्रदेश उच्च न्यायालयाने शहा बानोला दरमहा १७९.२० रुपये पोटगोचा रुपात देण्याचे मान्य केले. त्यावर शहा बानोचे पती मोहम्मद खान यांनी सर्वोच्च न्यायालयाला अपील दाखल केले. शहा बानोबाबत आपली बायलतीही जबाबदारी नसल्याचे त्यांचे म्हणणे होते. आपण दुसरा विवाह केला असून त्याला सुद्धा इस्लामिक कायद्याची<sup>३</sup> गरवानगी असल्याचे खान यांनी स्पष्ट केले होते.

**२) सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णय :**

मोहम्मद अहमद खान विरुद्ध शहा बानो बेगम आणि इतर हा खटला शहा बानो खटला म्हणून ओळखला जात असला तरी वसतःसत तो मोहम्मद अहमद खान यांनी शहा बानो व इतर यांच्या विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालयाला दाखल केलेला अपीलही खटला होता. सर्वोच्च न्यायालयाने यावर पहिल्यांदा ३ फेब्रुवारी १९८१ रोजी न्यायाधीश सुब्रह्मण्यन अन्वये या न्यायाधीश ए. वरदराजन या हायकोर्टाच्या खंडपीठाने विचार केला. आधीच्या मध्यप्रदेश उच्च न्यायालयाच्या निर्णयावर विचार करताना (वंड संहितेचा कलम १२५ अंतर्गत मुस्लिम महिलांना सुद्धा दिवनी जाणारी पोटगोचा) आवश्यक तो मुसलमानी धर्म संकेत असेल पाच सदस्यीय खंडपीठाकडे वरने केले. पाच सदस्यीय खंडपीठामध्ये सर्वोच्च न्यायालयाचा मुख्य न्यायाधीश याचकी, वंडरवुड, रीनाथ मिश्रा, डी.ए. देसाई, ओ. त्यागया रेड्डी आणि इ.एस. खंकरावामी यांचा समावेश होता.



२३ एप्रिल १९८५ रोजी सर्वोच्च न्यायालयाने एकमताने निर्णय दिला. सर्वोच्च न्यायालयाने आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालयाचा निर्णय कायम करून मोहम्मद अहमद खान यांचे अपील फेटाळले.<sup>४</sup> आपला चरितार्थ चालवण्यासाठी असमर्थ असलेल्या घटस्पोटीत मुस्लिम महिलांसाठी पोटणी देणे मुस्लिम पत्नीचे बंधनकारक असण्याचा प्रस्ताव रद्द प्रक्रिया संहितेच्या कलम १२५ च्या तरतुदीमध्ये आणि मुस्लिम व्यक्तिगत कायद्यामध्ये (Muslim Personal Law) कोणताच संघर्ष नसल्याचे सर्वोच्च न्यायालयाने स्पष्ट केले होते. कुराणाचा संदर्भ देताना असे म्हटल्या गेले की कुराणामध्ये सुद्धा घटस्पोटीत महिलांना पोटणी वा इतर स्वरूपात व्यवस्था करून देणे मुस्लिम पत्नीला बंधनकारक आहे. रद्द प्रक्रिया संहितेचे कलम १२५ सर्वोच्च कोर्टाचे लक्ष वेधून त्यासाठी जात, पंथ आणि धर्म आड येत नाही असे सर्वोच्च न्यायालयाचे म्हणणे होते. भारतीय संविधानाचे कलम ४४ (समान नागरी संहिता) अन्वयेत न आल्याने ते मूलतःच नसू शकते आहे. विविध धर्मांना अनुसरून असलेले विधम विचारसरणांचे कायदे नष्ट करून समान नागरी संहिता लागू केली पाहिजे. समान नागरी संहिता ही राष्ट्रीय एकात्मतेचा सहाय्यकारी सिद्ध होईल असेही न्यायालयाने म्हटले होते.

६) मुस्लिम महिला कायदा - १९८६ :

सर्वोच्च न्यायालयाने रद्द बानोबाबू यांचे निर्णय देऊन मुस्लिम महिलांला न्याय दिला असला तरी न्यायालयाचा निर्णय मुस्लिम बहुसंख्येला मान्य नव्हता. न्यायालयाचा निर्णय म्हणजे मुस्लिम व्यक्तिगत कायदा आणि मुस्लिमांच्या धार्मिक अधिकारांचा इत्यादी असल्याचे सांगून त्यांना त्यांचे अधिकार रस्त्यावर उतरण्याचे ठरवले. तत्कालीन काँग्रेस पक्षाच्या सरकारने प्रारंभी न्यायालयाच्या निर्णयाचे स्वागत करून संसदेमध्ये त्याला पाठिंबा दर्शवला होता. राजीव गांधी यांच्या मंत्रिमंडळातील मंत्री आरिफ मोहम्मद खान यांनी न्यायालयाच्या निर्णयाचे स्वागत करून त्याच्या समर्थनाचे संसदेत भाषण दिले होते. असे असले तरी पुढे घडले मात्र निराशेचे. काँग्रेस पक्षाच्या सरकारमधील अनेक महत्त्वपूर्ण रुभासदांनी पंतप्रधान राजीव गांधी यांना असत सल्ला दिला की सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णय निश्चय टाकण्याच्या दृष्टिने संसदेत त्यासंबंधी विधेयक मांडून कायदा केला पाहिजे. त्याचाने काँग्रेस पक्षाचे निवडणूकीचे राजकारण होते. असे केलं नाही तर येणाऱ्या निवडणूकीमध्ये अशोबाबू यांच्या पाठिंब्याने पक्षाच्या पाठिंब्याने पक्षाच्या पाठिंब्याने मुस्लिम मतदाता मुळावे लागेल अशा भीती काँग्रेसी नेत्यांना वाटत होते. शेवटी पंतप्रधान राजीव गांधी यांनी संसदेत कायदा करण्यासाठी पुढाकार घेतला. काँग्रेस पक्षाला स्वतःच बंदूक असल्याने कायदा संमत होणे बऱ्याच जडोप नव्हते. १९८६ मध्ये भारतीय संसदेने मुस्लिम उर्ध्व प्रोटेक्शन अँड रॉटेशन अँड डिफरेंस अँड १९८६ संमत केला. असे केल्याने न्याय झालेला अरिफ मोहम्मद खान यांनी मीतिपात्राचा राजीवना दिला. अशा कायदा केल्याने सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णय कायम राहू लागू लागला. या कायद्याला अनुसरून घटस्पोटीत महिलांना बळकटता देण्याचा प्रस्तावही पुरविला गेला. घटस्पोटी झाल्यावरून १-४ वेळापेक्षा पोटणी देण्याची अशी तरतूद केली आहे. घटस्पोटी रद्द प्रक्रिया संहितेच्या कलम १२५ मी विरुद्ध आहे. मुस्लिम घटस्पोटीत महिलांना पोटणी देणे कलम १२५ नुसार मुस्लिम महिला बंधनकारक आहे. १९८६ च्या उद्योग कायद्याचा तत्सुची अन्वये मुस्लिम घटस्पोटीत महिलांना मुस्लिम पत्नीने पोटणी देणे फक्त इतक्या बंधनकारक नाही. या कायद्याला अनुसरून बंधनकारक इतक्या बंधनकारक पत्नीने पोटणी देण्याचा आदेश देऊ शकतो असे मुस्लिम कायदानुसार हीच संपत्तीचे वारसदार आहेत. परंतु जर असे कोणी संकषेपत व्यक्ती नसतील किंवा ते पोटणी देऊ शकत नसतील तर न्यायालय प्रदेश च्या कोर्टाला पोटणी देण्याचा आदेश देईल. वरील १९८६ च्या कायद्याने सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णय निश्चय ठरला आणि राजा बानो यांचा न्यायालयीन लढाई तिजूनही एकप्रकारे पराभव झाला.

निष्कर्ष :

राजा बानो यांच्या म्हणजे भारतीय राजकीय व्यवस्थेतील ऐतिहासिक घटना आहे. या घटनेचा निर्णय करताना सर्वोच्च न्यायालयाने राजा बानो यांच्या बाबत निर्णय देऊन राजा बानो यांचे पती मोहम्मद अहमद खान यांचे अपील फेटाळले होते. सर्वोच्च न्यायालयाने घटस्पोटी संहितेच्या (साआरपीसी) कलम १२५ च्या तरतुदीमध्ये आणि मुस्लिम व्यक्तिगत कायद्यामध्ये (Muslim Personal Law) कोणताच संघर्ष नसल्याचे स्पष्ट केले होते. कलम १२५ सर्वोच्च कोर्टाचे लक्ष वेधून त्यासाठी कोणताही जात, पंथ आणि धर्म आड येत नाही. विशेष म्हणजे भारतीय संविधानाच्या धर्मदंडाचा प्रकृत्याने कलम ४४ मध्ये नसून केलेली समान नागरी संहिता लागू करावी अशाचाने राष्ट्रीय एकात्मतेला बळ मिळेल असेही न्यायालयाने म्हटले होते. कुराणाचा संदर्भ देताना असे म्हटल्या गेले की कुराणामध्ये सुद्धा घटस्पोटीत महिलांना पोटणी वा इतर स्वरूपात व्यवस्था करून देणे मुस्लिम पत्नीला बंधनकारक आहे. प्रारंभी काँग्रेस पक्षाच्या सरकारने सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णयचे स्वागत केले. राजीव गांधी यांच्या





मंत्रिमंडळातील मंत्री अरविफ मोहम्मद खान यांनी न्यायालयाच्या निर्णयाचे स्वागत करून त्यांच्या समर्थनार्थ संसदेत भाषण दिले होते. परंतु सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्णयाला विरोध करण्यासाठी मुस्लीम कट्टरवादी संघटनांनी रस्त्यावर उतरण्याचे ठरवले. मुस्लिम कट्टरवाद्यांचा विरोध लक्षात घेऊन आणि आपल्या निवडणुकीच्या राजकारणाला अनुसरून काँग्रेस पक्षाच्या सरकारने आपल्या आधीच्या भूमिकेत बदल केला. पंतप्रधान राजीव गांधी यांनी सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णय निषेध ठरवण्यासाठी संसदेत कायदा करण्यासाठी पुढाकार घेतला. १९८६ मध्ये भारतीय संसदेने मुस्लिम उर्मेन प्रॉटेक्शन ऑफ राईट्स ऑन डिव्हॉर्स अॅक्ट, १९८६ संमत केला. असा कायदा केल्याने सर्वोच्च न्यायालयाचा निर्णय आपोआप विचित्र ठरला. विशेष म्हणजे असे केल्याने राजीव गांधी यांच्या मंत्रिमंडळातील नाराज झालेल्या अरविफ मोहम्मद खान यांनी मंत्रीपदाचा राजीनामा दिला होता. या कायद्याला अनुसरून घटस्मोटीत महिलांना फक्त इततचच पालावधोपयंत किंवा घटस्मोटी झाल्यापासून ९० दिवसांपर्यंत पोटगो देणे अशी तरतूद केलेली आहे. वरील तरतूद संघ प्रक्रिया संहितेच्या कलम १२५ शी विसंगत आहे. मुस्लिम घटस्मोटीत महिलांना पोटगो देणे कलम १२५ नुसार मुस्लिम पत्नीला संघनकारक आहे. १९८६ च्या उररोका कायद्याच्या तरतूदी अन्वये मुस्लिम घटस्मोटीत महिलांना मुस्लिम पत्नीने पोटगो देणे फक्त इततचच कालावधीपुरतोच मर्यादित केले आहे. मुस्लीम कट्टरवादी संघटनांचा दबाव आणि चर्चित कायदा यामुळे शाह यानी यांनी आपल्या घटस्मोटीचा दावा मागे घेतला. शीव न्यायालयाने न्याई निकुनती शाह यानी यांचो हार झाली.

संदर्भ :

- 1) Khan, saeed (11 November 2011) "My mother was wronged, gravely wronged". Hindusthan Times. Retrieved 3 may 2014.
- 2) Seyla Benhabib 2002. P. 91-92.
- 3) "Mohd. Ahmed Khan and Shah Bano Begum and others" Supreme Court Reports, 1985. 3:844, 23 April, 1985.
- 4) "Mohd. Ahmed Khan and Shah Bano Begum and others" Supreme Court Reports, 1985. 3:844, 23 April, 1985.

डॉ. बी. एच. भटकर विभाग प्रमुख (राज्यशास्त्र) श्री शिवाजी महा., अकोट, जि.अकोला

R.N.

RESEARCH PAPER IN POLITICAL SCIENCE

<b>MANUSCRIPT INFO</b> Received : 03/06/2015 Reviewed: 05/06/2015 Accepted: 07/06/2015	<b>ABSTRACT</b> भारतीय लोकशाही राज्यात सन २०१४ साली लोकसभा निवडणुके झाली ती केवळ निवडणुके नसून शासनाकडून असलेल्या लोकांच्या अपेक्षांचे वास्तव आहे. शोषण, वारिद्वय, भ्रष्टाचार, महागाई, घोटाळे, जातीय तेंड, धर्मांधता राजकीय मक्तेदारी, धरानेशाही, विकासाचा केवळ बागुलबुवा इत्यादीना जनता कंटाळली होती. आपल्या मतांचा वापर केवळ निवडणुकीपुरताच होतो, आपसात जातीय तेंड जाणिवेपुरवक निर्माण केली जाते. भ्रष्टाचारी नेत्यांना अमय मिळते, देशाची तिजोरी रिकामी आहे पण नेते अक्काविस झाले. हे सर्व जनतेच्या तक्षात आल्यामुळे, सन २०१४ च्या निवडणुकीमध्ये सत्ताधारी काँग्रेस व मित्रपक्षांना जनतेने चांगलाच हिसका दाखविला व सत्तेवरून खाली खेचले.
<b>KEYWORDS</b> अस्मिता परराष्ट्रीय धोरण प्रकीर्ण उद्योगांना उद्योगांना चालना, राशोपनाकरिता शिष्यवृत्ती, कोशल्य शिक्षण विकास, रोजगार निर्मिती वर भर, स्वयंम-साक्षात्कन योजना, डिजिटल इंडीया,	

**प्रस्तावना:-**  
गुजरातमध्ये सलग चार वेळा एकहाती सत्ता मिळवणारे तेही एकट्याच्या भरवशावर सत्ता काबीज करणारे नरेंद्र मोदी लोकांच्या नजरेत भरले, केन्द्र सरकार व भाजप मधील वरिष्ठ मंडळी नरेंद्र मोदींच्या विरोधात असूनही व गुजरात मध्ये दंगली होऊनही तेथील सत्तेवर मोदींचाच अंकुश राहिला आहे. एवढेच नव्हे तर केन्द्रीय आर्थिक पाठबळ नसतानाही इतर सर्व घटकसंस्थांच्या तुलनेत गुजरातची सर्वच क्षेत्रात झालेली भरभराट कुणाच्याही नजरेत भरणारी आहे. त्यामुळे जनतेच्या अपेक्षा मोदीबद्दल वाढणे स्वाभाविक आहे. शिवाय सत्ताधारी काँग्रेसने सुद्धा मोदींचा बसका निश्चितच घेतला होता, मोदी जातीय व धर्मांधारी असल्याचा प्रचार-काँट्रेस व मित्र पक्ष करीत होते. पण जनता या गोष्टीला पुरती कंटाळली होती, त्यांना केवळ आणि केवळ मोदींचा गुजरात, त्यांचा विकास दिसत होता. त्यामुळे संपूर्ण देशात, जनमानसात मोदी आदरस्थान बनले होतेहे कुणाच्याही तक्षात आले नाही. निवडणुके निकालानेच ते शक्यून दिले सोबतच देशाच्या विकासाच्या अपेक्षांचे ओझे नव्हे तर विस्थापन जनतेनी मोदींच्या खांद्यावर टाकला एवढे मात्र स्पष्ट आहे.

**काँग्रेस पक्षाची पिछेहाट:-**  
स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर केवळ त्रिस पक्षांचाच प्रभाव भारतीय राजकारणावर राहिलेला आहे. १९६४ पर्यंत संपूर्ण देशात (किं व राज्य) काँग्रेसचीच सत्ता होती. प.नेहरु व इंदिरा गांधी यांची पक्षावर व शासनावर पूर्ण पकड होती. त्यांच्या प्रभावाचा फावदा रव, राजीव गांधी यांनाही झाला. सहानुभूतीचा परिणाम म्हणून नरसिंहराव यांनी नेतृत्व केले. पण याच काळात ज्यौरीसही पिछेहाट सुरु झाली. सोनीया गांधी राजकारणात मोदी प्रभावी किंवा परिपक्व नसल्यामुळे आपल्या पक्षावर पाहिले तेवढी मजबूत पकड ठेऊ शकल्या नाहीत. त्यामुळेच मित्र पक्षावर आपला प्रभाव पाडू शकल्या नाहीत. सोनियांच्या नेतृत्वात काम करणाऱ्या अनेकांनी आपल्या प्रादेशिक अस्मित्याच्या आधारे आपआपले पक्ष मजबूत केले व आपल्या राज्यात त्यांचा प्रभाव वाढविला. त्यांचा परिणाम म्हणून काँग्रेस पक्षाला मित्र पक्षांची सोबत करूनच निवडणुके लढविले जाणे पडले. एकट्या काँग्रेस पक्षाला बहुमत मिळू शकले नाही.

सन २००९ व २००९ च्या लोकसभा निवडणुकीत मनमोहनसिंग यांच्या नेतृत्वात काँग्रेसने सत्ता भोगली असली तरीही त्याकाळात प्रादेशिक पक्ष व नेत्यांचाच प्रभाव वाढल्यामुळे व त्यांच्याच बळावर सत्ता टिकून असल्यामुळे काँग्रेस पक्षाला आर्थिक, राजकीय स्वरूपाच्या तडजोडी त्यांच्या सोबत कराव्या लागल्या. भ्रष्टाचाराची प्रकरणे झाकावी लागली. सोनिया गांधींचे जावाई सुद्धा भ्रष्टाचाराच्या प्रकरणात अडकले गेले. राहुल गांधी अतिशय नयजे व अननुभवी असल्यामुळे पक्षवर व शासनावर पाहिले तेव्हा प्रभाव पाडू शकले नाहीत. करोडोघेघ घोटाळे उघड होत गेले, मनमोहनसिंग आपल्या नेतृत्वमुगांची छाप देणाऱ्या अंतर्गत व परराष्ट्रीय धोरणांमध्ये पाडू शकले नाहीत. नेत्यांच्या व मंत्र्यांच्या भ्रष्टाचाराकडे जाणून घेऊन दुर्लक्ष करणारे व सोनिया गांधींचे मोतविते बाहूले म्हणून त्यांची प्रतिमा संपूर्ण देशात तवार झाली. या सर्वांचा राग जनमानसांमध्ये रुजत गेला व २०१४ च्या निवडणुकी काँग्रेसची पूर्ण पिछेहाट झाली.

**नरेंद्र मोदींचा प्रभाव व भाजपचे यश:-**

गुजरातमध्ये सतत चार निवडणुकांमध्ये भारतीय जनता पक्षाला बहुमत मिळवून देण्यात नरेंद्र मोदी यांचाच मोठा वाटा आहे. गुजरातचे मुख्यमंत्री म्हणून काम करताना केन्द्राकडून अडवणुकीचे धोरण आणि स्वपक्षामधुनही होणारा विरोध यावर मात करीत गुजरात सर्वांगीण विकासात संपूर्ण देशात अग्रस्थानी पोहोचला. नरेंद्र मोदींची कार्यशीलता, सचोटी, मेहनत, जिद, दुरदृष्टी आणि विकासाची योग्य दिशा व नेतृत्व कौशल्य इत्यादींचे दर्शन देशातील संपूर्ण जनतेला झाले. नरेंद्र मोदींनी देशाचे नेतृत्व करावे अशी अपेक्षा गुजरात मधील जनतेनी व्यक्त केली व त्यात देशातील जनतेनी पाटीब दिला. २०१४ च्या लोकसभा निवडणुकीच्या ५ वर्षांपूर्वीपर्यंत मोदींनी राष्ट्रीय स्तरावर आपली पकड मजबूत करण्यास प्रारंभ केला. काँग्रेस पक्षाच्या मतांच्या निर्वाजनाचा रूजम जन्मास केला. त्यांचे घोटाळे, अकार्यक्षमता, निष्क्रियता घेऊन संपूर्ण देशात प्रचार समाना प्रारंभ केला. सर्वप्रथम हैद्राबाद येथून प्रचार समाना सुरुवात केली. पहिल्याच सभेपासून एक रुपया तिकीट घेऊन लोक सभेला एवर राहत होते. शब्दांचा अडुका मारा करून जनमत जिंकण्याचा सपाटा सुरु झाला.



जबकजबसह सहा महीने कॉर्रेस व मित्र पत्र गाकील राहीले नव्हे तर सोनीया, शिबंका व राहुल यांच्या करिभानेहमी प्रमाणे तारणार याच प्रमात राहीले. मोदी अस्त्रापुढे कॉर्रेस व मित्र पत्र काहीही जबाबी शब्द देऊच शकत नव्हते. मोदी हे धर्माघाती आहेत एवढ्याच फार तो प्रचार करित होते. परंतु त्याचा उलट परिणाम इ हाता. कॉर्रेसनेच आपणैत जातीयतेचे राजकारण करून लोकांचे जाती-धर्मात विभाजन केले व त्यांची मते आपली Vote Bank बनविली हे जनतेच्या लक्षात आले होते. २०१४ लोकसभा निवडणुकीत एका पक्षाला बहुमत मिळेल असे कुणासाठी वाटले नव्हते. कॉर्रेसच्या काळात मंत्रप्रधान पदाची खुडीस मिळालेली प्रतिमा, भ्रष्टाचार, अकार्यक्षमता इत्यादींचा परिणाम व मोदींचे नेतृत्व, वक्तृत्व याची जनतेवर पडलेली छाप यामुळे गेल्या ३० वर्षांपासून जे कोणत्याही एका पक्षाला बहुमत मिळू शकले नव्हते, केवळ आघाडी शासनाचेच युग होते त्याला छेद दिल्या गेला. २०१२ जागा जिकेत लोकसभेत मोदींच्या नेतृत्वात भाजपने पुर्ण बहुमत प्राप्त केले. संपूर्ण देशात एक उत्साहाचे व विकासाच्या आशेचे वातावरण निर्माण झाले.

#### मोदींच्या विकासात्मक योजना व लोकअपेक्षा:-

लोकांनी निवडणुकीच्या माध्यमातून विकासाची जबाबदारी एकप्रकारे मा. नरेंद्र मोदी यांचेकडेच सोपविली आहे. म्हणून २०१४ ची लोकसभा निवडणुक फक्त निवडणुक नसून लोकांच्या अपेक्षांचे वास्तव आहे. भ्रष्टाचार, जातीय तेंद, निष्क्रियता, महागाई घोटाले, धराभेराही, इत्यादींना जनता कंटाळलेली होती. त्याचाच परिणाम मतपेटीच्या महकमातून विसरला व भाजपला पूर्ण बहुमत प्राप्त इ

जाले. गेल्या एक वर्षात मा. प्रधानमंत्री २० देशांचा दौरा करून आले. "मेक इन इंडीया" च्या माध्यमातून परकीय गुंतवणूक, उद्योग, सेवा क्षेत्रात विश्वासाचे वातावरण निर्माण केले. स्वच्छभारत अभियानाच्या माध्यमातून गरीबांसाठी स्वच्छता रुहे, शौचालयांची निर्मिती, नद्यांचे शुद्धीकरण, केटी बचाव, बेटी पढाओ योजना, लुकांच्या योजना, महिलांसाठी व्याजवर कपात, जनधन योजना, असाघटीत कामगारांना अटल पेंशन योजना, कामगार कायद्याचे मॉडेल, विदेशी गुंतवणुकीस विदेश दारे व "मेक इन इंडीया", रौतकनांना देण्यात येणाऱ्या मदतीच्या निकषांमध्ये परिवर्तन, प्रकीया उद्योगांना घालना, संशोधनाकरिता शिध्दपुती, कौशल्य शिक्षण विकास, रोजगार निर्मिती वर भर, स्वयं-सहायकन योजना, डिज्जीटल इंडीया, मनानी गंगे, इत्यादी अभिनव व प्रभावी योजनांची निर्मिती एका वर्षाच्या काळात करण्यात आलेली आहे. योजना साकार होणे हे सुद्धा महत्वाचे असते. हीच 'अच्छे दिन' चा मार्ग आहे. लोकांच्या अपेक्षेनुसार योजना तयार झाल्या. आज त्याची अंमलबजावणी योग्यरित्या करणे आवश्यक आहे. तेव्हाच 'अच्छे दिन'ची प्रत्यक्ष सुरुवात होईल.

#### संदर्भ ग्रंथ:-

- १) मानवी हक्क- के. सागर - बी. बी. पाटील प. आ.२००९
- २) सामाजिक न्याय व जागतिकीकरण- आनंद तेलतुंबडे
- ३) लोकसभेचा मासिक- महाराष्ट्र शासन
- ४) भारतीय लोकशाही- स्थिती आणि गती- विन्मय प्रकाशन औरंगाबाद



## महाराष्ट्रातील स्थानिक राजकीय प्रक्रिया

डॉ. संतोष नारायण कायंदे

सहयोगी प्राध्यापक,  
श्री शिवाजी महाविद्यालय, अकोटा जिल्हा, अकोला

अकोला महानगरपालिका सन २००१ मध्ये अस्तित्वात आली. महापालिकेच्या स्थापनेपासून म्हणजे सन २००१ पासून आतापर्यंत महापालिकेच्या तीन निवडणूका संपन्न झाल्या आहेत. २००१ मध्ये झालेल्या पहिल्या निवडणूकीमध्ये भाजप-शिवसेनेला बहुमत मिळाले आणि युतीची सत्ता स्थापन झाली. सन २००७ मध्ये झालेल्या दुसऱ्या सार्वत्रिक निवडणूकीच्या वेळी काँग्रेस-नाट्टवादीला यश मिळाले आणि आघाडीची सत्ता स्थापन झाली. तर २०१२ मध्ये झालेल्या तिसऱ्या निवडणूकीमध्ये भाजप-शिवसेना युतीला सर्वाधिक जागा मिळाल्या असल्या तरी स्पष्ट बहुमत कोणालाही मिळू शकले नव्हते. अशा स्थितीत काँग्रेस-नाट्टवादी काँग्रेस पक्षाच्या पार्टीब्यावर आधारित अकोला विकास आघाडी व भारिप बहुजन महासंघाची आघाडीची सत्ता स्थापन झाली. महिलांचे ५०% आरक्षण, नवीन प्रभाग रचना, काही महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पक्षांच्या नेत्यांनी केलेली पक्षांतरे आणि सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे निवडणूकीच्या तीन महिने आधीच झालेली महापालिकेची वरखारती या पाश्र्वभूमीवर झालेली अकोला महापालिकेची निवडणूक महत्त्वपूर्ण समजली पाहिजे. प्रस्तुत शोधनिबंधामध्ये महाराष्ट्रातील स्थानिक राजकीय प्रक्रियेचा अभ्यास केला असून त्यासाठी विशेष संदर्भ म्हणून अकोला महापालिकेची निवड केली आहे. महापालिका पातळीवरील स्थानिक राजकीय प्रक्रियेचे अध्ययन करण्यासाठी सन २०१२ मध्ये झालेल्या तिसऱ्या सार्वत्रिक निवडणूकीचे विश्लेषणात्मक अध्ययन करण्यात आले आहे.

### १) उमेदवार व राजकीय पक्ष :

फेब्रुवारी २०१२ मध्ये झालेल्या अकोला महापालिकेच्या निवडणूकीमध्ये एकूण ७३ जागांसाठी ५१७ उमेदवार निवडणूक स्पर्धेत सहभागी झाले होते. यामध्ये विविध राजकीय पक्षांचे २८७ आणि २३० अपक्ष उमेदवारांचा सहभाग होता. निवडणूक स्पर्धेत सहभागी झालेल्या राजकीय पक्षांची संख्या १९ इतकी होती. यामध्ये पाच राष्ट्रीय पक्ष, पाच प्रादेशिक पक्ष आणि नऊ इतर पक्षांचा समावेश होता. पाच प्रादेशिक पक्षांपैकी शिवसेना व मनसे हे दोन पक्ष महाराष्ट्रातील मान्यताप्राप्त प्रादेशिक पक्ष होते. काँग्रेस पक्षाने सर्वाधिक ४४ उमेदवार निवडणूक स्पर्धेत उतरविले होते. भाजपने ३८, राष्ट्रवादी काँग्रेसने २७, बसपने १४, भाकपने ३ उमेदवार निवडणूक स्पर्धेत उतरविले होते. उपरोक्त पाचही राष्ट्रीय पक्षांच्या निवडणूक स्पर्धेत असलेल्या उमेदवारांची संख्या १२६ होती. प्रादेशिक पक्षांपैकी शिवसेनेने सर्वाधिक २६ उमेदवार उमेदवारे केले होते. समाजवादी पक्षाने १४, मनसेने ३८, लोकजनशक्तीने ०५, आणि मुस्लिम लीगने २ उमेदवार उमेदवारे केले होते. प्रादेशिक पक्षांच्या उमेदवारांची संख्या ८५ इतकी होती. इतर राजकीय पक्षांमध्ये भारिप बहुजन महासंघाने सर्वाधिक ३५ उमेदवार निवडणूकीच्या रिणगात उतरविले होते. शेतकरी कामगार पक्षाचा एक उमेदवार निवडणूक स्पर्धेत होता. स्थानिक पक्ष असलेल्या अकोला

विकास आघाडीने १३ तर युडीएफने १२ उमेदवार उमेदवारे केले होते. रिपाई (खो) खो), रिपाई (आं) रिपाई (आ) महाराष्ट्र स्वाभिमान काँग्रेस आणि स्वाभिमान काँग्रेस पक्षाने लढविलेल्या जागा अनुक्रमे ११, ४, ३ आणि ६ इतक्या होत्या. इतर राजकीय पक्षांच्या निवडणूकीतील उमेदवारांची संख्या ७६ इतकी होती. अशाप्रकारे नामांकन दाखल करणाऱ्या उमेदवारांची संख्या एक हजाराच्या वर असली तरी प्रत्यक्ष निवडणूकीत सहभागी झालेल्या उमेदवारांची संख्या ५१७ इतकी होती.

### २) पक्षांची आघाड्या व जागांचे वितरण :

निवडणूक स्पर्धेत सहभागी झालेल्या राजकीय पक्षांपैकी काही प्रमुख राजकीय पक्षांनी आघाडी करून निवडणूक लढविली होती. यामध्ये काँग्रेस व राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्षाची आघाडी, भाजप व शिवसेनेची युती, डाव्या पक्षांची लोकशाही आघाडी आणि भारिप बहुजन महासंघाच्या पुढाकाराखाली स्थापन झालेली संयुक्त विकास आघाडी यांचा समावेश होतो. काँग्रेस व राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्षांच्या आघाडीमध्ये इतर दुसऱ्या कोणताही पक्ष सहभागी नव्हता. भाजप व शिवसेनेच्या युतीमध्ये सुरुवातीला रिपाई, आठवले ला स्थान देण्यात येऊन काही जागा देण्याचे मान्य करण्यात आले असले तरी प्रत्यक्षात जागेच्या वितरणाच्या वेळी योग्य तो वाटा न मिळाल्यामुळे रिपाईने महायुतीतून अंग काढून घेतले होते. डाव्या लोकशाही





ठरल्याप्रमाणे आढळत नव्हती. याचे प्रमुख कारण म्हणजे ज्या उमेदवारांचे नामांकन रद्द झाले होते त्यामध्ये आघाड्यातील घटक पक्षांच्या अनेक उमेदवारांचा समावेश होता.

### ३) आरक्षणाची स्थिती:

२०१२ च्या निवडणुकीच्या वेळी निवडून द्यावयाच्या जागांची संख्या ७३ होती. यामध्ये आरक्षित जागांची संख्या ५१ व अनारक्षित जागांची संख्या २२ होती. आरक्षित असलेल्या एकूण ५१ जागांमध्ये महिलांच्या आरक्षित जागांचाही समावेश होता. महिलांसाठी आरक्षित असलेल्या जागांची संख्या ३७ होती. यामध्ये अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती, नागरिकांचा मागास प्रवर्ग व सर्वसाधारण आरक्षित जागांचा समावेश होता. उपरोक्त चारही प्रकारांमध्ये आरक्षित असलेल्या जागांची संख्या अनुक्रमे ०३, ०१, १० व २३ इतकी होती. अशाप्रकारे महिलांसाठी आरक्षित असलेल्या एकूण जागांची संख्या ३७ होती. महिलांना स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये ५० टक्के आरक्षण दिल्यामुळे महिलांच्या आरक्षित जागांमध्ये अशी वाढ झाली होती. आरक्षित असलेल्या एकूण ५१ जागांमध्ये महिलांसाठी आरक्षित असलेल्या जागा (३७) सोडून आरक्षित असलेल्या जागांची संख्या १४ होती. यामध्ये अनुसूचित जातीसाठी ०३, अनुसूचित जमातीसाठी ०१ व नागरिकांच्या मागास प्रवर्गासाठी १० जागा आरक्षित होत्या. आरक्षित असलेल्या एकूण ५१ जागांमध्ये अनुसूचित जाती, अनुसूचित जमाती व नागरिकांच्या मागास प्रवर्गासाठी आरक्षित असलेल्या एकूण जागांची संख्या (उपरोक्त तीनही प्रकरणातील महिलांच्या आरक्षित जागांसह) २८ इतकी होती.

### ४) निवडणूक निकालाचे विश्लेषण व निष्कर्ष:

सन २०१२ मध्ये संपन्न झालेली महापालिकेची तीसरी सार्वत्रिक निवडणूक नवीन प्रभाग पध्दतीने झाली होती. पूर्वीच्या २००७ च्या निवडणुकीच्यावेळी असलेल्या वाडांचे रूपांतर प्रभागामध्ये करण्यात आले. असे करताना साधारणपणे दोन वाडांचा मिळून एक प्रभाग तयार करण्यात आला. महापालिका निवडणुकीमध्ये निवडून द्यावयाच्या एकूण ७३ जागांसाठी ३६ प्रभाग तयार करण्यात आले. त्यापैकी एक प्रभाग (प्रभाग क्रमांक २७) असा होता ज्यामध्ये तीन उमेदवार निवडून द्यावयाचे होते. उर्वरित सर्व प्रभागातून प्रत्येकी दोन उमेदवार निवडून द्यावयाचे होते. अशाप्रकारे ३६ प्रभागातून निवडून द्यावयाच्या एकूण ७३ जागांसाठी निवडणूक संपन्न झाली. निवडणुकीच्या निकालासंबंधीची स्थिती विस्तृतपणे विश्लेषित करण्यात आली आहे.

### अ) मतदार व मतदान:

२०१२ च्या तीसऱ्या सार्वत्रिक निवडणुकीच्या वेळी एकूण मतदारांची संख्या ३,४९,५३६ इतकी होती. यामध्ये महिला मतदारांची संख्या १,६८,३५२ व पुरुष मतदारांची संख्या १,८१,१८४ होती. प्रत्यक्षात मतदान करणाऱ्या मतदारांची संख्या १,९६,०८८ इतकी होती. यामध्ये ९१,०७३ महिला व १,०५,०१५ पुरुष मतदार होते. मतदानाचे प्रमाण ५६.१० टक्के होते.

मतदानासाठी एकूण मतदान केंद्रांची संख्या ४२३ होती. त्यापैकी १८३ मतदान केंद्र संवेदनशील होते. निवडणुकीच्या कामासाठी लागलेल्या अधिकारी व कर्मचाऱ्यांची संख्या २,२०० होती. मतदानाच्या सोईसाठी एकूण ३६ प्रभागांचे रूपांतर ६ विभागामध्ये करण्यात आले होते. पहिल्या विभागात मतदान करणाऱ्या मतदारांची संख्या ३२,३३५ होती ज्यामध्ये १५,१०६ महिला व १७,२२९ पुरुष मतदार होते. दुसऱ्या विभागामध्ये मतदान करणाऱ्या एकूण मतदारांची संख्या ३१,१७४ होती ज्यामध्ये १४,२८३ महिला व १६,८९१ पुरुष मतदार होते. तिसऱ्या विभागामध्ये मतदान करणाऱ्या मतदारांची संख्या ३१,०३९ होती ज्यामध्ये १४,६९९ महिला व १६,३४० पुरुष मतदार होते. चौथ्या विभागामध्ये मतदान करणाऱ्या मतदारांची संख्या ३४,७२९ होती ज्यामध्ये १६,३२४ महिला व १८,४०५ पुरुष मतदार होते. पाचव्या विभागामध्ये मतदान करणाऱ्या मतदारांची संख्या ३४,११२ होती ज्यामध्ये १५,६१२ महिला व १८,५०० पुरुष मतदार होते. सहाव्या विभागामध्ये मतदान करणाऱ्या एकूण मतदारांची संख्या ३२,६९९ होती. ज्यामध्ये १५,०४९ महिला व १७,६५० पुरुष मतदारांचा समावेश होता. उपरोक्त सहाही विभागामध्ये झालेल्या मतदानाचे प्रमाण अनुक्रमे ५५.९०, ५५.०२, ४९.९३, ५८.०१, ५९.०५ व ५८.२१ इतके होते. सर्वात जास्त मतदान पाचव्या विभागामध्ये (५९.०५) तर सर्वात कमी मतदान तीसऱ्या विभागामध्ये (४९.९३) झाले होते (ब) राजकीय पक्षांची कामगिरी.

अकोला महापालिकेच्या सन २०१२ मध्ये झालेल्या निवडणुकीमध्ये एकूण १९ राजकीय पक्षांनी सहभाग घेतला असला तरी सहभागी राजकीय पक्षांपैकी निम्मे राजकीय पक्ष असे होते ज्यांना एकही जागा प्राप्त करता आली नव्हती. यामध्ये बसप, भाक्य, रिपाई (आठवले) रिपाई (आं), रिपाई (खो), लोकजनशक्ती, मुस्लिम लिग, शेकाप, महाराष्ट्र स्वाभिमान काँग्रेस व स्वाभिमान काँग्रेस यांचा समावेश होतो. उर्वरित राजकीय पक्षांना जागा प्राप्त करण्यामध्ये यश मिळाले होते.



विजयासाठी उपयोगी सिध्द होतील असे मंचाच्या प्रवर्तकांना मनोमन वाटत असावे. प्रत्यक्षात त्याला फारसा प्रतिसाद मिळाला नाही आणि मंचाला फक्त दोन जागांवर समाधान मानावे लागले होते. तिसरा घटक पक्ष असलेल्या अकोला विकास आघाडीने १३ जागा लढवल्या होत्या. त्यापैकी २ जागा अकोला विकास आघाडीला मिळाल्या होत्या. महत्वाची गोष्ट म्हणजे अकोला विकास आघाडीच्या बतीने निवडणूक लढविणारे उमेदवार बहुतांशपणे भाजपचे बंडखोर सभासद होते. विशेष म्हणजे आघाडीचे निवडून आलेले दोन्ही सभासद पूर्वश्रमीचे भाजपचे असलेले विजय आवाल व त्यांची पत्नी सुनिता अग्रवाल एकप्रकारे भाजपचे बंडखोर सभासद होते. संयुक्त विकास आघाडीचा एक घटक पक्ष असलेल्या मुस्लीम लिगला एकही जागा जिंकता आली नव्हती. पुर्वीच्या निवडणूकीमध्ये मुस्लीम लिगला १ जागा मिळाली होती. अशाप्रकारे संयुक्त विकास आघाडीला फक्त ९ जागा मिळाल्या होत्या. निवडणूकीच्या आधी आघाडी व युतीला पर्याय म्हणून संयुक्त विकास आघाडीची स्थापना करित असल्याचे आघाडीतील प्रमुख पक्ष असलेल्या भारिपबमसंघे सर्वेसर्वा अॅड. प्रकाश आंबेडकरांनी सांगितले असले तरी प्रत्यक्षात तसे काही घडले नसल्याचे निवडणूक निकालावरून व संयुक्त विकास आघाडीला मिळालेल्या जागांवरून स्पष्ट झाले होते. डाव्या लोकशाही आघाडीचा प्रमुख घटक पक्ष असलेल्या समाजवादी पक्षाला एक जागा मिळाली होती. पुर्वीच्या निवडणूकीमध्ये समाजवादी पक्षाला दोन जागा मिळाल्या होत्या. आघाडीतील इतर कोणत्याही पक्षाला एकही जागा मिळविता आली नव्हती. भारतीय साम्यवादी पक्ष, शेतकरी कामगार पक्ष व रिपाई (आठवले) पक्षाला एकही जागा प्राप्त करता आली नव्हती. स्वतंत्रपणे निवडणूक लढविणाऱ्या महाराष्ट्र नवनिर्माण सेनेला फक्त एक जागा मिळाली होती. पुर्वीच्या निवडणूकीतरी पक्षाला एकच जागा मिळाली होती. ऑल इंडिया युनायटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (युडीएफ) ला दोन जागा मिळाल्या होत्या. स्वतंत्रपणे निवडणूक लढविणाऱ्या बसप व लोकजनशक्ती पक्षाला एकही जागा मिळाली नव्हती. महत्वाची बाब म्हणजे लोकजनशक्ती पक्षाला पुर्वीच्या निवडणूकीत दोन जागा मिळाल्या होत्या. महाराष्ट्र स्वाभिमान काँग्रेस, स्वाभिमान काँग्रेस, रिपाई (आं) व रिपाई (खोब्रागडे) पक्षाला एकही जागा मिळाली नव्हती. अशाप्रकारे निवडणूकीत सहभागी झालेल्या एकूण १९ राजकीय पक्षांपैकी १० राजकीय पक्ष असे होते ज्यांना एकही जागा मिळविणे शक्य झाले नव्हते. २०१२ च्या महापालिका

निवडणूकीमध्ये राजकीय पक्षांना मिळालेल्या जागांची स्थिती पुढील सारणीमध्ये दर्शविण्यात आली आहे. सारणी क्रमांक १ (६)

राजकीय पक्ष मिळालेल्या जागा :

काँग्रेस १८, भाजप १८, शिवसेना ०८, भारिपबहुजनमहासंघ ०७, राष्ट्रवादी काँग्रेस ०५, समाजवादी पक्ष ०५, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ०५, ऑल इंडिया युनायटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट ०२, अकोला विकास आघाडी ०२, २००७ च्या निवडणूकीमध्ये राजकीय पक्षांना मिळालेल्या जागांची स्थिती पुढील सारणीमध्ये दर्शविण्यात आली आहे.

सारणी क्रमांक : २(७) राजकीय पक्ष मिळालेल्या जागा :

काँग्रेस १९, राष्ट्रवादी काँग्रेस ११, भाजप ११, शिवसेना ०७, भारिप बहुजन महासंघ १०, मुस्लीम लिग ०५, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ०५, सेवयुलर पार्टी ०५, समाजवादी पक्ष ०२, लोकजनशक्ती ०२, आझाद हिंद काँग्रेस ०१,

क) जातीसंबंधीची स्थिती:

सन २०१२ मध्ये झालेल्या महापालिका निवडणूकीमध्ये जातीचा विचार करता एकूण २२ जातीचे उमेदवार निवडणूकीमध्ये विजयी झाले होते. यामध्ये मुस्लिम, मराठा - कुणबी, मराठा व मराठा-देशमुख, कलाल, शिंदी, धनगर, टाकलकार, कुंभार, ब्राम्हण, पंजाबी - शीख, गोंड, बौध्द, मारवाडी, गुजर, गोंसावी, भनगी, गवळी, साळी, तेली, मातंग, मारवाडी-ब्राम्हण व पवार क्षेत्रीय जातीचा समावेश होतो. उपरोक्त २३ जातींपैकी मुस्लीम जातीचे सर्वाधिक १८ उमेदवार विजयी झाले होते. यामध्ये बहुतांश उमेदवार विविध राजकीय पक्षाचे होते तर बोटार बोजण्याइतके अपक्ष उमेदवार होते. निवडणूकीमध्ये निवडून आलेल्या मुस्लीम जातीच्या १८ उमेदवारांपैकी ११ उमेदवार एकट्या काँग्रेस पक्षाचे होते. राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्षाचे २, युडीएफचे २, समाजवादी पक्षाचा १ व २ अपक्ष उमेदवार होते. मुस्लिम जातीच्या निवडून आलेल्या एकूण उमेदवारांपैकी काँग्रेस पक्षाशी संबंधित असलेल्या उमेदवारांचे प्रमाण सर्वात जास्त (६९.५०) होते. विशेष म्हणजे काँग्रेस पक्षाच्या निवडून आलेल्या उमेदवारांची संख्या सुध्दा १८ इतकी होती.

यावरून काँग्रेस पक्षाच्या निवडून आलेल्या उमेदवारांमध्ये जातीचा विचार करता मुस्लिम जातीच्या उमेदवारांचे प्रमाण

सर्वाधिक (६९.५०) असल्याचे स्पष्ट होते. मराठा-कुणबी जातीचे मुस्लिम जातीप्रमाणेच एकूण १८ उमेदवार विजयी झाले



आधुनिक भारतातील उदारमतवादी लोकशाही विचार



डॉ.बी.डी.खांडे  
राज्यशास्त्र विभागप्रमुख  
श्री शिवाजी महा. आकोट.

Received: 29/11/14 Reviewed: 01/12/14 Accepted: 03/12/14

RESEARCH PAPER IN POLITICAL SCIENCE

ABSTRACT

एकोनिसाव्या शतकात भारतात ज्या धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक वळखी सुरू झाल्या. त्यामुळे ब्रिटीश उदारमतवादाच्या प्रभाकतुन निर्माण झाल्या. त्यामुळे परंपरागत समाजव्यवस्था, मुलव्यवस्था, रुढी,परंपरा यांची नव्या संदर्भात फेरतपासणी व पुनर्मुल्यांकन करून त्यांची पुनर्मांडणी करण्यासाठी नव्या वळखी सुरू झाल्या व नव्या संघटना पुढे आल्या, प्रारंभी या प्रयत्नांचे स्वल्प धार्मिक व सामाजिक होते परंतु हळूहळू आर्थिक व राजकीय क्षेत्रातरी नवे विचार, नवे दृष्टीकोन पुढे आले व कासंतरामे त्याला व्यापक राष्ट्रवादी आशय प्राप्त झाला.

इंग्रजीतील - (Ideology) या शब्दापासून मराठीतील विचारप्रणाली हा शब्दप्रयोग आला आहे. Idea म्हणजे विचार आणि logy म्हणजे शास्त्र म्हणून विचारप्रणाली म्हणजे विचारांचे शास्त्र, असा विचारप्रणालीचा अर्थ आहे. जसे धार्मिक विचारप्रणाली, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक इत्यादी.

हेट्टिड अँडर या विचारकाराच्या मते विचारप्रणालीचा संबंध मनाच्या श्रद्धा, विश्वास यांच्याशी असतो.

पँडलफोर्ड आणि सिक्म यांनी "आर्थिक, सामाजिक राजकीय मूल्ये आणि उद्दिष्ट यांच्या संबंधीचे विचार आणि मूल्ये या विषयीची योजना राजकीय विचारप्रणाली होय." अशी व्याख्या केली आहे.

गॅरी के ब्राऊनिंग 'मानवी स्वभाव तसेच ऐतिहासिक विकास, याबाबतचे दृष्टिकोन विशद करणाऱ्या राजकीय कृतीच्या कार्यक्रमांचा ज्यात अंतर्भाव असतो अशा राजकीय शब्दांच्या संवासा राजकीय विचारप्रणाली म्हणतात.'

थोडक्यात राजकीय विचारप्रणालीचा संबंध मूल्ये उद्दिष्टे, श्रद्धा अशा घटकांशी असतो. राजकीय विचारप्रणाली दोन पातळीवर अस्तित्वात असते. एक मानसिक, नैतिक, आशावात्मक पातळी आणि दोन म्हणजे वर्तन, कृतीकार्यक्रम योजना यांची पातळी होय.

राजकीय विचार प्रणालीचे महत्त्व : विचारप्रणालीचे महत्त्व सर्वसामान्य लोकांना आणि राजकीय

नेत्यांनाही सिध्द झाले आहे. प्रत्येक राजकीय नेता आपले नेतृत्व स्विकारण्याजोगे बनवण्यासाठी विचारप्रणाली विकसीत करतो किंवा एखाद्या रुढ विचारप्रणालीला आत्मसात करून लोकांचे संघटन करतो. विचार प्रणालीचे मतशिक्षण करण्यासाठी प्रतिके, मिथिके, चिन्हे, घोषणा, आदर्श वाक्यप्रचार पुराणकथा इत्यादींचा वापर केला जातो. त्यातून भावनिक आश्वासन गुंजवून टाकले जाते.

रशियाचा क्रांतिकारी नेता लेनिन, चिनमधील क्रांतिकारी आणि एककाळचा सर्वेसर्वा माओ-त्से-तुंग यांनी साम्यवादी विचारप्रणाली अशा रीतीने लोकांच्या मळी उतरवली पं. नेहरु, फ्रिटसर, नुसोलिनी, इंदिरा गांधी, जयप्रकाश नारायण अशा अनेक बलवानिकेत नेत्यांनी आपल्या विचारांनी, कार्यशैलींनी लोकांना मंत्रमुग्ध केले होते. बँटकिसा या अभ्यासकाचा मते विकसशील देशांसाठी विचारप्रणालीचे विशेष महत्त्व व स्थान आहे. साम्राज्याच्या जोखडातून मुक्त होण्यासाठी या देशांनी उदारमतवादी लोकशाही विचार प्रणालीचे स्वातंत्र्य व आदोलन उभारले.

भारतासह आशिया व आफ्रिका खंडातील अनेक देशांमध्ये या दृष्टीने विचारप्रणालीने मोलाची भर घातली आहे. आधुनिकीकरण, धर्मनिरपेक्षवाद जापतिकीकरण यांचा रवीकार या देशांनी केला आहे.

उदारमतवाद :-

औद्योगिक क्रांतीनंतर इंग्लंडमध्ये उदारमतवादाची प्रगती झाली आणि त्या नंतर ही विचारप्रणाली

तत्चे विशद करुन प्रतिनिधीक शासनाच्या उदारणीत विभिन्न मार्ग सुचविण्यातही उदारमतवादाने महत्त्वपूर्ण भूमिका पार पाडली. कामगारांचा, उद्योजकांचा वर्ग व नव्याने पुढे आलेला मध्यमवर्ग या वर्गांची दखल उदारमतवादाने योग्य प्रकारे घेतली.

संदर्भ ग्रंथ सुची :-

- १) डॉ. भोळे भास्कर लक्ष्मण, आधुनिक भारतातील राजकीय विचार, पिंपळापुरे अॅण्ड कं. पब्लिशर्स, नागपूर - २००३.
- २) डॉ. दाते डॉ. डोबळे, प्रमुख राजकीय विचारप्रवाही, विद्या बुक्स पब्लिशर्स औरंगपुरा, औरंगबाद-२००९.
- ३) देवगांधाकर श.गो. राजकीय विचारवंत (पश्चिमात्य आणि भारतीय) श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर - २००७.



Approved by DARS Training & Research Institute, Approved. Reg. No. 2017/30012  
 Recommended by Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. Reg. No. 3/2012  
 Financial Assistant of Indian Council of Social Science Research, Mumbai. ICSSR/2016/4308

Peer Reviewed Journal / ISSN 0975-690

# Decision and Action Research JOURNAL

Inter disciplinary Journal

# DARJ



- |  |  |
|--|--|
| ✓ Comparative Statement of Encyclopa.....    | ✓ मानवचिकित्सा एवं महिलाओंकी वर्तमान स्थिति        |
| ✓ Role Of Electronic Media For Human ....    | ✓ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरके सामाजिक विचार            |
| ✓ Right to Privacy in India....              | ✓ महात्माजिंदर विरोधी राष्ट्रीय चळवळ आणि .....     |
| ✓ 'Rule of Law', Its Supremacy in India..... | ✓ वैवाहिक जीवनमौलिक सम्मन्धन उदाहरण                |
| ✓ The Fractured Black Psyche...              | ✓ इमर्जीविलक्षण - आदर्शग्राम                       |
| ✓ Role of motivation in Sports               | ✓ स्त्रीयुक्ती संघर्षाच्छा प्रस्नान केन्द्रियता... |
| ✓ R. K. Narayan: A Social Reformer           | ✓ स्वयंसेवकता चरित्रगत : संकल्पना प्र वैशि         |
|  | ✓ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि श्री उदा               |

Vol. No.09/2017/Issue No.1/Jan.-March 2017

Managing Editor- Dr.Subhash Gawal

INDEX

CONTENTS

1. Comparative Statement of Encyclopa.....	.....Dr.Savitri M. Kene	01
2. Role Of Electronic Media For Human ....	.....Dr.Rakesh A. Badgerje	05
3. Right to Privacy in India.....	.....D.H.Lakhande	10
4. 'Rule of Law', Its Supremacy in India.....	.....Dr. P. S. Deshpande	19
5. The Fractured Black Psyche...	.....Dr.Vaasha S. Gowande	26
6. Role of motivation in Sports	.....Dr. Saugata Naha	33
7. R. K. Nazayan ; A Social Reformer	.....Ms. Dr. Poochandi Thakare	38
8. मानवाधिकार एवं महिलाओंकी वर्तमान स्थिती	.....प्र. प्रशांत भा. खेडकर	42
9. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे सामाजिक विचार	.....डॉ. ए. आ. पुण्याली	48
10. समाहृतवाद विरोधी राष्ट्रीय चळवळ आणि .....	.....श्रीराम निराम	52
11. वैवाहिक जीवनातील समस्या व उपाय	.....प्र. शमली जा. विपदे	59
12. ग्रामगीताप्रणित - आदर्शग्राम	.....प्र. डॉ. अविनाश स. घोषे	67
13. स्त्रीमुक्ती संघर्षाच्या प्रेरनांना केन्द्रस्थानी.....	.....प्र. डॉ. शोभा शेळडे	76
14. स्वयंसाहाय्यता बचतगट : संकल्पना व वैशिष्ट्ये	.....प्र. दिनेश भा. खेरे	82
15. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि स्त्री उत्थान	.....प्र. प्रकाश भा. पावतळणे	88

Abstract  
branches  
alphabeti  
informati  
the librar  
help seie  
study to  
education  
The stud  
Introdu  
of knowl  
encycloq  
modern  
a good n  
towards  
adopted  
speciali  
anythin  
such





‘मनुष्याची वेगळी शिवाय राहू नये.’”

‘तं गांधी भगती झाली पाहिले खीर्यांना प्रगती पासून रोखणे म्हणजे समाजाच्या बाबीत विडक घालण्या सारखेच आहे. असे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे ठाम मत होते. २० जुलै १९४२ रोजी नागपुर येथे आयोजित ऑल इंडिया विटरेड क्वासेस कॉन्फे काँग्रेसस मध्ये महिलेना उद्देशुन केलेल्या भाषणात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, “खीर्यांनी प्रगती ज्या प्रमाणात झाली असेल त्या बळन एखाद्या मनुष्याची प्रगती मी मोजित असते.” मानवाची प्रगती करावयाची असेल तर त्यासाठी योग्य शैक्षणिक तयारी पावणे गरजेचे आहे. शिब्याणुपुढेच मनुष्य शहाळा होते आणि त्याच्या मते वागूची येथे आणि वागून झालेली ब्रह्मती अज्याच व भरतारचा विरुद्ध पेटून उठते व संपूर्ण कायदास संजव होते म्हणुन डॉ. बाबासाहेब या बंडक तऱ्शेगत की, शिब्याण हे वापनीचे दुष आहे. जो ते प्रामन करीत तो म्हणुन, किताय पाहणार नाही. शिब्याणाची दारे की पुरुषांना खुली झाली नाही. डॉ.बाबासाहेब शिब्याणासाठी पुढाकार घेतला पाहिले. पुढची पिढी वर सुपायवाची असेल तर की शिब्याण वा अरुम पावत आहे या संदर्भात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, “पुढची वापल्या पुढीना ही शिब्याण दिले पाहिले. ज्ञान आणि विद्या या गोष्टी कायते पुढाणाचीच नाही. त्या खीर्याना ही आवश्यक आहे. ही गोष्ट आपल्या कुर्ब्यांना ही ओळखली होती नाहीतर जे जे लोक पलट्यात राहिले त्या त्या लोकांनी आपल्या पुढीना जे शिक्षण दिले ते दिले नसते. छाण खरी मारी ही गोष्ट घ्यानात अजून साधली पुढील पिढी वर पुढील सुपायवाची असेल तर पुढची मुलीना शिब्याण किंवा शिवाय राहू नका.”

‘ती वाच्यसाहेब आंबेडकरांनी प्रौढ शिवाय पद्धतीचे सारथन केले आहे. की १९४२ ही वेगळी संसाराकरी राखाची दीन वाक्ये आहे. त्याच्या मध्ये समता असली पाहिले. खीर्यांना समाजाचा दर्जा कुटुंबामध्ये देण्यात आला पाहिले असे त्यांचे स्पष्ट मत होते. ३० जुलै १९४२ च्या भाषणात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, “ज्या बंधनकाराची वार्डे करू नका. राय झालेल्या मुलीने खीर्याची शैरी म्हणुन त्याच्या

प्रत्येक कार्यात मनुष्याची शिवाय, मात्र गुलापा सारखे वागण्यास संधी राहो तीने नकार द्यावा व समतेसाठी आग्रह घ्यावा.”

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी आपल्या संपूर्ण आयुष्यात विविध विषयांना अनुसरून आपले कार्य केले. संविधान निर्मिती, असभ्यता निवारण, सामाजिक सुधारणा, धार्मिक चळवळी, राजकीय पक्षाची बांधणी आणि विविध शिब्यायंत्र लिखान अशा बहुलकी कार्यांवर आपली छाप पाडली. परंतु असे कार्य असतांना की कल्याणाचा वसा मात्र त्यांनी सता कायम ठेवला त्याचाच एक भाग म्हणुन भारतीय समाजात खारी वर्ग चालत आलेली की पुरुष विषमता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारतीय संविधानाच्या स्वरूपात नष्ट केली. कायद्याने की पुरुषांना समान स्थान प्राप्त झाले परंतु अनुन ही भारतीय समाजात हिंदू धर्माचे खीर्यांना समानता नकारली होती. त्यासाठी हिंदू कोड चीन मांडून खीर्यांना मानाचे स्थान मिळवून देखावा प्रयत्न केला. हिंदू कोड चीनमध्ये असलेली पटमनेट द्विभार्य प्रतिबंध या सारख्या कल्याणा विरोधकांनी वेळा विवाय बन्धितवे वेळा त्यांचा समाचार घेताना डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर २० सप्टेंबर १९५१ रोजी त्यांना उत्तर देताना म्हणतात की, “अजून सुधारणेच्या युगात खीर्यांना समान शक घावला तुम्ही विरोध का करता? खीर्यांना श्रुटेरीत वाटा देण्यास मजुन ही नकार दिला नाही. मात्र तुम्ही का देता.” खीर्यांच्या उत्थानासाठी बाबासाहेब एक्टचे संसदेंत लढत राहिले परंतु संसदेंत सज सजे परंतु या बिल्लील केवळ चारच कलागे मंजूर झाली. त्यापुढे अत्यंत दुःखी व निराशा होवून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी २७ सप्टेंबर १९५१ रोजी आपल्या कायदा मंत्री पदाला राजीनामा दिला. राजीनामा दिल्या नंतर काढण्यात आलेल्या निवेदनात हिंदू कोड चीनच्या संदर्भात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात की, “जगां वर्ग मध्ये व रिंगा रिंगा मध्ये असलेली शिब्यता हा हिंदू समाजाचा जो आत्मा आहे. तीला सध्या न करता आणि आर्थिक प्रसा संबंधी विधी शिब्याण संमत करीत जाणे ही आमच्या संविधानाची धड्डा आहे. घालीच्या उकीरडवागार राजवाडा बांधण्या सारखे आहे. एवढे म्हणूच ही हिंदू कोडला दिले होते. म्हणुनच माझे मतभेद असतानाही मी येथे राहिले.”



मार्गा प्रकरे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी आपल्या संपूर्ण आयुष्यात श्री कायदेचे वर्ण करून सविधान कर्तव्येचे समानता, त्याच, सामाजिक दर्जा व समानता अशा अनेक संघांचा प्रयत्न केला. बाबासाहेबांनी केलेल्या कर्तव्यांचा परिणाम आजही अतिशयच यशस्वी प्रमाणात झालेला दिसतो. भारतात रिवाज्या आघारावर हजारे वर्षे सौभाग्य अन्वय, अत्याचार झालेले व आर्थिक काही प्रमाणात होतात दिवस शेतकरी वर्गात जाडही धार्मिक लढी व प्रशासकांका मानवी मानावर दिवस येतो. कात म्हातारी व याच पंचायती या सराख्या पंचायतीमध्ये आर्थिक सौभाग्य अन्वय, अत्याचार होतच आहे. बलात्काराच्या, हुंडाबळीच्या घटना आजही घडताना आढळत आहेत. परंतु त्याच सोबत या अन्वय, अत्याचारा विरुद्ध आघात उद्विग्नान्या घडताना होतच दिसते आणि निमित्त होत आहे. त्यामुळे आज बऱ्याच प्रमाणात चित्र बदलतच दिसते.

एखाद्यात आज सौभाग्य सर्वत्र क्षेत्रात आपणस प्रख्यातशा देखील पुढेच दिवस होतच. आज असे सौभाग्य क्षेत्र उरले नाही की, ज्या ठिकाणी सौभाग्य आढळतच येत राहिले. आपणाल्या काळात केवळ शिक्षकी पेशा व कार्यालयांत क्षेत्रातच आढळतच होतच. आज आपणाल्या, समाजसेवा, वैकींग, पोलीस प्रशासन, रेल्वे बालक, क्रीडात्मक इत्यादीक वैसात्मिक, संशोधन, सैन्य वा विविध क्षेत्रात आढळतच येतच. कात सौभाग्य सर्वत्र मिळाली की, त्या आपली पुष्टिका त्या त्या क्षेत्रात प्रमाणीतच पातच. सविधान दिवस येतच. राष्ट्रपती, पंतप्रधान, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रालय, राज्यपाल, अन्वय, अत्याचार, मारपीत, समाजकी, सराच अशी राज्यकीय घडे आज आपणाल्या सांघाळीत आहे. प्रख्यातशा बलात्कारांतच किनहुला त्यांच्याही पुढे आज सौभाग्य दिसतच येतच.

या सर्वत्र क्षेत्र डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी केलेल्या अत्यंत परिश्रमातच आपणाल्या सविधानात सौभाग्य कधीच केलेल्या समान संघीयता राष्ट्रदीनत्व आहे. त्यामुळे ही आपणाल्या डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान अनुत्तमीच असेच आहे. आपणाल्या सविधानातच त्यांच्या अत्यंतच केवळ ही उदात्तत्व नाही तर

मार्गा प्रकरे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी आपल्या संपूर्ण आयुष्यात श्री कायदेचे वर्ण करून सविधान कर्तव्येचे समानता, त्याच, सामाजिक दर्जा व समानता अशा अनेक संघांचा प्रयत्न केला. बाबासाहेबांनी केलेल्या कर्तव्यांचा परिणाम आजही अतिशयच यशस्वी प्रमाणात झालेला दिसतो. भारतात रिवाज्या आघारावर हजारे वर्षे सौभाग्य अन्वय, अत्याचार झालेले व आर्थिक काही प्रमाणात होतात दिवस शेतकरी वर्गात जाडही धार्मिक लढी व प्रशासकांका मानवी मानावर दिवस येतो. कात म्हातारी व याच पंचायती या सराख्या पंचायतीमध्ये आर्थिक सौभाग्य अन्वय, अत्याचार होतच आहे. बलात्काराच्या, हुंडाबळीच्या घटना आजही घडताना आढळत आहेत. परंतु त्याच सोबत या अन्वय, अत्याचारा विरुद्ध आघात उद्विग्नान्या घडताना होतच दिसते आणि निमित्त होत आहे. त्यामुळे आज बऱ्याच प्रमाणात चित्र बदलतच दिसते.

एखाद्यात आज सौभाग्य सर्वत्र क्षेत्रात आपणस प्रख्यातशा देखील पुढेच दिवस होतच. आज असे सौभाग्य क्षेत्र उरले नाही की, ज्या ठिकाणी सौभाग्य आढळतच येत राहिले. आपणाल्या काळात केवळ शिक्षकी पेशा व कार्यालयांत क्षेत्रातच आढळतच होतच. आज आपणाल्या, समाजसेवा, वैकींग, पोलीस प्रशासन, रेल्वे बालक, क्रीडात्मक इत्यादीक वैसात्मिक, संशोधन, सैन्य वा विविध क्षेत्रात आढळतच येतच. कात सौभाग्य सर्वत्र मिळाली की, त्या आपली पुष्टिका त्या त्या क्षेत्रात प्रमाणीतच पातच. सविधान दिवस येतच. राष्ट्रपती, पंतप्रधान, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रालय, राज्यपाल, अन्वय, अत्याचार, मारपीत, समाजकी, सराच अशी राज्यकीय घडे आज आपणाल्या सांघाळीत आहे. प्रख्यातशा बलात्कारांतच किनहुला त्यांच्याही पुढे आज सौभाग्य दिसतच येतच.

या सर्वत्र क्षेत्र डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी केलेल्या अत्यंत परिश्रमातच आपणाल्या सविधानात सौभाग्य कधीच केलेल्या समान संघीयता राष्ट्रदीनत्व आहे. त्यामुळे ही आपणाल्या डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान अनुत्तमीच असेच आहे. आपणाल्या सविधानातच त्यांच्या अत्यंतच केवळ ही उदात्तत्व नाही तर

**पंचवार्षिक वर्गासाठी व्हा !**

- दर्जा ही आपणाल्या, अत्याचार, संशोधकांचा वडातच आहे. ही पुढील आपणाल्या अत्याचार सर्वत्र सातत्या आचरतच.
- दर्जा वरिष्ठेच्या वा कौशल्य वडातच आपणाल्या शैक्षणिकी आचरतच आहे. सौभाग्य आहे आपणाल्या त्याच पंचवार्षिक वर्गासाठी व्हा.

पंचवार्षिक वर्गाची वडातचसाठी रु. १०००/- आणि संशोधकांची रु. १५००/-

Volume - I

**AOJ**  
**(Arts Oriented Journal)**  
(Multi - Lingual Bi- Annual)  
Special Issue for

ISSN 2395-0315

UGC Sponsored



**National Conference**



On  
**HUMAN RIGHTS**

8<sup>th</sup> October 2015

Organized by



Department of Political Science

**MAHATMA JYOTIBA FULE MAHAVIDYALAYA,**  
Amravati, Maharashtra, INDIA



## मानवाधिकार व समाज व्यवस्था

डॉ. व्ही.एच.भटकर,  
श्री. शिवाजी महाविद्यालय, अकोट

### प्रस्तावना:

१० डिसेंबर १९४८ रोजी ने मानवी हक्कांची सनद प्रसिद्ध केली. विनाशकारी अस्त्रांचा युद्धात बापर झाल्यामुळे निष्पाप लोकांचा केवळ बळीच जातो एवढे नसून वेगळ्या निष्पाप सुद्धा बाधित होतात. मुलाखतार जन्माला येणाऱ्या प्रत्येक जिन्याला आपले जीवन जगण्याचा अधिकार आहे. आपले जीवन संपविण्याचा, ते बाधित करण्याचा अधिकार कुणालाही नाही. समाजाचा घटक म्हणून प्रत्येकाला वांगले जीवन जगण्याचे बातारवरा व परिस्थिती निळावी, नरसंहार, शोषण इत्यादींना पुणे आळा घालता याच या हेतूने, जागृतीक बातारता, महाकाय विधास निर्माण करण्यासाठी केलेला प्रयत्न व त्यातून पुढे आलेली संकल्पना म्हणजेच मानवाधिकारांची संकल्पना होय. विकसीत, विकसनशिल व अधिकसीत अशा सर्व देशातील नागरिकांना आपल्या बांगल्या जीवनाची हानी निळावी हा उदात्त हेतू ठेवून मानवाधिकारांची जपयुक्त करण्याचा उपक्रम सुरु झाले.

लोकशाही राज्यांच्या युगामध्ये प्रत्येक देशातील नागरिकांना तेथील संविधानानुसार काही मुलभूत अधिकार दिलेले आहेत. असे अधिकार देशांना स्त्री-पुरुष किंवा जातीय, धार्मिक आधारे भेदभाव न करता असे अधिकार देण्यात आले. परंतु प्रत्येक देशातील समाजव्यवस्थेनुसार त्याची अंमलबजावणी किंवा बापर होतो आहे. मानवाधिकारांचे स्वरूप जगातील आहे. जगातील सर्व लोकांना ते सारखे लागू पाडवारे आहे. परंतु मानवाधिकारांचे हनन होणे धाबडलेले नाही.

### सामाजिक संदर्प-

स्त्री व मानवाधिकार - प्रत्येक देशातील समाज जीवन हे सारख्याच स्वरूपाचे दिसत नाही. विकसीत, विकसनशील व अतिकसीत देशातील मानवी जीवनमान, राहणीमान, समाजव्यवस्था या त फरक दिसते आहे. त्या देशाची आर्थिक स्थिती असे स्तर ठरविण्यात प्रथम स्थानी दिसते. त्यानंतर तेथील धर्म, जाती व इतिहास अशा समाज जीवनाला कारणीभूत ठरतो. परंतु शोषण, भ्रष्टाचार, हिंसाचार, दहशतवाद, नधलवाद, आतंकवाद, लैंगिक शोषण, गुन्हेगारी, सुपोषण, गर्भपात, महिला बरिल अत्याचार, निरक्षरता, बालनजुरी अशा अमानसिय घटना सार्वत्रिकपणे दिसून येतात. धार्मिकतेच्या आधारे स्त्रीयांना शिक्षणापासून वंचित करणे, त्यांना सुल व गुल एवढेच मर्यादित ठेवणे, त्यांचा फक्त उपयोग करून घेणे, त्यांच्या बापर करणे, दुस्खात्या आड राखण्यास पाग पाडवणे अशी स्थिती सर्वत्र आढळून येते, हे असे होणे म्हणजे स्त्रियांच्या मानवाधिकारांचे हनन आहेच आणि अधिकाधिक तंछा असणाऱ्या स्त्रियांना सामाजिक विकासापासून दुर ठेवणे म्हणजे कुणाच्याही हितार्थ नाहीच.

### बालहक्क व मानवाधिकार :

आजचा बालक हा उदात्त नागरिक आहे. परंतु बालवयातच त्याला सुजात, सुदृढ नागरिक बनवण्यापासून वंचित राहणे लागले तर देशाचे भविष्य फक्त असेल बाधी कल्पनाच न केलेली बरी. मुलें बालनजुरीमुळे शिक्षणापासून वंचित राहतात, बालकांचे लैंगिक शोषण, छानीच्या टिकाणी कात करणे, स्फोटक साहित्य बनविण्यास लावणे, कर्मठ धर्माधारे धडे देणे, जाती-पातीचा पगडा त्यांच्या मनावर धड

करणे हे अतिरिक्त घटक असून ते मानवाधिकारांचे हनन आहे.

आतंकवाद व मानवाधिकार - संपूर्ण जगाला आतंकवादाचा आळा आणणे पोहोचत आहे. आतंकवादी कृत्य करणाऱ्या, मानवी बाबत बनण्यास युष्कांना प्रेरित करणारे, आतंकवादासोबतच अकारण मारले जाणारे नगरिक बाध्याही मानवाधिकारांचे हनन होत असते. इस्लाम, हमारस ह्या हुर संघटना युष्क व स्त्रियांना आपल्या अधिकाऱ्यापासून वंचित करित आहेत.

शिक्षण हक्क व मानवाधिकार - शिक्षण केवळ साक्षरता वाढविणे एवढ्यापुरतेच मर्यादित आहे असे समजणे चुक आहे. गरिबीमुळे शिक्षण न देऊ शकणारे अनेक लोक आहेत. त्याशिवाय शिक्षणाचे बाजारीकरण झाल्यामुळे काही क्षेत्रात श्रीमंताची मरुदारी झाली. बुद्धीमानता व शिक्षण याचा जणू संबंधच राहिला नाही. हे एक मानवाधिकारांचे हनन आहे.

### राजकारण व मानवाधिकार :

आधुनिक युग हे लोकशाहीचे युग समजले जाते. प्रत्येक देशात लोकमताचे आधारे शासक निवडले जात आहेत. परंतु मतदान करण्यापूर्ताच लोकशाहीचा संबंध राहिलेला दिसतो. निवडणुका व पैसा हे सनिकृत्य बनल्यामुळे मते विकत घेणे, पैशाचे आश्रय देऊन मते निळाविणे नंतर भ्रष्टाचार व त्यामुळेच सत्ता ही श्रीमंताची मरुदारी बनलेली दिसते. हे सर्वसामान्य जनतेच्या मानवाधिकारांचे हनन आहे.

### निष्कर्ष:

संपूर्ण जगाला लोकशाहीचे युग आहे. पाछम च्या माध्यमातून मानवाधिकारांचे हनन रोखणारी जागृतीक संघटना निर्माण केलेली आहे. समाजसेवी संघटना मानवाधिकारांचे हनन विरोधात आवाज उठवत आहेत. शिक्षणाचा प्रसार होताना दिसतो, जाती भेद-धर्मभेद बाधित करणारे होताना दिसते आहे. स्त्रीयांना राजकीय क्षेत्रात अरक्षण दिले जात आहे. बालकांचे हक्क सुरक्षीत राखण्यास कायदे होताना दिसतात. भारतन कल्याणकारी योजनांचा स्थितार करताना दिसतात. परंतु मानवाधिकारांचे हनन धाबडलेले नाही. उलट ज्यात दिवसेंदिवस वाढ होताना दिसते आहे. मानविय सन्तुष्टामध्ये सुरक्षिततेविषयी चीता वाढताना दिसते आहे.

उपाय - मानवाधिकार विषयक कायद्यांची अंमलबजावणी काटेकोरपणे झाली पाहीजे. धर्मभेद, जातीभेद पाळणारे, धर्मधत्ता वादविगारे यांचेच आंतरराष्ट्रीय कायद्यानुसार कायदाही झाली. पाहीजे. मानवी प्रतिष्ठा, सुरक्षितता वाढविली पाहीजे, मानविमुल्य राजकिने आवश्यक आहे. मनुष्य हक्क केन्ट्रिडु समजून त्याच्या विकासाची कायदे रचनी, बुद्धीनुसार शिक्षण प्रत्येकाला निळावेच पाहीजे. राजकारणात पैशाचा बापर होणारच नाही अशी निवडणुका व्यवस्था निर्माण करावी, बालहक्क सुरक्षित राखण्यास कठोर कायदे रचणे, संपूर्ण जगाला न्यायपुर्ण वातावरण निर्माण करावे. प्रत्येकाने मानवाधिकारांचे पालन मनापासून करावे.

### संदर्भ ग्रंथ :

- १) मानवाधिकार व महिला - राजपाल सिंह
- २) मानवीहक्क व समाज - प्रा. भारते, निराली प्रकाशन
- ३) यशवंतन - महिला व बालविकास विभाग, मुंबई

All men are born free  
but every where they are in chains.

**J.J. Roussau**



**ISBN 978-81-931025-3-4**

Published by :

Dr. Santoshrao Thakare, Principal, for Research Centre for Humanities , Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, AMRAVATI.  
444 607 (M.S.) INDIA Printed at : Rico resography Machine College Amravati. Cover Page : Vaishnavi Printers, Amravati.



क्षण करायचे  
गरीकने ती  
त्रिजे. आपण  
ना इतरांच्या  
दिले पाहीजे.  
पला पाहीजे.

तत्व निर्माण

सुधारणपला

भासाटी त्यांना

भासाटी

दत्त सुधारता

र महिलांच्या  
त्यांचे संरक्षण

री वशा एवं विशा

वंधार ओमेगा

एवं मानवाधिकार

एवं मानवाधिकार

नवाधिकार मार्क

## मानवाधिकार व व्यक्ती विकास

बी. डी. खाडे  
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख  
श्री. शिवाजी महा. आकोट

सारांश

संयुक्त राष्ट्राने मानवी हक्कांच्या संरक्षणाकरीता व व्यक्तीच्या सर्वांगीन विकासाकरिता "आंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार घोषणा" स्थापना केली आहे. संयुक्त राष्ट्रांच्या विविध मंडळाद्वारे विविध राज्यांची पाठणी करून मानवी हक्कांसंबंधीच्या समस्यांबाबत ही मंडळे आपला अहवाल वा अहवाल सादर करतात. त्या अहवालावर वर्षा होतून उपयुक्त सुचविले जाऊत. मानवी हक्कांच्या संवर्धनाची व व्यक्ती विकासाची जबाबदारी युनोच्या अंगार आहे. आर्थिक, सामाजिक मंडळे मानवी मुल्यांची जबाबदारी पार पाडत असते. तसेच नवव्यवहारे मुलांच्या आरोग्याची संरक्षणाची जबाबदारी पार पाडती जाते. अशा प्रकारे या विविध अंगाद्वारे मानवी अधिकार-यांच्या संरक्षण व संवर्धनात व व्यक्तीविकासाच्या प्रकाशात बरोच यश प्राप्त झाले आहे.

मानव अधिकार' या शब्दामध्ये दोन शब्दांचा समावेश आहे. मानव + अधिकार यासाठी मानव अधिकार या शब्दाला पुर्णपणे समजण्यासाठी आपल्या अधिकार या शब्दाला पुर्णपणे जाणने महत्त्वाचे आहे. हेराल्ड लास्की यांच्या मते "मानव अधिकार अशी परिस्थिती असते की, त्याच्या शिवाय व्यक्ती आपला सर्वांगीन विकास करू शकत नाही". व्यक्तीच्या जिवनात अधिकार हे त्यांच्या सर्वांगीन विकासासाठी अत्यंत महत्त्वाचे आहेत.

मानवी हक्कांच्या जाणीवेने सर्वप्रथम इंग्लंडमध्ये १६८८ मध्ये रक्तविहीन क्रांती झाली. आणि मानसमध्ये व रक्षिण्यात रक्तरंजीत क्रांती झाली. ईश्वराचा अंश मानल्या गेलेल्या राज्याच्या हक्कांना मर्यादीत करण्याचा प्रयत्न झाला. स्वातंत्र्य, समता, बंधुता व तत्व याकडे लक्ष वेधल्या गेले. इ.स. १२१५ मध्ये इंग्लंडमध्ये मॅग्नाकार्टा स्थिरकृत झाला. ते जगातील पहिले लिखित मानवी अधिकार पत्र होते. हे पत्र म्हणजे ब्रिटीश राजा व प्रजा यात झालेला करार होता.

मानव इतिहासात व्यक्तीची प्रतिष्ठा ही सर्वस्थानी, सर्वकाळी सर्वोच्च मानून व्यक्ती आणि समान संबंध परिष्कृत करण्यात आले आहे. ते अधिकार व्यक्तीला जन्मतःच प्राप्त होतात म्हणून त्याला जन्मसिद्ध हक्क म्हणूनही ओळखले जातात. म्हणून हक्क आणि व्यक्ती यांना परस्परापासून वेगळे करता येत नाही. या हक्कांना वैश्विक मान्यता देखील आहे कारण सर्व मानव समाजासाठी ते अनिवार्य ठरतात.

ऐतिहासिक पार्श्वभूमी

त्रेकडो वर्षांपासून मानव म्हणून व्यक्तीला कोणते अधिकार असावेत आणि सरकारद्वारा ते कसे सन्मानित केले जावेत हा राजकीय विचाराचा विषय

घेतला तर त्याची पाळेमुळे ही ग्रीक आणि रोम कालीन इतिहासात आढळतात. स्टार्क तले त्यांनी मानव अधिकार हे नैसर्गिक आहेत असे मान्य केले होते. तीव्र परंपरा सॉक्रेटीस, प्लेटो, अरिस्टॉटल यांनीही स्विकारली होती. मध्ययुगात त्याचा अविष्कार थॉमस अॅक्वीनास, ह्युगो ग्रीरिअस यांच्या शिकविणीत आढळतो. इ.स. १६२८ मध्ये 'अधिकार याचिका १६८० ला बंदी प्रालयसीकरण कायदा, १६८९ चे अधिकार पत्र' १७७६ ची अमेरिकन स्वातंत्र्याची घोषणा, १७८९ चा फ्रेंच राज्यक्रांती नंतर फ्रान्सने मानवी अधिकाराला मान्यता दिली. इत्यादी सनवा म्हणजे मानवी अधिकाराच्या वृक्षाला फोफावण्यासाठी टाकलेले खतपाणीच ठरले.

१७ व्या व १८ व्या शतकातील वैज्ञानिक गोंध आणि वैश्विक क्षेत्रातील प्रगती आणि ज्ञानाच्या विविध क्षेत्रातील अविष्कार, मोटेक्सु बाल्टेअर, रुसी यांनी मांडलेली तर्कसंगत विचारसरणी, जॉन लॉकची उदारवादी विचारसरणी, यामुळे वैचारीक पार्श्वभूमी तयार होऊन १९१९ ला राष्ट्रसंघाची स्थापना झाली, ज्याद्वारे मानव अधिकाराला वैश्विक मान्यता मिळाली. दुसऱ्या महायुद्धानंतर १० डिसेंबर १९४८ ला दुसऱ्या विश्व मानव अधिकाराची घोषणा करण्यात आली.

प्राचीन भारत परंपरेमध्ये 'सत्य एक आहे' हे तत्व मान्य करण्यात आले होते. महाभारतात 'मानवापेक्षा सर्वश्रेष्ठ कोणीही नाही'. हे सुत्र आढळते. जैन तत्वज्ञानात व्यक्तीगत स्वातंत्र्यावर भर दिलेला आढळतो. प्राचीन विचारवंत धाणक्य 'अर्थशास्त्र' या ग्रंथात 'प्रजेच्या हितातच राज्याचे हित' असे संबोधित करते. सम्राट अशोक देखील मानवी सिध्दांताला मान्यता देऊन, मानवता, करुणा, प्रेम यावर भर देतो.

इष्टी, वाईट रुढी, परंपराविरुद्ध राजा राममोहन रॉय, स्वामी दयानंद सरस्वती, म. फुले, स्वामी विवेकानंद, डॉ. आंबेडकर इत्यादी. समाज सुधारकांनी मोठा संघर्ष केलेला दिसतो. १९२८ ला पंडीत नेहरुंनी कराचीत मांडलेल्या 'नेहरु रिपोर्ट' मध्ये मानव अधिकाराचा उल्लेख केला होता. त्यामुळे १९५० ला लागू झालेल्या भारतीय संविधानातील तिसऱ्या विभागात मुलभूत हक्कांचा समावेश करण्यात आला. मात्र १९४९ चा पोलीस कायदा, १९५८ चा रीनिची कायदा, १९७१ चा आंतरीक सुरक्षा अधिनियम व १९७४ चा सुरक्षा कायदा इत्यादींमुळे मानव अधिकाराचे दमन होतांना दिसते. मानव अधिकाराचे रक्षण व्हावे म्हणून

भारत सरकारने मागासवर्ग आयोग, अल्पसंख्यांक आयोग आणि १२ ऑक्टोबर १९९३ ला राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग स्थापन केला. या आयोगाचे वार्षिक अहवाल दरवर्षी संसदेच्या पटलावर ठेवले जातात.

मानव अधिकार परिषद

मानव अधिकारासंबंधी परिषदांमधून मानवाच्या प्रश्नांवर प्रकाश टाकला गेला.

१. व्हिएन्ना परिषद गुलामांच्या व्यक्तीमत्त्वाचा दर्जा व सन्मान संदर्भात चर्चा”

२. बर्लिन व हेग परिषद “मानवी व्यक्तिमत्त्वाचा दर्जा व सन्मान संदर्भात चर्चा”

३. “मानवी हक्क संबंध” मानवी हिताच्या संबंधी घोषणा ह्या सर्व संघटना मानवी हक्कांच्या दृष्टीने प्रेरक मानता येतील.

१९४६ मध्ये पार पडलेल्या ‘संयुक्त राष्ट्रांच्या मानव अधिकारांची सुची’चा स्पष्ट करून ठराव मांडला व परिषदेत ठराव पास होवून संयुक्त राष्ट्रांच्या सनदेच्या प्रस्तावनेत मानवी अधिकारांची घोषणा झाली व १० डिसेंबर १९४८ ला महासभेत ५८ राष्ट्रांनी त्यावर स्वाक्ष्य केले.

मानवी हक्कात समाविष्ट असणारे अधिकार

१. जिवनाचा सुरक्षिततेचा अधिकार.
  २. शिक्षणाचा अधिकार आणि कायद्यासमोर समानता.
  ३. धर्म चळवळीचा, संघटना करण्याचा तसेच सुचा / माहिती प्राप्त करण्याचा अधिकार.
  ४. राष्ट्रियत्वाचा अधिकार.
  ५. अनुकूल परिस्थितीत काम करण्याचा अधिकार
  ६. विवाह आणि कुटुंब करण्याचा अधिकार.
  ७. शारीरिक आणि कायदा स्वातंत्र्याचा अधिकार.
  ८. विश्रंतीचा, संस्कृतीच्या लाभाचा किंवा कला विकासाचा अधिकार.
  ९. मातृत्वाचा आदर, स्त्रियांना योग्य मानसन्मान, पती-पत्नी समानतेचा अधिकार.
- हा जाहीरनामा प्रत्येक राज्याला ते राज्य संयुक्त राष्ट्रसंघाचे सदस्य असो वा नसो लागू झाला. संयुक्त राष्ट्रसंघाने मानवी अधिकारांचा जाहीरनामा प्रत्येक राज्याला लागू करण्याचे मुख्य उद्दीष्ट म्हणजे कोणत्याही प्रकारे लिंग, वंश, भाषा यांचा भेद न करता सर्वांमध्ये मुलभूत स्वातंत्र्य आणि मानवी अधिकार या संबंधी आदर भावना वाढवीणे व त्याला प्रोत्साहन देणे.
- डॉ. रने फॅसीन १९६९ चे नोबल शांतता पुरस्कार विजेते आणि जागतिक मानवी अधिकार घोषणा पत्राच्या

मसुद्याचे लेखक यांचे मत होते की, मानवी अधिकार घोषणा पत्राने जगाच्या इतिहासाला वळण दिलेले आहे.

संदर्भ

१. नाटाणी प्रकाश नारायण, २००५ मानवाधिकार एवंगु महिलाए, स्टब लाईन पब्लिकेशन, जयपुर.
२. शर्मा श्रीमती मंजु, २००८ नारीशोसन और मानवाधिकार, राज पब्लिकेशन हाऊस, जयपुर.
३. सिंहाल एस. सी. २००६-०७ भारत की विदेश नीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आग्रा.
४. मल पुरण मानवाधिकार, २००३ सामाजिक न्याय और भारत का संविधान, पॉईन्टर पब्लिकेशन, जयपुर.
५. देवरे, विसपुते, निकुंम, २०१० भारतीय लोकशाही गणराज्य, प्रशांत पब्लिकेशन, जळगाव.
६. रायपुरकर वसंत २००६, आंतरराष्ट्रीय संबंध, श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपुर.







## निवडणूक प्रचारामध्ये वृत्तपत्रांची भूमिका

डॉ. व्ही. एच. भटकर  
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख  
श्री. शिवाजी महाविद्यालय, अकोट

प्रस्तावना -

भारतीय संविधानाचे कलम 19 नुसार आपण सर्व भारतीयांना स्वातंत्र्याचा अधिकार प्राप्त झाला. स्वातंत्र्याच्या अधिकारानुसार विचार, अभिव्यक्ती लेखन मुद्रण स्वातंत्र्य मिळालेले आहे. असे स्वातंत्र्य देत असताना त्यावरील बंधने कोणती आहेत हे समजणे अतिशय महत्त्वाचे आहे. आपल्या भाषण, लेखन या मुद्रणामधून कुणाचीही नाहक बदनामी होणार नाही, खोटे आरोप होणार नाहीत याची खबरदारी घेणे बंधनकारक आहे. ही बंधने पाळली तर प्रत्येकाला त्या स्वातंत्र्याचा उपभोग योग्यरित्या घेता येते. भारतीय संविधानानुसार जी सांसदीय शासन व्यवस्था स्विकारली त्यामध्ये कायदेमंडळ, कार्यकारी मंडळ व न्यायमंडळ हे प्रमुख लोकशाहीचे स्तंभ म्हणून स्विकारले आहेत. काळाच्या ओघात प्रसारमाध्यमे लोकशाहीचा चौथा स्तंभ बनलेले आहेत. संविधानात या चौथ्या स्तंभाचा उल्लेख नाही. परंतु स्वातंत्र्याच्या अधिकारांतर्गत मुद्रण, लेखन, भाषण स्वातंत्र्य दिले म्हणूनच वृत्तपत्रे, प्रसारमाध्यमे लोकशाहीचा चौथा स्तंभ बनू शकते. लोकशाही टिकवून ठेवण्यासाठी व तिला अधिकाधिक मजबूत करण्यासाठी असे स्वातंत्र्य पाहिजेच. निवडणुकीच्या माध्यमातून जनतेने आपले प्रतिनिधी लोकशाही पद्धतीने निवडावेत. राजकीय पक्षांनी आपला जाहीरनामा प्रसिद्ध करून निवडणुका लढवाव्यात. अशा या प्रतिनिधीक लोकशाहीला राजकीय पक्षांचे विचार, कार्य, कार्यक्रम, भूमिका तसेच उमेदवाराविषयीची सत्यता लोकांपर्यंत पोहोचविण्याचे कार्य वृत्तपत्रांना करावे लागते. तसेच स्तंभलेखनाचे, संपादनाचे माध्यमातून समाजाभिमुख वास्तव निस्वार्थपणे मांडावयाचे असते. त्यावरूनच लोकांचा राजकीय व्यवस्थेविषयीचा वैचारिक पाया मजबूत होत असतो व सोबतच लोकशाही शासन प्रगल्भ होत जाते. वृत्तपत्रांनी कोणत्याही पक्षाची बाधिलकी स्विकारू नये. परंतु अलिकडील काळात बहुतेक पक्षांच्या विचारांची, मालकीची वृत्तपत्रे निर्माण झाली. वृत्तपत्रांनी व्यावसायिकता स्विकारली व येथेच प्रसारमाध्यमांची भूमिका वादग्रस्त बनण्यास वाव मिळाला. निवडणुकीच्या काळात प्रसारमाध्यमांची ही वादग्रस्त भूमिका प्रकर्षाने जाणवते.

वृत्तपत्रांचे महत्त्व -

लोकशाही शासनामध्ये पारदर्शी व लोकाभिमुख शासनकारणार होण्यासाठी, आपले दुख व समस्या व्यवस्थेपर्यंत पोहोचविण्यासाठी पर्यायाने लोकशाहीच्या विकासासाठी वर्तमानपत्रे, वृत्तपत्रे व प्रसारमाध्यमांचे महत्त्व असते. भारतीय वृत्तपत्रांचा इतिहास पाहिल्यास ब्रिटीश साम्राज्यशाहीतील दडपशाही घोरण, अन्याय, अत्याचार, शोषण याविरुद्ध आवाज उठविण्यासाठी व नंतर स्वातंत्र्याची चळवळ उभारण्यासाठी वृत्तपत्रांनी प्रामाणिक भूमिका पार पाडलेली आहे. शासन कारभाराची धिकित्सा करून, लोकशाही मुख्य रूजविण्यात वृत्तपत्रांचे मोठे योगदान आहे. दुसऱ्या महायुद्धानंतर साम्राज्यवादाची समाप्ती होऊन भारतात लोकशाही शासन आले. आपले संविधान लागू झाले. पण हे



सर्व साकार होण्यासाठी वृत्तपत्रांनी मोठी जबाबदारी पार पाडलेली आहेत. भारतीय संविधान व भारतीय लोकशाही अस्तित्वात येण्यासाठी वृत्तपत्रांचे अस्तित्त्व होते. स्वातंत्र्य चळवळी करिता लोकांनी एकत्र करण्यासाठी वृत्तपत्रांनी मोठी जबाबदारी पार पाडली हा इतिहास आहे. स्वातंत्र्यानंतर लोकशाही वास्तवता लोकांचा प्रभाव राखण्यासाठी आपली भूमिका पार पाडावयाची आहे. पहिल्या सार्वत्रिक निवडणुकांपासून १९६७ पर्यंत फक्त एकाच पक्षाचे सरकार या देशात होते. त्यानंतरही बहुतांश निवडणुकांमध्ये लोकशाही प्रभाव राखण्यासाठी आपली भूमिका पार पाडावयाची आहे. १९६७ पर्यंत फक्त एकाच पक्षाची सत्ता सर्वत्र होती. त्यानंतर लोकशाही प्रभाव राखण्यासाठी आपली भूमिका पार पाडावयाची आहे. लोकशाहीचा अर्थ बदलत्या काळानुसार लोकांच्या अपेक्षांनुसार बदलत राहतो आहे. परंतु लोकांची ही वैचारिक प्रगल्भता व जागरूकता वाढत राहिली आहे. वृत्तपत्रांनी तत्त्वनिष्ठ, सत्यनिष्ठ, मूल्याधारीत लेखन व संपादन केले. लोकशाहीमुख्य पत्रकारिता केली आहे. शासन कारभाराची संपूर्ण माहिती खच वृत्तपत्रांनी समाजातील शेवटच्या घटकापर्यंत पोहोचविली आहे. लोकांच्या समस्या, आरोग्य, शिक्षण, अन्याय, अत्याचार यावरही वृत्तपत्रांनी आवाज उठविला आहे. नंतरच्या काळात वृत्तपत्रांची संख्याही वाढली. इलेक्ट्रॉनिक्स मिडीया, सोशल मिडीया अस्तित्त्वात आला. परंतु याही स्थितीमध्ये मुद्रित प्रसारमाध्यमे टिकून आहेत व जनतेचे प्रश्न मांडण्यासाठी आपली भूमिका पार पाडत आहेत. पत्र संख्या वाढली, सोबतच वृत्तपत्रांचीही संख्या वाढली आहे. काही वृत्तपत्रे काही पक्षांची मालकी असेलेले आहेत. हे मात्र लोकशाही तत्त्वांना कुठेतरी मारक ठरतात. लोकांचा आवाज बनून शासनाकडे अंकुश ठेवणे हीच वृत्तपत्रांची महत्त्वाची जबाबदारी आहे. त्याचमुळे लोकशाहीचा चौथा स्तंभ म्हणून वृत्तपत्रांचे महत्त्व आहे.

#### मुद्रित प्रसार माध्यमे व निवडणुक प्रचारांमधील भूमिका -

लोकशाहीमध्ये निवडणुकीच्या माध्यमातूनच लोकांचा राजकीय व्यवस्थेत सहभाग असतो. सांसदीय शासनाला अनुसरून लोकसंख्येच्या प्रमाणात मतदारसंघ निहाय प्रतिनिधी निवडले जातात. हेच प्रतिनिधी बहुमताच्या आधारे शासक ठरतात व अप्रत्यक्ष लोकशाहीचा शासनकारभार सुरू होतो. नागरिकांना प्राप्त झालेल्या मतदानाचे महत्त्व सर्वात मोठे आहे. भारतातील गरीबी, दारिद्र्य, निरक्षरता, जाती-धर्माची भ्रष्ट संख्या, राजकीय अज्ञान अशा सामाजिक वातावरणामध्ये निवडणुकांच्या माध्यमातून प्रतिनिधीची निवड करणे म्हणजे देशाचे भवितव्य ठरविणे होय. ज्यांच्या हाती देशाची धुरा द्यावयाची आहे अशा पक्षांच्या, उमेदवारांच्या विचारांची, कार्याची व पुढे करणाऱ्या वाटचालीची माहिती जनतेला माहित होणे आवश्यक आहे. वृत्तपत्रे हे असे माध्यम आहे की जे सर्वांपर्यंत पोहोचू शकते. म्हणून वृत्तपत्रांची भूमिका अतिशय मोलाची ठरते. वृत्तपत्रांनी निपक्ष भूमिका पार पाडणे अपेक्षित आहे. तसेच जाती, धर्म, पंथ, पक्ष भेद न बाळगता वास्तववादी लेखन करणे आवश्यक आहे. देशातील कोणत्याही घटनेचा वरवर विचार न करता किंवा कोणत्याही पक्षाचे हित न जोपासता सत्यता मांडणे आवश्यक आहे. अनेक नेते असे आहेत की ज्यांनी नैतिकता जोपासली, निस्वार्थ भावनेने जनसेवा केली. देशहिताचाच त्यांनी विचार केला. अशा नेत्यांचे कार्य इतकंच प्रेरणादायी आहे. वैचारिक मतभेद असतात पण जनहित व देशहित लक्षात घेऊनच शासनाने निर्णय घ्यावेत. जाती-पातीचे राजकारण न होता नितिमुल्यांची जोपासना व्हावी ह्याच विचारांनी प्रेरित होऊन वृत्तपत्रांनी आपली जबाबदारी निश्चितच पार पाडली आहे. लोकशाही जाणिवाना आकलन देण्याचे वृत्तपत्रांचे कार्य अविरत चालणे अपेक्षित आहे.

अतिकडील काळात इलेक्ट्रॉनिक्स मिडीया, सोशल मिडीयाचा वापर व प्रभाव भरपूर प्रमाणात वाढला आहे. पण तरीही वृत्तपत्रांनी आपले अस्तित्त्व अबाधित राखले आहे. परंतु चतुर्थमध्ये निवडणुक प्रचारात नेत्यांनी नैतिक मूल्य गुंडाळून ठेवली व वृत्तपत्रांनीही व्यावसायिक



■ Seminar Proceedings ■

वैचारिक बांधिलकी स्विकारून आपली निपक्ष भूमिका बदललेली दिसते. सध्याच्या निवडणुका लक्षात घेतल्यास सोशल इंजिनियरिंगचा वापर पक्ष करताना दिसतात. जाती धर्मावर आधारीत गणीत जुळवून प्रचारतंत्राचा वापर करतात. एकमेकांवर भाषणामधून खिखलफेक करतात. सत्तेत एकत्र असूनही एकमेकांवर टिका करताना दिसतात. प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री या पदाची गरिमा राखण्याचा विसर पडतो. व्यक्तिगत टिका, भ्रष्टाचारांचे आरोप करणे, जातीयतेचे, दहशत पसरविण्याचे आरोप करणे, विधानसभा निवडणुकीत प्रधानमंत्र्यांना एकेरी भाषेत उद्देशून बोलणे, पंतप्रधान म्हणजे देशाचा पंतप्रधान आहे हे विसरून प्रचारतंत्रे वापरणे हे सत्ताधारी व विरोधी पक्ष करताना दिसतात. अशा परिस्थितीत लोकांना जागृत करण्याचे कार्य वृत्तपत्रांनीच करावे, परंतु इलेक्ट्रॉनिक्स मिडीया प्रमाणेच मुद्रीत मिडीया सुद्धा केवळ यंवर मार्गणीवर भर देतांना दिसतात. कोणत्यातरी प्रक्षाची बाजू घेतांना दिसतात. पेडन्यूज घेतांना दिसतात. वृत्तपत्रांचा खूप वाढविण्यावर, टिआरपी वाढविण्यावर भर देण्यासाठी, भडकायू बातम्यांना प्राधान्य देतात. स्तंभलेखन पक्ष भावनेने प्रेरित असते. निवडणुकीच्या काळात वृत्तपत्रांनी लोकांना योग्य मार्गदर्शन केले पाहिजे. त्यासाठी वास्तववादी लेखन करून जनजागृती वाढवावी व जनतेला विचार करण्यास भाग पाडले पाहिजे. हीच निपक्ष, पारदर्शी व वास्तववादी भूमिका वृत्तपत्रांनी निवडणूक प्रचारा दरम्यानच्या काळात पार पाडावी.

निष्कर्ष -

भारतीय स्वातंत्र्य चळवळ काळात वृत्तपत्रांनी महत्त्वाची भूमिका पार पाडली. भारतीय स्वातंत्र्य प्राप्तीमध्ये जनजागृतीच्या माध्यमातून वृत्तपत्रांनीही आपली भूमिका पार पाडली. लोकशाही मजबूत करण्यात त्यांची भूमिका महत्त्वाची ठरली. लोकजागृती घडवून आणली. आजही वृत्तपत्रे लोकांच्या, शासनाच्या कार्याविषयीचा महत्त्वाचा दुवा आहेत. स्वर्घच्या युगातही वृत्तपत्रांचे अस्तित्व अबाधित आहे. राजकीय पक्षांच्या बदलत्या धोरण व विचारानुसार वृत्तपत्रांनीही व्यावसायिकात स्विकारल्याचे दिसते. दर्जेदार, मुल्याधारित, वास्तववादी, निपक्ष लेखन व संपादन ऐवजी काही प्रमाणात पक्षीय व वैचारिक बांधिलकी स्विकारल्याचे चित्र आहे. वृत्तपत्रांनी लोकजागृती पेशा व्यावसायिकतेला प्राधान्य दिले आहे.

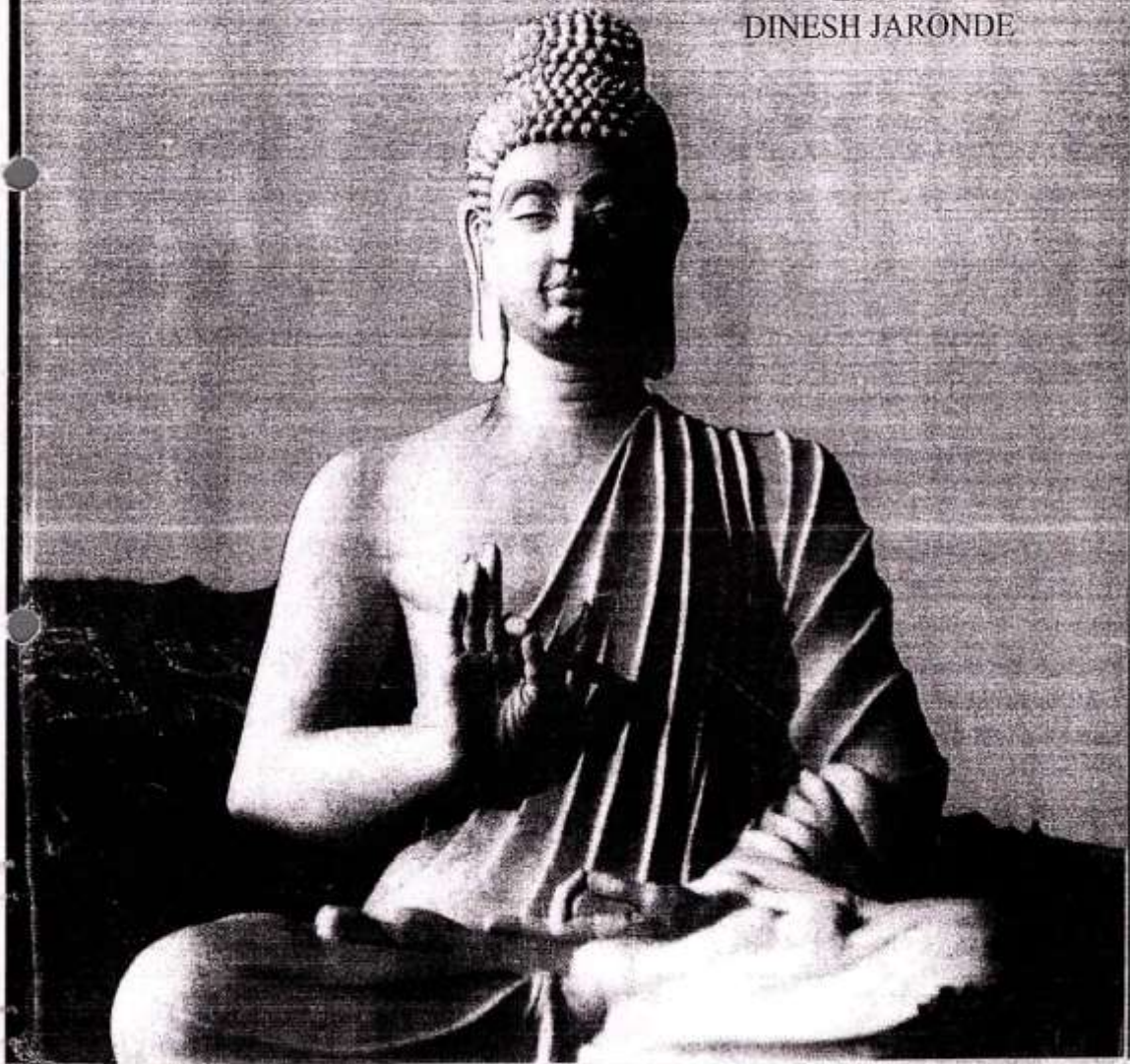
संदर्भ ग्रंथ -

1. पत्रकनरिता कायदे आणि नितीमूल्ये - न्या. नरेंद्र चपळगावकर.
2. भारतीय राज्यघटना आणि शासन व्यवहार - माधव साठे, डॉ. सुहास पळशिकर
3. भारताचे संविधान - दुसरी आवृत्ती १९८३
4. भारताची राज्यघटना - कॅ. सागर, व्ही. बी. पाटील.

# BUDDHIST PHILOSOPHY

## PRESENT SITUATION & IMPORTANCE

Editor  
DINESH JARONDE





मराठी विभाग

३७	बौद्ध धम्म ग्रंथि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारांतरण एक ऐतिहासिक क्रांती	डा.कु.श्रीमा भा.सुर्वशी	११२
३८	बौद्धधर्माचा विकास प्रणाली व आधुनिक शिक्षण प्रणाली	प्रफुल्ल महादेवराव अहिर	११५
३९	बुद्ध तत्वज्ञानातील विज्ञाननिष्ठ, बुद्धिप्रमाणवादी विचार प्रणालीने अश्लिल विस्वासा प्रदान केलेली मूल्ये	प्रा. साळवे सतिश शंकरराव	११८
४०	बुद्धांची शिक्षण- मानूस घडवणारी शिक्षणपध्दती	प्रा. सीमा प्रभाकर पुसकर	१२०
४१	बौद्ध तत्वज्ञानातील रवी समतेच्या विचारांचे ऐतिहासिक महत्त्व	डॉ. प्रा. पुण्या गांधकावड	१२३
४२	बौद्ध धर्म आणि वैश्विक शांती	प्रा.शिवाजी रा. तुपेकर	१२५
४३	बौद्ध तत्वज्ञान व मानवतावादी मूल्ये	प्रा.बाळाजी भारोतराव नरबाडे	१२८
४४	बुद्धांचे तत्वज्ञान आणि लोकशाही	प्रा.हरद विठ्ठल पाटील	१३१
४५	धम्म संकल्पनेचे मानवी जीवनशास्त्रातील महत्त्व	हाडेकर अनिल ज्ञानेश	१३३
४६	बौद्ध तत्वज्ञान आणि आधुनिक लोकशाही	प्रा.प्रफुल्ल भाऊराव पायवट	१३४
४७	बौद्धधम्म चळवळीस कम्युनिस्टांमार्गाने धोका	राजानंद तापडे	१३७
४८	बौद्ध तत्वज्ञान आणि संविधान	प्रा. शेषराव सलाराम तापडे	१४१
४९	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि बौद्ध धम्म	प्रा.डॉ.सी.यु.आर.पाटील	१४४
५०	बौद्ध तत्वज्ञान आणि वैज्ञानिक दृष्टिकोन	प्रा. उर्मिला महेंद्र हाडेकर	१४७
५१	भारतीय संविधानातील बौद्ध तत्वज्ञान	प्रा. प्रकाश वा. पानतावगे	१५०
५२	बौद्ध तत्वज्ञान व मानवतावादी मूल्ये	प्रा.अरविंद बा. पाटील	१५३
५३	बौद्धधम्म आणि आचरण	डॉ.सुषमा एस. प्रधान	१५६
५४	बौद्ध धम्म आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर	कु. सुषमा अंबवराव घाटे	१५८
५५	महिला समीकरणाने बौद्ध धर्माचे योगदान	प्रा. डॉ. सुरेश ल. पंडित	१६०
५६	विज्ञान आणि बुद्ध धम्म	प्रा. रजुत मे. तमाने, प्रा. नंदिशोर रकती	१६२
५७	तथागत गौतम बुद्धांचे चरित्र व शिक्षण	प्रा.डॉ. उमेश आर. घुमळे	१६४
५८	मिथिल प्रश्न : भारतीय संकल्पना मांडणारा वैश्विक ग्रंथ	प्रा. डॉ. अरुण सी. तांडे	१६६
५९	बौद्ध धम्म आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर	प्रा.महोदय उध्दवराव टिपले	१७०
६०	महिला समीकरणाने बौद्ध धर्माचे योगदान	प्रा. सी. सोमवंशी अल्का बा.	१७३
६१	बौद्ध तत्वज्ञान - एक अभ्यास	प्रा. जगदीश लच्छमन्ना जय्यार	१७५
६२	बौद्ध तत्वज्ञान व विज्ञानवाद	प्रा. अमितकुमार निरंजन दाऊडे	१७८
६३	बुद्ध तत्वज्ञान : नैतिकता	अनिता बापूराव सुर्वशी	१८०
६४	तथागत बुद्धांचा धम्म आणि त्यांचे नैतिक तत्वज्ञान	सोनोने जयश्री विठ्ठलराव	१८२
६५	बौद्ध तत्वज्ञान आणि महिला समीकरण	आद्यपाती गोविंदराव तिळगळे	१८४
६६	तथागत बुद्धांच्या तत्वज्ञानात उपमा व दृष्टीतांचे महत्त्व	प्रिती प्रकाश शिंदेगळे	१८६
६७	तथागत बुद्धांचे आर्थिक विषयावरील विचार	कांबळे पुरण नारायण	१८८
६८	बौद्ध तत्वज्ञान आणि भारतीय संविधान	बघाटे रामुल देवराव	१९०
६९	बौद्ध धम्म आणि आचरण	मातती सावरकर	१९३
७०	बुद्ध धम्माचा भारतीय राजनितीवर पडलेला प्रभाव	बनकर अलका शंकरराव	१९५
७१	तथागतांचा अष्टकलाप : प्रज्ञा अनुभूती ज्ञान	अशोक पुंडलिक इंगळे	१९७
७२	बुद्ध धम्माची प्रासंगिकता	बापमारे अस्मिता काशिनाथ	२०१
७३	बौद्ध तत्वज्ञान आणि महिला समीकरण	बदूरकर पंचशीला भीमराव	२०३
७४	बुद्ध तत्वज्ञान व धर्मवाद	बहिरव निर्मला बाळकृष्ण	२०५
७५	बौद्ध तत्वज्ञान आणि विपश्यना	डॉ. रजनी भिमराव गैडाम	२०७
७६	संविधानाचे उगमस्थान म्हणजेच तथागतांचा सारनाथ येथील धम्मचक्र परिवर्तनाचा उपदेश	प्रतिभा नामदेव मगरे	२०९

काळापासून गौतम बुद्धांनी परिसरातील घटनांचा बीरकसारीक अभ्यास करून त्यातील नेमके वैज्ञानिक तत्व मांडले प्रत्येक घटनेमागे काही ना काही कारण असते कोणतीही गोष्ट चमत्काराने किंवा आपोआप घडत नाही हे त्यांनी मांडले. ईश्वर आत्मा, स्वर्ग, नरक, भूत, भ्रानामती या सारख्या भ्रामक समजतीवर विष्वास न ठेवता चिकीत्सक विचार करून या गोष्टींमागे सत्य समजून घ्यावे अशी त्यांची समाजाकडून अपेक्षा होती आजच्या काळात माणसाचा विवके नष्ट होत आहे अराजकता उदासीनता, नैराश्य, अंधश्रद्धा यात वाढ होत आहे समाजाला स्व-या अर्थाने प्रगत करायचे असेल तर बुद्धांच्या तत्वज्ञानाची आजच्या काळात स्वीकारणे गरजेचे आहे.

**संदर्भ ग्रंथ :-**

- १) अब्दुलकर भिमराव रामजी (अनुवाद २०१३)  
बुद्ध आणि त्याचा धम्म डॉ. बाबासाहेब अब्दुलकर असोसिएशन  
ऑफ इन्व्हीनियर्स, नागपूर
- २) डॉ. गौतम मुन्शीलाल (२००३) बुद्धांचा मानवतेला संदेश,  
सिद्धार्थ गौतम शिल्लण व संस्कृती समिती, धनसारी, अलीगड  
१६८९/८३-८४
- ३) बा.गो. आपटे (२०१३) बौद्ध पर्व, समन्वय प्रकाशन कोल्हापूर
- ४) वैद्य, परशुराम लक्ष्मण (१९२७) बौद्ध धर्माचा अभ्युदय  
आणि प्रसार, प्राज्ञपाठशाळा मंडळ, वार्ड.
- ५) डॉ. कौशल्यधन, ज्ञानतिलोक, धर्मपाल लेडबीटर (१९५६)  
बुद्ध की शिक्षा, गौतम बुद्ध सेंटर, दिल्ली.

◆◆◆

## भारतीय संविधानातील बौद्ध तत्वज्ञान

प्रा. प्रकाश वा. पानतावणे  
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,  
श्री शिवाजी महाविद्यालय अकोट, वि. अकोला (महाराष्ट्र)

भारतीय संविधान हे जगातील सर्वोत्तम संविधान आहे असे म्हटले जाते. याचे कारण जगात अनेक देशांनी आपल्या देशाची शासन व्यवस्था चातविण्यासाठी संविधानाची निर्मिती केली. अमेरिका, फ्रान्स, रशिया यासारख्या देशांचे संविधान हे आधुनिक काळात प्रगत संविधान म्हणून मानले जातात. लोकशाहीचे माहेरघर म्हणून ज्या इंग्लंडचा उल्लेख केला जातो तेथे लिखित स्वरूपात संविधान नसले तरी संविधान पूरक असे कायदे वेळोवेळी तयार करण्यात आले. जगात आज जवळपास सर्वच देशांचे लिखित संविधान आहेत. परंतु भारताच्या संविधानासारखी उंची या संविधानांना गाठता आली नाही. अनेक देशांना तर दोन-दोन, तीन-तीन वेळा संविधान बदलवावे लागले. आपल्या शेजारी असणाऱ्या चिनला देखील तीन वेळा संविधान बदलावे लागले. एवढेच नाही तर अनेक देशातील संविधानिक शासन व्यवस्था कोसळून पडल्यात. व तेथे हूकूमशाही अथवा सैनिकी शासन व्यवस्थेचा अंमल सुरू झाला. या सर्व घटनांची कारणमिमांसा केली असता असे दिसून येते की, त्या संविधानास असलेला पाया हाच मुळात कमकुवत होता. कोणत्याही संविधानाची यशस्वीता ही त्याचा पाया कोणती विचारधारा आहे व ते संविधान निर्माण करणाऱ्या व्यक्तीची विचारसरणी कोणत्या विचारसरणीचे अनुसरण करते यावर अवलंबून असते. भारतीय संविधान आजही जगात मानाचे स्थान प्राप्त करीत आहे याचे कारण भारताच्या संविधानाचा पाया हा स्वातंत्र्य, समता बंधुता आणि विज्ञानवादावर आधारीत बौद्ध विचारधारा हा आहे. तद्वतच भारतीय संविधानाचे प्रमुख शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब अब्दुलकर हे जगातील सर्वोत्तम अशा बौद्ध विचारसरणीचे पार्श्व आहेत. त्यामुळेच स्वातंत्र्याच्या सत्तराव्या वर्षात देखील भारतीय संविधानाच्या शिरपेचात मानाचा तुरा आजही रोवला जातो. आपल्या शेजारच्या एका देशात अलिकडेच डॉ. बाबासाहेब अब्दुलकर यांची जयंती साजरी करण्यात आली तेव्हा तिथल्या सर्व विचारवंतांनी आखर्जन एक मुद्दा पुन्हा-पुन्हा मांडला. त्यांच्या घटनेच्या कमकुवत पणामुळे त्यांची लोकशाही मृतप्राय





शाही भारताची राज्यपट्टना एवढी फक्तूत होते आहे की तिच्या लोकशाहीची प्रगल्भता दिवसेंदिवस यथिष्णू होत आहे. तिथले सगळे वक्ते म्हणत होते की, हमना संविधान लिखने के लिए हमेभी एक बाबासाहेब डॉ. अबिडकर मिलते हमे भी एक बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर चाहिए हमे भी भारत जैसा प्रजातंत्र चाहिए

डॉ. बाबासाहेब अबिडकरांवर प्रारंभापासून बौद्ध तत्वज्ञानाचा प्रभाव पडलेला होता. त्यामुळे त्यांच्या चळवळीतील प्रत्येक आंदोलनावर बौद्ध तत्वज्ञानाची छाप पडलेली दिसून येते भारताचे संविधान निर्माण करण्याची जबाबदारी जेव्हा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांवर आली तेव्हा भारतीय संविधानातील बहुतांशी कलमांची तरतूद करतांना त्यांनी बौद्ध तत्वज्ञानाशी अनुकूल अशाच तरतूदींचा समावेश भारताच्या संविधानात केलेला दिसून येतो. आकाशवाणीच्या दिल्ली केंद्रावरून ३ ऑक्टोबर १९५४ रोजी दिलेल्या भाषणात डॉ. बाबासाहेब अबिडकर म्हणतात की, " खात्रीने माझे सामाजिक तत्वज्ञान स्वातंत्रता, समता आणि बंधुभाव या तीन शब्दात सामावलेले आहे. माझे तत्वज्ञान मी फ्रान्सच्या राज्यकांतीपासून उरगणे घेतले आहे असे कुणीही समजू नये. तसे मी केलेले नाही. माझ्या तत्वज्ञानाचे मुळ हे धर्मात असून ते राज्यशास्त्रात नाही. ते मी माझे गुरू बुद्धाच्या शिकवणीतून प्राप्त केलेले आहे.

भारतीय संविधानाने लोकशाही शासन पध्दतीचा स्विकार केला आहे. बहुतांशी लोकांचा असा समज आहे की, भारताने लोकशाही शासन पध्दती ही पाश्चात्य देशांच्या संविधानातून स्विकारलेली आहे. परंतु त्यांनी असे म्हणने म्हणजे भारतीय इतिहासाबाबत आपल्या अज्ञानाचे प्रदर्शन करणे होय. असे म्हटल्यास चुकीचे ठरू नये. कारण पाश्चात्य देशात जेव्हा लोकशाही शासन पध्दतीचा अंमल सुरू झाला त्याच्या कितीतरी शेकडो वर्षांचा इतिहास लोकशाही शासन पध्दतीला भारतात असलेला दिसून येतो. तथागत बुद्धाच्या काळात लोकशाही स्वरूपाची शासन व्यवस्था भारतात असल्याचे आपणास अभ्यासाअंती दिसून येईल. २५ नोव्हेंबर १९४९ रोजी संविधान सभेत डॉ. बाबासाहेब अबिडकरांनी जे समारोपाचे भाषण केले त्या भाषणात डॉ. बाबासाहेब म्हणतात की, "बौद्ध भिक्षू संघाचे परिशीलन केल्यास हे स्पष्ट दिसून येते की, भारतात नुसती पार्लमेंटच होती असे नव्हे तर आधुनिक पध्दतीचे पार्लमेंटरी नियमही त्यांना पूर्ण अवगत होते. पार्लमेंटात कोणी कोठे बसावे, ठराव कसे आणावे, कोरम किती असावा,

पध्दतीचे कोणते भागाचे गुण भवताना कसे करावे, अविचलता ठराव कसा संघत करावा वगैरे संबंधी बौद्ध भिक्षूंनी आपल्या संघत नियम केले होते. हे पार्लमेंटरी नियम बुद्धांच्या भिक्षू संघातच लागू करित होते. हे करे असते तरी, बुद्धाने ते नियम तत्काळी चालत असलेल्या राज्यपध्दतीतून घेतले असावेत." याचा अर्थ भारतात पूर्वी लोकशाही होती. इथे त्या काळात प्रजासत्ताक राज्ये होती. असे डॉ. बाबासाहेब अबिडकर सांगतात आणि भारतीय संविधानाने स्विकारलेल्या लोकशाही शासन व्यवस्थेचा संबंध ते तथागत बुद्धांच्या धम्माशी जोडतात. भारतीय संविधानाच्या तिसऱ्या भागात कलम १२ ते ३५ मध्ये भारतीय नागरीकांना बहाल केलेल्या मुलभूत अधिकारांचा समावेश करण्यात आला आहे. या मुलभूत अधिकारावर देखील बौद्ध तत्वज्ञानाची छाप पूर्णपणे पडलेली दिसून येते. भारतीय नागरीकांना दिलेल्या प्रत्येक मुलभूत अधिकारातून बौद्ध विचारांची प्रचिती आपणास येते. गौतम बुद्धाने उपासी या न्हाव्यास प्रथम प्रवज्जा देऊन भिक्षू संघात सामील करून घेतले. आणि त्यानंतर शक्य कुळातील तरुणांना भिक्षू संघाची शिक्षा दिली. त्याचप्रमाणे सुनित नामक भंग्यास, सोपाक आणि सुप्पीय या अस्पृश्यास, सुमंगल या शेतकऱ्यास छन्ना या शुद्धोधनाच्या घरातील नोकरास, धन्नीय या कुभारास, कुप्पत-कुर या भिकाऱ्यास भगवान बुद्धाने अपमान न करता आणि त्यांचा हीन जातीतील जन्म किंवा त्यांची पूर्वीची स्थिती यांची पर्वा न करता त्यांना आपल्या संघात घेतले. भारतीय संविधानात देखील कोणतीही जात, धर्म, वंश, लिंग या आधारावर भेदाभेद न करता सर्वांना समान मानण्यात यावे अशी तरतूद १५ व्या कलमात करण्यात आली आहे. भारतात वर्षानुवर्षे चालत असलेली स्त्री-पुरुष विषमता भारतीय संविधानाने समाप्त केली. स्त्री आणि पुरुष यांच्यात लिंगाच्या आधारावर पाळण्यात येणारी विषमता नष्ट करून स्त्रीयांना पुरुषांच्या बरोबरीचा समान दर्जा देऊन स्त्रीयांवर हजारो वर्षे झालेल्या अन्यायाचे परिमार्जन करण्याचे कार्य भारतीय संविधानाने केले. अर्थात या विचारधारेमागे पार्श्वभूमी बौद्ध तत्वज्ञानाचीच आहे असे आपणास दिसून येते. कारण भगवान बुद्धाने आपल्या संघात प्रवेश देत असतांना स्त्री-पुरुष असा कोणताही भेदभाव केलेला नाही. म्हणून स्त्री-पुरुष समतेबाबत डॉ. बाबासाहेब अबिडकर लिहीतात की, "बुद्ध जातीसंस्थेचा सर्वत्रेष्ट विरोधक असून समतेचा पहिला आणि अत्यंत सबीर असा समर्थक होता."

बौद्ध तत्वज्ञानामध्ये तथागत भगवान बुद्धाने आपले



मत कधीच दुसऱ्यावर लादण्याचा प्रयत्न केलेला दिसत नाही. त्यांनी नेहमीच त्यांच्याकडे आलेल्या प्रत्येकास आपले मत मांडण्याची संधी दिली. तद्वक्तच आपले विचार मांडून सत्य काय आहे हे समजावून सांगितले तसेच सत्य-असत्य यांची पारख केली. यावरून बौद्ध काळात विचार स्वातंत्र्य असल्याचे दिसून येते. भारतीय संविधानाने विचार स्वातंत्र्याच्या अधिकारास मान्यता दिलेली आहे. त्यामुळे भारतीय संविधानातील स्वातंत्र्याच्या अधिकारावर देखील बौद्ध तत्वज्ञानाची छाप पडलेली आहे असे म्हटल्यास वादगे होणार नाही.

भारतीय संविधानात नितीनिर्देशक तत्वे तसेच मुलभूत कर्तव्यांचा समावेश करण्यात आला आहे. भारतीय संविधानाच्या कलम ३९(घ) नुसार स्त्री-पुरुषांना समान कामासाठी समान वेतन, ४४ व्या कलमानुसार समान नागरी कायदा, ४७ व्या कलमानुसार मादक पेय व सार्वजनिक आरोग्यास घातक अशा अंमली द्रव्ये यांच्या सेवनावर बंदी, ४८ व्या कलमानुसार गांधी, वासरे आणि हार दुध- दुभती व शेतीपयोगी जनावरांच्या कत्तलीस बंदी, कलम ५१ नुसार आंतरराष्ट्रीय शांततेस प्रोत्साहन देण्यासाठी प्रयत्न करणे, कलम ५१ (क) (ड.) नुसार धार्मिक, भाषिक व प्रादेशिक किंवा वर्गीय भेदाच्या पत्तिकडे जावून अखिल भारतीय जनतेमध्ये एकोपा व भातृभाव वाढीस लावणे कलम ५१ (क) (ल) नुसार वैज्ञानिक दृष्टीकोन व मानवतावाद वाढीस लावणे अशा प्रकारच्या तरतुदी करण्यात आल्या आहेत यावर देखील बौद्ध तत्वज्ञानातील पंचशील या तत्वाचा प्रभाव दिसून येतो कारण बुद्धाने सांगितलेल्या पंचशीलत ही तत्वे आढळून येतात. बुद्ध हा वैज्ञानिक दृष्टीकोन मांडणारा पहिला वैज्ञानिक होता असेच दिसून येते. बौद्ध तत्वज्ञानातील निब्वान व प्रतिपत्समुत्पाद हा बुद्धाच्या विज्ञान दृष्टीचा सबळ पुरावा आहे.

भारतीय संविधानाच्या अंतरंगात बौद्ध तत्वज्ञानाचा प्रत्यय वेगवेगळ्या कलमामध्ये आपणास दिसून येतो. केवळ संविधानाच्या अंतरंगावरच नाही तर भारताने स्विकारलेली आदर्श व प्रतिकामध्येही आपणास बौद्ध तत्वज्ञानाचा प्रभाव पडलेला दिसतो. भारताच्या राष्ट्रीय ध्वज तिरंगावर मधोमध जे अशोक चक्र आहे ते बौद्ध तत्वज्ञानातूनच घेण्यात आले आहे. या चक्राला तत्त्वधर्मवि आणि शांततापूर्ण परिवर्तनाचे प्रतिक मानले जाते. सारनाथ मथिल अशोक स्तंभाचे शिल्प तीन सिंह व खाली मधोमध अशोक चक्र हे भारताचे राष्ट्रीय चिन्ह म्हणून स्विकारण्यात आले आहे. हा स्तंभ अशोकाने

गौतम बुद्धाला जेथे ज्ञान प्राप्ती झाली व जेथे भगवान बुद्धाने आपले पहिले प्रवचन दिले त्या मृगदाय वनात उभारला होता. हे राष्ट्रीय चिन्ह भारतीय संविधानाच्या मुखपृष्ठावर छापलेले आहे. यावरून भारतीय संविधानाच्या आंतर्बाह्य स्वरूपावर बौद्ध तत्वज्ञानाचा प्रभाव दिसून येतो.

निष्कर्ष

भारतीय संविधान हे मानव मुक्तीचे व मानवतावादाचे मुर्तीमंत उदाहरण आहे. भारतीय संविधानाच्या कलमा-कलमातून स्वातंत्र्य, समता, दंडुभाव, न्याय या संकल्पनांचा प्रत्यय आपणास येतो. भारतीय संविधानाच्या अंतरंगातून बौद्ध तत्वज्ञान ओसंडून वाहत असले तरी त्याकडे विशिष्ट धर्माचे तत्वज्ञान म्हणून दावासाहेब अविडकरांनी पाहिले नाही. तर मानवी कल्याणाचे सशक्त साधन म्हणून पाहिले आहे. कोणत्याही संविधानाचा उद्देश हा फक्त शासन कारभाराचे नियमन करणे एवढाच मर्यादित नसतो तर ज्याच्यासाठी हे संविधान तयार करण्यात आले त्या देशातील समग्र मानव जातीचे कल्याण घडवून आणणे हा असतो. तोच उद्देश साध्य करण्याचा प्रयत्न डॉ. बाबासाहेब अविडकरांचा दिसून येतो. एवढेच नाही तर भारतीय संविधानाला भारतीय विचारांचे अधिष्ठान मिळवून देवून भारतातील प्रदिर्घ अशी मानवतावादी वैज्ञानिक विचारधारेस पुनर्जीवित करणे हा होता हे दिसून येते. भारतीय संविधानातील बौद्ध विचारधारेला विशिष्ट अशा धार्मिक दृष्टिकोनातून न पाहता धम्माच्या विचारधारेच्या दृष्टिने पाहिल्यास खऱ्या अर्थाने राष्ट्रप्रभाचे दर्शन घडून येईल. यासाठी खुल्या विचारधारेतून जाहरे येवून प्रगल्भ अशा विचारसरणीचा परिचय दिल्यास ते अधिक योग्य होईल असे मला वाटते.

संदर्भ ग्रंथ

- १ अविडकर, डॉ. भी. रा., भगवान बुद्ध आणि त्यांचा धम्म
- २ भारताचे संविधान
- ३ किर, धनंजय, डॉ. बाबासाहेब अविडकर, मुंबई, १९६६
- ४ डॉ. बाबासाहेब अविडकर: लेखन आणि भाषणे, खंड १८, भाग ३
- ५ मोरे, एन. एम., भगवान बुद्धाचा मध्यम मार्ग, सुगावा प्रकाशन, पूणे
- ६ लोकराज्य, ऑक्टोबर २००६
- ७ <http://narinarke.blogspot.in>





# महाराष्ट्रातील स्थित्यंतरे

- संपादक मंडळ -

डॉ. प्रमोद पवार

डॉ. प्रकाश पवार

डॉ. बाळ कांबळे

डॉ. मोहन काशीकर

डॉ. अलका देशमुख

डॉ. प्रशांत अमृतकर

डॉ. बाळासाहेब भोसले



- अनुक्रमणिका -

- ग्रंथाविषयी ..... ७  
- प्रमोद पवार, अमळनेर
- महाराष्ट्रातील स्थित्यंतारांचा मागोवा ..... १७  
- अलीम वकील, चांदवड
- महाराष्ट्राची सहा दशकांची वाटचाल : एक सिंहावलोकन ..... २१  
- व्ही. एल. एरंडे, निलंगा
- संयुक्त महाराष्ट्र लढ्यातील आंबेडकरी चळवळीचे योगदान ..... ३७  
- वामन गवई, अमरावती
- संयुक्त महाराष्ट्रासाठी आंबेडकरी राजकीय चळवळीचे योगदान ..... ४५  
- भगवान माने, कराड
- महाराष्ट्रातील आघाड्यांचे राजकारण ..... ५२  
- बी. बी. पाटील, कोल्हापूर
- महाराष्ट्रातील कायदा सुव्यवस्था, विषमता आणि सद्यःस्थिती ..... ६४  
- विजय खरे, पुणे
- विदर्भाच्या अस्मितेचा प्रश्न आणि ऐतिहासिक पार्श्वभूमी ..... ७०  
- अलका देशमुख, नागपूर
- उत्तर महाराष्ट्र महसूल विभागातील खानदेशची उपेक्षितता ..... ८९  
- प्रमोद पवार, अमळनेर  
- गणेश चव्हाण, मुक्ताईनगर
- मराठवाडा : काल, आज आणि उद्या ..... १०४  
- प्रशांत अमृतकर, औरंगाबाद  
- बालासाहेब किलचे, औरंगाबाद
- मराठवाडा विभाग: सद्यःस्थिती आणि आव्हाने ..... ११९  
- पंडित शेषराव नलावडे, औरंगाबाद
- बॉम्बे ते मुंबई : एक दृष्टिक्षेप ..... १२६  
- एस. एम. वाघ, शिवले-ठाणे
- महाराष्ट्राच्या प्रादेशिक विकासाचा असमतोल ..... १३२  
- रवींद्र पांडुरंग भणगे, कोल्हापूर
- महाराष्ट्र आणि प्रादेशिक असंतुलन ..... १४९  
- संदीप काळे, सेलू, वर्धा
- ग्रामीण महाराष्ट्रातील राजकीय-सामाजिक स्थित्यंतारांची नांदी ..... १५४  
- राहुल बावगे, नागपूर

महाराष्ट्रातील स्थित्यंतरे । ३



• महाराष्ट्राच्या महानगरपालिका नियडणुकीतील राजकीय स्थित्यंतर : १९९५ ते २०१८ .....	१६२
- मोहन काशीकर, नागपूर	
- राहुल बावगे, नागपूर	
• महाराष्ट्रातील आदिवासी स्थित्यंतरे .....	१६७
- अशोक वसावे, नाशिक	
• महाराष्ट्रातील दलित चळवळीची सद्यःस्थिती .....	१७६
- कैलास सोनवणे, राजगुरुनगर	
• महाराष्ट्रातील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर उत्तर-दलित चळवळीचा विकास, मूल्यमापन .....	१८१
आणि सद्यःस्थिती	
- महेंद्र पाटील, शिरपूर	
• महाराष्ट्रातील आरपीआयची स्थित्यंतरे .....	१९२
- संजय अहिरे, नाशिक	
• समकालीन स्थित्यंतरे आणि स्त्री चळवळीपुढील आव्हाने .....	२०४
- चैत्रा रेडकर, मुंबई	
• महाराष्ट्रातील स्त्रियांची सद्यःस्थिती (कारणमीमांसा आणि उपाययोजना) .....	२११
- ऊर्मिला चव्हाण, मिरज	
• सत्यशोधक स्त्रीवाद : समकालीन स्त्री प्रश्नांची चिकित्सा .....	२१८
- प्रतिमा परदेशी, पुणे	
• महिला आरक्षण आणि स्थानिक राजकीय स्थित्यंतर .....	२२८
- संतोष कायदे, अकोट	
• आधुनिक महाराष्ट्राच्या जडणघडणीत लोकहितवादींच्या धर्मचिकित्सेचे योगदान .....	२३२
- विठ्ठल दहिफळे, नांदेड	
• साहित्याचा सामाजिक अनुबंध .....	२३८
- एस. एच. मोरे, नाशिक	
• संतसाहित्यातील स्थित्यंतरे .....	२४३
- सतीश बडवे, औरंगाबाद	
• महात्मा फुले यांच्या विचारांचा मराठी कवितेवरील प्रभाव .....	२४६
- आशुतोष पाटील, जळगाव	
• Maharashtra's Contribution to Political Philosophy and Political Science .....	264
- Ashok Chousalkar, Kolhapur	
• Movement for Independent Vidharhja State .....	277
- Bal Kamble, Karjat, Pune	
• Political Power & Sub Regional Disparities in Maharashtra (1960- 2016) .....	289
- Prakash Pawar, Kolhapur	

## महिला आरक्षण आणि स्थानिक राजकीय स्थित्यंतर

डॉ. संतोष नारायण कायंदे, अकोट

भारतीय राजकीय व्यवस्थेच्या अभ्यासामध्ये विशेषतः १९९०नंतरच्या काळात राज्यांचे राजकारण हा एक महत्वाचा विषय राहिला आहे. महाराष्ट्राच्या राजकारणाचा अभ्यास याचाच एक भाग समजला पाहिजे. महाराष्ट्राच्या राजकारणाच्या अभ्यासाचे प्रमुख तीन कालखंड विचारात घेतले जातात. पहिला १९५६ ते १९७६, दुसरा १९७७ ते १९९० आणि तिसरा १९९० ते २००३. या तीनही कालखंडांमध्ये महाराष्ट्राच्या राजकारणात काही स्थित्यंतरे घडून आली. यासंबंधीचे अध्ययन करताना साधारणपणे स्थूल प्रवाहानांचे विचारत घेतले जाते असल्याचे आढळते. स्थूल वा ठळक प्रवाहांबरोबरच स्थानीक पातळीवरील स्थित्यंतरे सुध्दा महत्वाची ठरतात. राजकीय प्रक्रियेतील महिलांचा वाढता सहभाग हे महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महत्वपूर्ण स्थानिक स्थित्यंतर म्हटले पाहिजे. त्यासाठी ७३ व्या घटनादुरुस्ती आणि महाराष्ट्रात पंचायत राज व्यवस्थेत महिलांना दिलेले ३०% आरक्षण, ७३ व ७४ वी घटनादुरुस्ती, शेतकरी संघटनेची सक्रियता, स्वयंसाहाय्यता गट आणि पंचायत राज संस्थांमध्ये महिलांना ५०% आरक्षण देण्याचा २००९ चा केंद्रशासनाचा निर्णय अधिक काळ महत्वपूर्ण ठरला आहे. प्रस्तुत लेखात महाराष्ट्राच्या पंचायत राज व्यवस्थेमध्ये महिला आरक्षण आणि स्थानिक राजकीय स्थित्यंतर यासंबंधीची चर्चा केली आहे.

### १) महाराष्ट्रातील स्थानिक स्वराज्य संस्था

स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर १९५१-५२ पासून भारतामध्ये सामूहिक विकास योजनांचे कार्यक्रम सुरू झाले आणि १९५३ साली त्या योजनेला पूरक अशी राष्ट्रीय विकास योजना हाती घेतल्या गेली. ग्रामीण भागातील जनतेने आपली उपक्रमशीलता दाखवून आत्मविश्वास साध्य करण्यासाठी प्रयत्न करावा असा हेतू या योजनांमार्गे होता. त्या योजनेचे मूल्यापन करण्यासाठी १९५६ साली नियुक्त करण्यात आलेल्या बलवंतराव मेहता समितीने केलेल्या शिफारशीनुसार पंचायत राज व्यवस्था सुरू करण्यात आली. समितीने अशी शिफारस केली होती की, लोकशाही विकेंद्रीकरण आणि सामुदायिक विकास कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी पंचायत राज संस्था त्वरित सुरू केली पाहिजे. त्याला अनुसरून देशातील अनेक राज्यांनी पंचायत राज व्यवस्थेसाठी अधिनियम मंजूर केले. राजस्थानमध्ये सर्वप्रथम हा प्रयोग करण्यात आला. या योजनेचे उद्घाटन २ ऑक्टोबर १९५९ रोजी पंतप्रधान नेहरूद्वारा नागौरमध्ये केल्या गेले. त्यानंतर आंध्र प्रदेशमध्ये ही व्यवस्था सुरू करण्यात आली. महाराष्ट्रामध्ये महाराष्ट्र जिल्हा परिषद आणि पंचायत समिती अधिनियम १९६१ नुसार पंचायत राज्याची त्रिस्तरीय व्यवस्था सुरू करण्यात आली. या रचनेमध्ये जिल्हा परिषद, पंचायत समिती आणि ग्रामपंचायत यांचा समावेश होतो.

### महाराष्ट्रातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांची स्थिती

अ.क्र.	विभाग	क्षेत्रफळ (चौ.कि.मी.)	लोकसंख्या	जिल्हाधी संख्या	जिल्हा परिषद	पंचायत समिती	ग्राम पंचायत	महा पालिका	नगर परिषद	नगर पंचायत	एकूण
१	कोकण	३०७२८	२४८८३८३०	७	५	४५	३०१७	८	२३	५	३९०३
२	नाशिक	५७४४०	१५७३६७८४	५	५	५४	४८९९	५	३७	२	५००१
३	पुणे	५७२७५	१९९९७७७८	५	५	५७	५६७०	५	४३	१	५७८१
४	औरंगाबाद	६४८१३	१५६२९२४८	८	८	७६	६६९८	४	५१	३	६७८०
५	अमरावती	४६०३५	१९४८३६६	५	५	५६	३९४९	२	४८	०	४०५१
६	नागपूर	५९२८६	१०६८२६२१	६	६	६३	३७००	२	३२	२	३८०५
७	एकूण	३०७५७७	१६८७८६२७	३६	३४	३५१	२७८७३	२६	२२६	१३	२८५३३

महाराष्ट्रामध्ये सद्यःस्थितीत ३६ जिल्हे असून ३४ जिल्हा परिषदा आहेत. पंचायत समितींची संख्या ३५१ तर ग्राम पंचायतींची संख्या २७,८७३ इतकी आहे. शहर पातळीवरील स्थानिक संस्थांचा विचार करता महाराष्ट्रामध्ये २६ महानगरपालिका, २२६ नगरपरिषदा आणि १३ नगर पंचायती आहेत. महाराष्ट्रातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांची स्थिती २२८। अर्धवर्ष पब्लिकेशन



पुढील सारणीमध्ये दर्शविण्यात आली आहे. (1)

## २) ७३ वी घटना दुरुस्ती

संसदेने २२ डिसेंबर १९९२ रोजी ७३ वी घटना दुरुस्ती मंजूर करून पंचायत राज व्यवस्थेच्या संदर्भात काही महत्त्वपूर्ण तरतुदी केल्या. त्यामध्ये असलेली एक महत्त्वपूर्ण तरतूद म्हणजे महिलांसोठी ठेवण्यात आलेल्या राखीव जागा ही होय. प्रत्येक पंचायतीला प्रत्यक्ष निवडणुकीद्वारे भरल्या जाणाऱ्या एकूण जागांपैकी किमान एक तृतीयांश जागा महिलांसाठी राखीव असतात. यामध्ये अनुसूचित जाती व अनुसूचित जमातींच्या महिलांसाठी राखीव असलेल्या जागांचाही समावेश होतो. अशा जागा प्रत्येक पंचायतीच्या विविध निर्वाचन क्षेत्रामध्ये चक्राकार पद्धतीने विभाजित केल्या जातात. पंचायत राज व्यवस्थेच्या तीनही स्तरांवरील पंचायत प्रमुखांच्या एकूण जागांपैकी किमान एक तृतीयांश जागा महिलांसाठी राखीव असतात. या ७३ व्या घटना दुरुस्तीला अनुसरून महाराष्ट्र शासनाने नवीन पंचायती राज्य कायदा संमत केला असला तरी यापूर्वीच महिला, अनुसूचित जाती, जनजाती आणि भागासवर्गीय यांच्यासाठी आरक्षित जागांची तरतूद केली होती. परिणामी राज्याच्या इतिहासात प्रथमच मोठ्या प्रमाणात महिला राजकीय निर्णय प्रक्रियेत सहभागी झाल्या. राज्यात जवळजवळ १ लक्ष स्त्रिया सरपंच झाल्या आहेत. ९८ स्त्रिया पंचायत समितीच्या सभापती पदावर तर दहा जणी जिल्हा परिषदेच्या अध्यक्ष पदावर कार्यरत होत्या (२००३). (1)

## ३) महिलांना ५० टक्के आरक्षण व निर्णय प्रक्रियेतील सहभाग

- ७३ व्या विशेषधनाने पंचायत राज संस्थांमध्ये महिलांना ३३ टक्के जागा आरक्षित केल्या. राजकीय प्रक्रियेतील महिलांचा सहभाग वाढविण्यासाठी आधीच्या ३३ टक्के आरक्षणांमध्ये वाढ करण्यासंबंधीचा उल्लेख खुद्द भारताच्या तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपती असलेल्या प्रतिभा पाटील यांनी केला होता. ४ जून २००९ रोजी संसदेला दिलेल्या संदेशात श्रीमती पाटील यांनी म्हटले होते- "The women suffer multiple deprivations of class, caste and gender and enhancing reservation in panchayats (and local urban bodies) will lead to more women entering in to the public sphere." (1)

त्याला अनुसरून केंद्र शासनाने २७ ऑगस्ट २००९ रोजी पंचायत राज संस्थांमध्ये महिलांना ५० टक्के आरक्षण देण्यासंबंधीचा महत्त्वपूर्ण निर्णय घेतला. त्यासाठी (१९१० वे) संविधान दुरुस्ती विधेयक संसदेत प्रस्तुत केले. तत्कालीन ग्रामीण विकासमंत्री श्री. सी. पी. जोशी यांनी संबंधित विधेयक लोकसभेत मांडले होते. १५ व्या लोकसभेचा अवधी संपला तरी विधेयक मंजूर झाले नाही. असे असले तरी केंद्र शासनाच्या निर्णयाची अंमलबजावणी करण्याच्या दृष्टीने अनेक राज्यांनी पुढाकार घेऊन महिलांना ५० टक्के आरक्षणाची तरतूद केल्याचे आढळते. मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेशमध्ये आधीच यासंबंधीची तरतूद केली होती. तर २५ नोव्हेंबर २०११ पर्यंत आंध्र प्रदेश, छत्तिसगढ, झारखंड, केरळ, महाराष्ट्र, ओरिसा, राजस्थान आणि त्रिपुरामध्ये यासंबंधीची तरतूद करण्यात आली. एप्रिल २०११ मध्ये

- महाराष्ट्राच्या विधिमंडळाने यासंबंधीच्या विधेयकाला एकमताने मान्यता दिली होती. (1)
- ७३ वे संविधान विशेषधन व अलीकडे महाराष्ट्र शासनाने केलेल्या महिलांच्या आरक्षणासंबंधीच्या तरतुदीचा परिणाम म्हणून महाराष्ट्राच्या पंचायत राज्य संस्थांमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग वाढला. त्यांच्या सहभागावर जरी कुटुंबप्रमुखाचा प्रभाव असला तरी राजकीय पद प्राप्तीमुळे त्यांच्यामध्ये अधिक घीटपणा आला. कधीही सभेत बोलायची सवय नसलेल्या महिला ग्रामसभेत हळूहळू बोलायला लागल्या. आदिवासी तसेच अतिमागास अशा गडचिरोली जिल्ह्यातल्या माडिया गोंड आदिवासींमध्ये ते अतिमागास असूनही काही महत्त्वपूर्ण परिवर्तने आढळली. एका अभ्यासातील खालील निष्कर्ष याबाबत खरेच बोलके असल्याचे स्पष्ट होते. (1)

- १) ग्रामपंचायत स्तरावर अहेरी पंचायत समिती अंतर्गत ग्रामपंचायतीच्या सभांमध्ये महिलांची उपस्थिती आणि सहभाग जास्त आढळला. त्या पूर्णवेळ हजर राहून सभेत बोलल्या, कार्यवाही त्यांना समजत होती आणि त्यात लक्ष घालून अनेक समस्यांवर त्यांनी मते मांडली व त्यांच्या बोलण्यावर कोणी विरोध दर्शविला नाही. या सभांमध्ये पुरुषांपेक्षा महिलांचा सहभाग व प्रभाव जास्त होता.
- २) पंचायत समिती स्तरावर स्त्रियांचा सहभाग कमी आढळला. स्त्रिया क्वचितच काही समस्यांवर बोलतात.
- ३) जिल्हा परिषद स्तराला बैठकीसाठी जास्तीत जास्त स्त्रिया पूर्णवेळ उपस्थित होत्या. किमान चार स्त्रियांनी अनेक विषयांवर आपली मते मांडली. याच जिल्हा परिषदेतील एक नवनिर्वाचित पदाधिकारी स्त्री आपले

महाराष्ट्रातील स्थित्यंतरे । २२९



कार्य प्रभावीपणे करते, सभेत ठराव मांडून चर्चा घडवून त्यानुसार तो पारित करून घेते. सभेचे कामकाज समजावून घेऊन त्याची योग्य अंमलबजावणी अधिकाऱ्यांकडून करून घेतात. प्रसंगी आंदोलन करूनही सभेच्या सोडवून घेण्याचा प्रयत्न त्या करतात.

४) शिकलेल्या व तरुण वयोगटातील स्त्रियांचा सहभाग आणि प्रभाव जास्त दिसून येतो.

४) स्वयंसाहाय्यता गट आणि महिलांचा सहभाग  
युनिसेफने आपल्या २००६ च्या अहवालामध्ये म्हटले आहे की, महिलांच्या सबलीकरणासाठी आणि त्यांच्या राजकीय सहभागामध्ये वाढ करण्यासाठी त्यांना प्रातिनिधिक संस्थांमध्ये आरक्षण देणे गरजेचे असल्याचे जगातल्या अनुभवावरून दिसते. भारतातही त्याचा प्रत्यय आलेला आहे. पंचायत राज्यातील महिलांच्या सक्रिय सहभागाला व त्यांच्या नेतृत्वाला उभारी देणारा एक चांगला उपक्रम म्हणजे महिलांचे स्वयंसाहाय्यता गट (SHGS) होय. वचतीच्या माध्यमातून महिलांनी अनेक लहान उद्योग उभारून आणि गुंतवणूक करून ग्रामीण भागातील आपले समाज जीवन पार बदलून टाकल्याचे लक्षात येते. आर्थिक निर्भरता प्राप्त करण्यासाठी त्यांचा चांगलाच हातभार लागल्याचे स्पष्ट होते. या आर्थिक निर्भरतेमुळे महिलांचा राजकीय सहभाग वाढण्यात मोलाची मदत झालेली आहे. महाराष्ट्रात १ लक्ष ८० हजारांच्यावर महिलांचे वचत गट असून त्यापैकी १ लक्ष ३१ हजार वचत गटांचे बँकांशी संलग्नकरण झालेले आहे. त्यांचे वार्षिक उलाढाल ५०० कोटी रुपयांच्या आसपास आहे. (५)

यामध्ये कार्यरत असलेल्या महिला ग्रामपंचायतीच्या कार्यात आमसभेत पुढाकार घेत असल्याचे आढळून आले आहे. महिलांच्या राजकीय जाणीव जागृतीसाठी आणि विकासासाठी ही बाब अधिकच उपयुक्त ठरल्याचे स्पष्ट होते. कारण राजकीय सहभागानेच महिलांमध्ये आत्मविश्वास निर्माण होतो आणि त्या अधिक आत्मनिर्भर बनतात.

५) निवडणुका आणि महिलांचा सहभाग :

महिलांना आधीपासूनच काही राखीव जागा महाराष्ट्रात असल्यामुळे पंचायत राज व्यवस्थेमध्ये काम करणाऱ्या, त्यातून वरच्या राजकारणात आलेल्या स्त्रियांची लक्षणीय संख्या महाराष्ट्रात आधीच होती. निवडणुकीतील महिलांचा सहभाग वाढण्यामागे महाराष्ट्राच्या राजकारणात प्रमुख दबाव गट म्हणून काम करणाऱ्या शेतकरी संघटनेचा मोठा सहभाग असल्याचे स्पष्ट होते. शेतकरी संघटनेने चांदवड येथे १० नोव्हेंबर १९८६ मध्ये भव्य महिला परिषद घेतली होती. तिला लाख भराहून अधिक महिलांची उपस्थिती होती. या परिषदेने स्त्रियांना पंचायत राज संस्थांमध्ये निवडणुका लढवून सहभागी होण्यासंबंधी आवाहन केले होते. त्या दृष्टीने तेव्हाच्या निवडणुकीत महिला उमेदवार उभे करण्यासाठी सर्व महिलांनी एकत्र थांबे अशी विनंतीही शेतकरी संघटनेने केली होती. समग्र महिला आघाडी स्थापन करून तिचा जाहीरनामाही प्रसिद्ध केला होता. १९८९ च्या पंचायत राज संस्थांच्या निवडणुकीमध्ये महिलांच्या ९ पॅनेलांनी ग्रामपंचायतीच्या निवडणुका लढवल्या. त्यापैकी ७ ठिकाणी महिला पॅनेल विजयी झाले. त्या ७ पैकी ५ पॅनेल ही शेतकरी संघटना पुस्तक महिला आघाडीची होती. या निवडणूक निकालामुळेच शहर पवार यांच्या नेतृत्वात असलेल्या काँग्रेस सरकारने महिलांना ३० प्रतिशत जागा पंचायत राज संस्थांमध्ये देण्याचे जाहीर केले होते. ७३ व्या विशोधानातील अनेक महत्वाच्या तरुणी महाराष्ट्रात आधीच अमलात होत्या. २००१-०२ च्या निवडणुकीत १६४० जिल्हा परिषद सदस्य व ३३०० पंचायत समिती सभासद निवडले गेले. या जवळपास ५ हजार स्थानिक प्रतिनिधींमध्ये एक तृतीयांश महिला निवडून आल्या होत्या. किमान तीन महत्वाचे उमेदवार प्रत्येक जागेसाठी होते असे धरले तर असा निष्कर्ष निघतो की राज्यभरात ५ हजारांहून अधिक महिला जिल्हा परिषद व पंचायत समितीच्या निवडणुकीमध्ये सहभागी झाल्या होत्या. अलीकडे २०१७ मध्ये झालेल्या जागापेक्षा अधिक आहे. या निवडणुकीत एकूण २२७ जागांपैकी १२९ जागा महिला सभासदांनी प्राप्त केल्या आहेत. महिलांना आरक्षित असलेल्या जागांची संख्या ११४ इतकी होती. याचाच अर्थ आरक्षित जागा सोडून इतर काही जागा ५६% आहे. आधीच्या २०१२ च्या निवडणुकीच्या तुलनेत हे प्रमाण वाढल्याचे प्रत्ययास येते. २०१२ च्या निवडणुकीत पहिल्या तीन सभासदांमध्ये महिला सभासद होत्या<sup>(६)</sup>. यावरून पंचायत राज संस्थेच्या निवडणुकीमध्ये महिलांचा सहभाग कमालीचा वाढल्याचे आणि त्याचा परिणाम म्हणून राज्यातील राजकीय कार्यकर्त्यांचा चेहरा मोहरा बदलू घातला आहे. हे



स्थित्यंतर लोकशाहीसाठी आणि महिलांच्या विकासासाठी उपयुक्त असल्याचे स्पष्टच आहे. या नव्या स्थित्यंतराचा राज्याच्या राजकारणावर परिणाम होईल आणि पुढील काळात राजकीय पक्षाकडे विधानसभेमध्ये उमेदवारी मागणाऱ्यांमध्ये स्त्रियांची संख्या अधिक वाढेल. परंतु सुहास पळशीकर यांनी म्हटल्याप्रमाणे या स्थित्यंतराच्या काही मर्यादा आहेत. त्या नसून ते राज्यसंस्थेच्या हस्तक्षेपातून साकार झालेले आहे. दुसरे म्हणजे राजकीय स्थित्यंतराकडे राजकीय पक्ष गांभीर्याने पाहत नाहीत. स्त्रियांचा पक्षात सहभाग वाढावा यासाठी विशेष प्रयत्न होताना दिसत नाहीत. मतदारसंघ राखीव झाला, मर्यादितच असेल. (८)

#### निष्कर्ष

महाराष्ट्रात स्त्रियांना ७३ व्या विशोधनापूर्वीच ३० टक्के जागा राखीव ठेवण्यासंबंधीची तरतूद असल्यामुळे देशातील सर्वसाधारण स्त्रीवर्गापेक्षा महाराष्ट्रातील स्त्रियांमध्ये राजकीय जाणीव जागृती अधिक असल्याचे आढळून येते. ७३ व्या घटना दुरुस्तीमुळे पंचायत राज संस्थांमध्ये महिलांचा राजकीय सहभाग मोठ्या प्रमाणात वाढला आहे. आता २००९ च्या केंद्रशासनाच्या निर्णयाला अनुसरून महाराष्ट्र विधिमंडळाने २०११ मध्ये संमत केलेल्या कायद्यामुळे महिलांना पंचायत राज्य व्यवस्थेमध्ये ५० टक्के आरक्षण मिळाले. त्यामुळे महिलांचा राजकीय प्रक्रियेतील सहभाग कमालीचा वाढला. एवढेच नाही तर निर्णय प्रक्रियेतील सहभागाच्या बाबतही मोठी सुधारणा झाली आहे. आधी निर्णय प्रक्रियेपासून दूर राहणारी महिला आता त्यात हिरीरीने सहभागी होत आहे. आधी बैठकीला फारशी हजर न राहणारी महिला आता आवर्जून उपस्थित राहत आहे. पंचायत राज व्यवस्थेमध्ये महिलांना प्राप्त झालेल्या राजकीय पदांमुळे त्यांच्यातील राजकारणासंबंधीचे औदासीन्य कमी झाले आहे. अतिमागास असलेल्या आदिवासी जमातीच्या महिलांमध्ये त्यासंबंधी महत्वपूर्ण परिवर्तन झाल्याचे आढळून आले आहे. ही बाब महिलांच्या विकासासाठी आणि लोकशाहीच्या विकासासाठी उपयुक्त समजली पाहिजे. निर्णय प्रक्रियेत महिलांचा सहभाग आणखी गतिमान करण्यासाठी महिला सभासदांना प्रशिक्षण देऊन त्यासंबंधी योग्य ती जाणीव जागृती करण्याची गरज आहे. पंचायत राज संस्थेतील महिलांच्या सक्रिय सहभागासाठी आणि त्यातून होणाऱ्या त्यांच्या विकासासाठी स्वयंसाहाय्यता गटाची उपयुक्तता सिद्ध झाली आहे. महाराष्ट्रातील पंचायत राज्य संस्थेच्या निवडणुकीमध्ये महिलांचा सहभाग वाढण्यामध्ये महाराष्ट्राच्या राजकारणात प्रमुख दबावगट म्हणून काम करणाऱ्या शेतकरी संघटनेचा मोठा वाटा असल्याचे साधार स्पष्ट होते. १९८९ च्या पंचायत राज संस्थेच्या निवडणुकांमध्ये महिलांच्या नऊ पॅनेलांनी ग्रामपंचायतीच्या निवडणुका लढवल्या होत्या. ज्यामध्ये सात पॅनेल विजयी झाले होते. त्या सातपैकी पाच पॅनेल ही शेतकरी संघटना पुरस्कृत महिला आघाडीची होती. पंचायत राज संस्थेच्या निवडणुकांमध्ये महिलांचा सहभाग कमालीचा वाढल्यामुळे त्यांचा परिणाम राज्याच्या राजकारणावर होऊन राजकीय कार्यकर्त्यांचा तोंडावळा बदलत चालला आहे. हे चित्र महिलांच्या सबलीकरणासाठी आणि लोकशाहीच्या दृढतेसाठी उपयुक्त आहे. महिलांच्या राजकीय सहभागाविषयी राजकीय पक्ष मात्र गांभीर्य नसल्याचे पाहावयास मिळते. स्त्रियांचा पक्षात सहभाग वाढावा यासाठी त्यांच्याकडून खास प्रयत्न होताना दिसत नाहीत. ही बाब महिलांच्या राजकीय नेतृत्वाच्या विकासासाठी अडचणीची आहे. त्यामुळे राजकीय पक्षांनी याबाबतीत अधिक सक्रिय होण्याची गरज आहे.

#### संदर्भ

१. राज्य निवडणूक आयोग अहवाल, महाराष्ट्र.
२. भोळे, भा. ल. (डॉ.), भारतीय गणराज्याचे शासन व राजकारण, पृ. ३६८.
३. The Hindu, November, 9, 2010.
४. The Hindu, April, 14, 2011.
५. महाकरकार, श्री. म. (डॉ.) (२००६), आदिवासी स्त्री व राजकारण, पृ. १५८.
६. देवगावकर, म. गो. (डॉ.), पंचायत राज आणि सामूहिक विकास, पृ. ९८.
७. २०१७ च्या मुंबई महापालिका निवडणुकीमध्ये किशोरी पेडणेकर, स्वैता कोरगावकर व प्रीती सातम यांनी अनुक्रमे पहिला, दुसरा व तिसरा क्रमांक प्राप्त केला होता.
८. पळशीकर, सुहास (संपा.), महाराष्ट्राचे राजकारण-राजकीय प्रक्रियेचे स्थानिक संदर्भ, पृ. ११७.

♦♦♦♦♦

महाराष्ट्रातील स्थित्यंतरे । २३१

संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावतीच्या बी.ए. भाग-२ सत्र-२  
राज्यशास्त्र विषयाच्या नवीन सुधारीत २०१८ पासूनच्या अभ्यासक्रमानुसार  
तसेच इतर विद्यापीठांनाही उपयुक्त.

# ब्रिटन व संयुक्त राज्य अमेरिकेचे शासन आणि सार्क

(GOVERNMENT OF BRITAIN AND  
UNITED STATES OF AMERICA AND SAARC)

डॉ. संतोष नारायण कायदे  
सहयोगी प्राध्यापक, श्री शिवाजी महाविद्यालय,  
अकोट, जि. अकोला.



अथर्व पब्लिकेशन्स





अथर्व पब्लिकेशन्स

ब्रिटन व संयुक्त राज्य अमेरिकेचे ज्ञानन आणि मार्क  
Government of Britain and United States of America and SAARC

© सुरक्षित

ISBN: 978-93-87129-72-6

Book No. : 581

प्रकाशक

युवराज भट्ट माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स

धुळे : १७, देवीदास कॉलनी, बरखेडी रोड, धुळे ४२४००१.

संपर्क: ९४०५२०६२३०

जळगाव : लळमजला, ज्योम हॉस्पिटल, अँग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, डाके कॉलनी,

जळगाव ४२५००१. संपर्क: ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल: atharvpublications@gmail.com

वेबसाईट: www.atharvpublications.com

प्रथमावृत्ती: १३ ऑगस्ट २०१८

अक्षरजुळवणी: अथर्व पब्लिकेशन्स

मूल्य: रु. २००/-

ऑनलाईन पुस्तक खरेदीसाठी [www.atharvpublications.com](http://www.atharvpublications.com)

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपींग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

२ | अथर्व पब्लिकेशन्स

आजी र  
गुरू डॉ. त्यागरा  
आणि  
मा. वसंतरा  
यांना स

ब्रिटन व संयुक्त राज



DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

VASANTRAO NAIK GOVERNMENT INSTITUTE OF ARTS & SOCIAL SCIENCES, NAGPUR

*Certificate*

This Certificate of Participation is awarded to Prof./Dr./Shri/Smt. *Santosh Kayande*

.....*Shri/Dr. Datta, Gannaveer & Science College, Akot*.....

for his/her active participation in Workshop on "A Study of the Political Process of Districts in Maharashtra", Jointly Organized by the Department of Political Science, Vasant Rao Naik Government Institute of Arts & Social Sciences, Nagpur & The Unique Foundation, Pune on 26<sup>th</sup> February 2019. The workshop imparted training in Research Methodologies of the study of the Political Process Districts in Maharashtra

*Maharashtra*  
Dr. Vivek Ghotale

Joint Director  
The Unique Foundation, Pune

*P.V. Bavge*  
Dr. Rahul Bavge

Co-ordinator  
Associate Professor & Head of Dept. Political Science

*Sunetra Maharaj*  
Dr. Sunetra Maharaj (Patil)

Director  
V.N.G.I.A.S.S., Nagpur



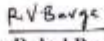


DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE  
VASANTRAO NAIK GOVERNMENT INSTITUTE OF ARTS & SOCIAL SCIENCES, NAGPUR

## Certificate

This Certificate of Participation is awarded to Prof./Dr./Shri/Smt. Santosh Kayande  
Shivaji Arts, Commerce & Science College, Akot  
for his/her active participation in Workshop on "A Study of the Political Process of Districts in Maharashtra", Jointly Organized by the Department of Political Science, Vasant Rao Naik Government Institute of Arts & Social Sciences, Nagpur & The Unique Foundation, Pune on 26<sup>th</sup> February 2019. The workshop imparted training in Research Methodologies of the study of the Political Process Districts in Maharashtra.

  
Dr. Vivek Ghotale  
Joint Director  
The Unique Foundation, Pune

  
Dr. Rahul Bavage  
Co-ordinator  
Associate Professor & Head of Dept. Political Science

  
Dr. Sunetra Maharaj (Patil)  
Director  
V.N.G.I.A.S.S., Nagpur



DEPARTMENT OF LAW  
SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY,  
AMRAVATI



## Certificate of Participation

This is to certify that Mr. Prakash Wamanrao Pantawane, Shri Shivaji Arts Commerce & Science College, Akot, Dist. Akola has participated in UGC Sponsored One week Short Term Course on "Human Rights' Education" for University & College Teachers organized by Department of Law, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati under its scheme of "Human Rights & Duties Education" held during 13<sup>th</sup> to 18<sup>th</sup> February 2017.

  
Dr. V. S. Chowbe  
Convener & Head  
Head & Asst. Professor  
Department of Economics  
Shri Shivaji College, Akot

  
Dr. R. S. Jaipurkar  
Director B. C. U. D.

  
Dr. M. G. Chandekar  
Vice Chancellor



UNIVERSITY GRANTS COMMISSION  
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT CENTRE  
SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY  
AMRAVATI. (M.S.)

This is to Certify that Shri/Smt./Dr./Prof. Gajanan S. Virkar,  
Assistant Professor, Shri Shivaji Arts, Commerce & Science  
College, Akot, Dist.- Akola has participated in One Week Short Term  
Course in Gender Sensitization (6 days) held during 10<sup>th</sup> Dec. 2018 to  
15<sup>th</sup> Dec. 2018 organized by UGC - Human Resource Development Centre,  
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.

  
Coordinator

  
Director



(वाणिज्य महाविद्यालय न्यास द्वारा संचालित)

बाबाजी दाते कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय, यवतमाळ

एक दिवशीय विद्यापीठस्तरीय कार्यशाळा

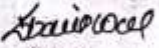
● विषय : सत्र पद्धतीमध्ये राज्यशास्त्र विषयाचा बदलता अभ्यासक्रम ●

ॐ प्रमाणपत्र ॐ

प्रा.डॉ. रंजोष मारायण कायंदे श्री शिवाजी महा. अकोल यांनी  
संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती च्या एकदिवशीय विद्यापीठस्तरीय  
सत्र पद्धतीमध्ये राज्यशास्त्र विषयाचा बदलता अभ्यासक्रम  
कार्यशाळेत उपस्थित राहून सक्रिय सहभाग नोंदविला,  
करिता सदर प्रमाणपत्र प्रदान करण्यात येत आहे.

● दि. १३ ऑगस्ट २०१८

● स्थळ : बाबाजी दाते कला आणि वाणिज्य  
महाविद्यालय, यवतमाळ

  
समन्वयक  
डॉ. सचिन जयस्वाल  
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,  
बाबाजी दाते कला, वाणिज्य महाविद्यालय, यवतमाळ

  
प्राचार्य  
प्रेरणा पुराणिक  
बाबाजी दाते कला, वाणिज्य महाविद्यालय,  
यवतमाळ



**POLITICAL SCIENCE STUDY & RESEARCH FORUM BULDANA  
AND  
SHRIPAD KRISHA KOLHTKAR MAHAVIDYALYA, JALGAON JA.  
2018-2019**

**CERTIFICATE**

*This is to certify that*

*Dr. Prof. V. M. M. Gaganan, S. V. K. Shivaji Mha. Akot,.....*

*has attended One Day district level Workshop on*

*One Nation - One Election*

*held on 23. March 2019 at S. K. K. College, Jalgaon (Jambod)*  
*organised by Political Science Study & Research forum, Buldana*



President  
Prof. Dr. Nitesh Nimbalkar  
S. K. K. College,  
Jalgaon, Jambod.



Principal  
Dr. R. S. Deshmukh  
S. K. K. College,  
Jalgaon, Jambod.



Vice-President  
Prof. Dr. Ramesh Suradkar  
Smt. S. J. Arts & Science College,  
Mehar.



Secretary  
Prof. Dr. Vinod Gaykwar  
S. B. Mankar College,  
Shiggaon.

श्री शिवाजी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अकोट  
राज्यशास्त्र विभाग

निवडणूक पुर्व सर्वेक्षण प्रकल्प अहवाल  
(Pre Poll Survey Project Report)

(लोकसभा निवडणूक - २०१९)

निवडणूका म्हणजे लोकांचे प्रतिनिधी निवडण्याचे लोकतंत्रत्माक पद्धत होय. (Elections are the democratic method of choosing representatives of the people.)

सार्वजनिक जीवनात सहभागी होण्याची भावना व राज्य व्यवस्थेसंबंधी आत्मीयता निर्माण करण्याचे सर्वात मोठे माध्यम म्हणून निवडणूकीकडे पाहिले जाते. राज्यशास्त्रामध्ये निवडणूकीच्या अध्ययनाला अनन्यसाधारण महत्त्व प्राप्त झाले आहे.

राज्यशास्त्राच्या विद्यार्थ्यांना सैद्धांतिक पातळीवरील अध्ययनावरोबरच प्रात्यक्षिक पातळीवर अध्ययनाची गरज असते. निवडणूकीच्या अध्ययनासाठी तर प्रात्यक्षिक पातळीवर अध्ययन होणे आवश्यक असते. वरील पार्श्वभूमीच्या आधारावर राज्यशास्त्र विभागाने एप्रिल- २०१९ मध्ये झालेल्या लोकसभा निवडणूकीचे अध्ययन करण्याचे ठरविले. निवडणूकीचे सूक्ष्मपणे अध्ययन करण्यासाठी अकोला मतदारसंघ हा विशेष संदर्भ म्हणून निवड करण्याचे निश्चित केले. विद्यार्थ्यांना प्रात्यक्षिक ज्ञान व राज्यशास्त्राविषयी अधिक रुची निर्माण होण्यासाठी निवडणूक पूर्व सर्वेक्षण प्रकल्प करण्याचे योजिले. सहभागी विद्यार्थ्यांना शास्त्रीय आधारावरील सर्वेक्षणासंबंधी व क्षेत्रीय अध्ययनासंबंधी प्रशिक्षण देण्यात आले. निवडणूकीच्या आठ दिवस आधी विद्यार्थ्यांनी सर्वेक्षण करून प्रकल्पासंबंधी माहिती संकलीत केली.

**उद्देश : (Objectives)**

- १) राजकीय प्रक्रियेचे अध्ययन करणे.
- २) निवडणूकीमध्ये प्रभावी ठरलेल्या घटकाचे अध्ययन करणे.
- ३) विद्यार्थ्यांमध्ये शास्त्रीय दृष्टिकोण विकसित करणे.
- ४) निवडणूकीमध्ये महत्त्वपूर्ण ठरलेल्या मुद्यांचा शोध घेणे.
- ५) मतदार वर्तणाचा अभ्यास करणे.

**गृहितके : (Hypothesis)**

- १) अकोला लोकसभा मतदारसंघाच्या निवडणूकीच्या राजकारणात जातीचा प्रभाव अधिक असल्याचे दिसून येते.



- २) लोकसभा मतदारसंघाच्या निवडणुकीमध्ये अकोला विमानतळाचा विस्तार, पुर्णा-खंडवा रेल्वे मार्गाचे विस्तारीकरण व खारपाणपट्ट्याचा मुद्दा महत्त्वपूर्ण ठरल्याचे आढळते.
- ३) अकोला लोकसभा मतदारसंघाच्या निवडणुकीमध्ये मोदी यांच्या नेतृत्वाचा प्रभाव पडल्याचे दिसून येते.
- ४) अकोला लोकसभा मतदारसंघाच्या निवडणुकीमध्ये मागासवर्गीय व अल्पसंख्यांक मताचे विभाजन झाल्याचे प्रत्ययास येते.

#### संशोधन पध्दती : (Research Methodology)

२०१९ च्या लोकसभा निवडणुकीशी संबंधित अकोला लोकसभा मतदारसंघातील मतदार वर्तनाशी संबंधित अभ्यास करण्यासाठी आपल्या सोईचे मतदार निवडून त्यांची प्रत्यक्ष मुलाखत घेण्यात आली. मतदार वर्तनाशी संबंधित व निवडणुकीशी संबंधित अध्ययनासाठी एक प्रश्नावली तयार करून अनुसुची पध्दतीचा उपयोग केला. म्हणजेच विद्यार्थ्यांनी मतदारांच्या प्रत्यक्ष मुलाखती घेऊन प्रश्नावलीतील प्रश्नांशी संबंधित माहिती संकलीत केली. संकलित माहितीचे योग्य ते विश्लेषण करून शास्त्रीय आधारावर निष्कर्षाची मांडणी केली.

#### निष्कर्ष : (Conclusion)

अकोला लोकसभा मतदारसंघाच्या निवडणुकीमध्ये तीन उमेदवारांमध्ये ख-या अर्थाने चुरस निर्माण झाली होती. यामध्ये काँग्रेस पक्षाचे हिदायत पटेल, भाजपचे संजय धोत्रे व भारीपबहुजनमहासंघाचे अॅडव्होकेट प्रकाश आंबेडकर यांचा समावेश होता. या निवडणुकीच्या वेळी खारपाणपट्टा, बाळापूर येथिल बसस्थानक, अकोला विमानतळाचे विस्तारीकरण, खंडवा रेल्वेमार्गाचे रुंदीकरण, अकोट तालुक्यातील पिण्याच्या पाण्यासंबंधीचा प्रश्न असे काही महत्त्वाचे मुद्दे प्रभावि राहिले. मतदार वर्तनाशी संबंधित निष्कर्षाची मांडणी पुढीलप्रमाणे केली आहे.

प्रश्न १ : मतदान करतांना आपण कोणत्या गोष्टीला जास्त महत्त्व देता ?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालीलप्रमाणे प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	महत्त्वाची गोष्ट	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	मतदान करतांना उमेदवाराला महत्त्व	३४.०७ %
२)	मतदान करतांना राजकीय पक्षाला महत्त्व	१२.०१ %
३)	मतदान करतांना विकास कार्याला महत्त्व	५०.०० %
४)	मतदान करतांना स्थिर शासनाला महत्त्व	०३.९२ %

प्रश्न २ : केंद्र सरकारच्या कामगिरीबाबत आपले काय मत आहे ?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील दुसरा प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालील प्रमाणे प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	केंद्रसरकारच्या कामगिरीविषयी मत	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	केंद्रसरकारच्या कामगिरीबाबत समाधानी आहोत	५७.६७ %
२)	केंद्रसरकारच्या कामगिरीबाबत समाधानी नाही	३९.१५ %
३)	केंद्रसरकारच्या कामगिरीबाबत माहिती नाही	०३.१७ %

प्रश्न ३ : राज्यसरकारच्या कामगिरीबाबत आपले काय मत आहे?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील तिसरा प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालील प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	राज्यसरकारच्या कामगिरीविषयी मत	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	राज्यसरकारच्या कामगिरीबाबत समाधानी आहोत	४३.७१ %
२)	राज्यसरकारच्या कामगिरीबाबत समाधानी नाही	५१.०५ %
३)	राज्यसरकारच्या कामगिरीबाबत माहिती नाही	०५.२४ %

प्रश्न ४ : नोटबंदीच्या निर्णयाचा काय परिणाम झाला ?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील चौथा प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालील प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	परिणाम	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	नोटबंदीच्या निर्णयामुळे तोटा झाला	४९.३६ %
२)	नोटबंदीच्या निर्णयामुळे फायदा झाला	४३.९६ %
३)	नोटबंदीच्या निर्णयामुळे काहीही फरक पडला नाही	०४.३७ %
४)	नोटबंदीच्या निर्णयाचा परिणाम माहित नाही	०२.३१ %

प्रश्न ५ : जी.एस.टी. विषयी आपणास काय माहित आहे?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील पाचवा प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालील प्रमाणे प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	निर्णय	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	जी.एस.टी. चा निर्णय चांगला आहे	५४.१५ %
२)	जी.एस.टी. चा निर्णय वाईट आहे	२८.७६ %
३)	जी.एस.टी. विषयी काहीही माहित नाही	१५.८० %



प्रश्न ६ : आपल्या मतदारसंघातून कोण निवडून येईल असे आपणास वाटते?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील सहावा प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालील प्रमाणे प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	उमेदवार	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	संजय धोत्रे निवडून येतील	३४.२८ %
२)	प्रकाश आंबेडकर निवडून येतील	१८.२८ %
३)	हिदायत पटेल निवडून येतील	०५.१४ %
४)	प्रकाश भारसाकळे निवडून येतील	००.२९ %
५)	गुलाबराव गावंडे निवडून येतील	२६.८६ %
६)	रणजित पाटील निवडून येतील	००.२९ %
७)	बाबासाहेब धाबेकर निवडून येतील	०४.५७ %
८)	संजय गावंडे निवडून येतील	०७.४३ %
९)	संतोष कोरपे निवडून येतील	०२.५७ %
१०)	संतोष चिकले निवडून येतील	००.२९ %

प्रश्न ७ : पंतप्रधानपदी कोण व्यक्ति बसलेली आवडेल?

उत्तरदात्या मतदारांना वरील सातवा प्रश्न विचारला असता त्यांनी खालील प्रमाणे प्रतिसाद दिला.

अ.क्र.	व्यक्ती	उत्तरदात्या मतदारांचे प्रमाण
१)	पंतप्रधानपदी नरेंद्र मोदी बसलेले आवडतील	६०.०० %
२)	पंतप्रधानपदी राहुल गांधी बसलेले आवडतील	१४.०३ %
३)	पंतप्रधानपदी शिवराजसिंग चव्हाण बसलेले आवडतील	००.७८ %
४)	पंतप्रधानपदी अरविंद केजरीवाल बसलेले आवडतील	०६.७५ %
५)	पंतप्रधानपदी उद्धव ठाकरे बसलेले आवडतील	००.५२ %
६)	पंतप्रधानपदी शरद पवार बसलेले आवडतील	०४.४१ %
७)	पंतप्रधानपदी ममता बॅनर्जी बसलेल्या आवडतील	०२.८६ %
८)	पंतप्रधानपदी नितीन गडकरी बसलेले आवडतील	०२.८६ %
९)	पंतप्रधानपदी मायावती बसलेल्या आवडतील	०४.९३ %
१०)	पंतप्रधानपदी योगी आदित्यनाथ बसलेले आवडतील	०२.६० %
११)	पंतप्रधानपदी अटल बिहारी वाजपेयी बसलेले आवडतील	००.२६ %

प्रश्न ८ : उत्तरदात्या मतदारांची जात.

उत्तरदात्या मतदारांच्या जाती खालील प्रमाणे आढळून आल्या.

अ.क्र.	उत्तरदात्या मतदारांची जात	संख्या
१)	मराठा-कुणबी	०२
२)	कुणबी	१६३
३)	मराठा	१३
४)	पाटील	१०
५)	बौद्ध	४९
६)	माळी	८०
७)	तेली	०८
८)	वंजारी	०९
९)	गवळी	०१
१०)	मातंग	०५
११)	चांभार	०३
१२)	बारी	३२
१३)	लिंगायत (आप्पा)	०२
१४)	वाणी	०२
१५)	भावसार	०१
१६)	धोबी	०३
१७)	मारवाडी	०२
१८)	भंगी	०२
१९)	सोनार	०३
२०)	घोशी	०१
२१)	कुंभार	०४
२२)	धनगर	०५
२३)	गोंड	०१
२४)	नाथ	०१



प्रकल्पात सहभागी विद्यार्थ्यांची यादी

(लोकसभा निवडणूक - २०१९)

अ.क्र	विद्यार्थ्यांचे नांव	वर्ग
१)	कु.प्रियंका राजकुमार वानखडे	बी.ए.-२
२)	कु. निशा गजानन देशमुख	बी.ए.-२
३)	कु. संतोषी प्रमोद पागृत	बी.ए.-२
४)	कु. रेखा महादेव पातोंड	बी.ए.-२
५)	कु. ऋतुजा विलास मुन्हेकर	बी.ए.-२
६)	कु. प्रतिक्षा शामसुंदर नाथे	बी.ए.-२
७)	कु. निकीता अरुण नारे	बी.ए.-२
८)	कु. रोशनी रविंद्र वडतकार	बी.ए.-२
९)	कु. मयुरी गणेश मेतकर	बी.ए.-२
१०)	कु. श्वेता माणिकचंद गुप्ता	बी.ए.-२
११)	कु. लक्ष्मी गजानन दुरतकार	बी.ए.-२
१२)	कु. प्रगती राजेश अरबट	बी.ए.-२
१३)	कु. रोहिणी हरीहर नागरगोजे	बी.ए.-२
१४)	कु. माया गणेश चिरडे	बी.ए.-२
१५)	कु. भैरवी संजय बंगाळे	बी.ए.-२
१६)	कु. अनिता गजानन उंबरकार	बी.ए.-२
१७)	कु. उत्तरा प्रमोद वानखडे	बी.ए.-२
१८)	कु.योगिता गोपाल लापूरकर	बी.ए.-२
१९)	कु. प्रतिक्षा श्याम ठाकरे	बी.ए.-२
२०)	कु. समृद्धी ज्ञानेश्वर लहाने	बी.ए.-२
२१)	कु. स्वाती हरिराम म्हसाये	बी.ए.-२
२२)	कु. प्रियंसी मनोहर वानखडे	बी.ए.-२
२३)	कु. विजया गजानन निंबोकर	बी.ए.-२
२४)	कु. पुनम सुभाष पुंडकर	बी.ए.-२
२५)	कु. गौरी पुरुषोत्तम वसु	

२६)	कु. शुभांगी गणेश भांडे	बी.ए.-२
२७)	कु. प्रगती गजानन शिंगणे	बी.ए.-२
२८)	कु. अश्विनी नरेंद्र राहटे	बी.ए.-२
२९)	कु. मयुरी रामेश्वर बदरखे	बी.ए.-२
३०)	कु. गिता गोपाल मनतकार	बी.ए.-२
३१)	कु. आरती देविदास वानखडे	बी.ए.-२
३२)	कु. आचल संतोष पोहरकर	बी.ए.-२
३३)	कु. शारदा चतुरसिंग बैस	बी.ए.-२
३४)	गौरव प्रकाश ओळंबे	बी.ए.-२
३५)	नयन दिलीप करवते	बी.ए.-२
३६)	क्रिष्णकुमार संतोष पुरोहित	बी.ए.-२
३७)	प्रविण प्रल्हाद सोनोने	बी.ए.-२
३८)	आकाश प्रभाकर खंडारे	बी.ए.-२
३९)	ऋषिकेश मुरलीधर खंडारे	बी.ए.-२
४०)	दिपक प्रकाश धांडे	बी.ए.-२
४१)	नागेश सुदाम तेलगोटे	बी.ए.-२
४२)	प्रदिप सुनिल गवई	बी.ए.-२
४३)	विवेक अनिल भिरडे	बी.ए.-२
४४)	आदेश रमेश खंडेराव	बी.ए.-२
४५)	मयुर श्रीकृष्ण दुधे	बी.ए.-२

*Skanda*  
 Head  
 Department of Political Science  
 Shri Shivaji Arts, Commerce and  
 Science College, Akot